THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

॥ ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥

जैन बाल गुटका

प्रथम भाग ।

जिसको

जैन पाठशालाओं में पढ़ाने के वास्ते,

बाबू ज्ञानचंद्र जैनी ने बनाकर छपाया

JAIN RELIGIOUS TRACTS SERIES.

No 2.

वीर सं० २४४३ । विक्रम १९७३ । सन् १९१६ ई०

मूल्य ।=) पुस्तक मिलने का पता :-

बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी मालिक दिगम्बर जैनधर्म पुस्तकालय अनारकली जैनगली लाहौर ।

[illegible] प्रेस लाहौर में प्रिंटर
[illegible] जैनी के अधिकार से छपा ।

[हक स्वाधीन रक्खा है कोई और न छापे] [पांचवींबार २०००]

भूमिका।

यह जैन बाल गुटका जैनपाठशालाओं में बच्चों को पढ़ाने के लिये बनाया है इसमें ६३ शलाका पुरुषों १६९ पुण्य पुरुषों २४ तीर्थंकरों के २४ चिन्हों के २४ चिन्ह भगवान् की माता जो १६ स्वप्न गर्भ कल्याणक के समय देखे उन १६ स्वप्नों के १६ चिन्ह पंच परमेष्ठी के इष्ट छत्तीसी सहित १४३ मूल गुण ७ तत्वों ९ पदार्थ का खुलासा अर्थ सम्यक्त का वर्णन ८ कर्म की १४८ कर्म प्रकृति ८४ लाख योनियों का खुलासा आदि अनेक जैन मत के कथन, जो जो बच्चों को सिखाने जरूरी समझे जिनने ग्रन्थो की स्वाध्याय हम ने अपनी साठ वर्ष की आयुमें करी उन सबका सार [रस] इस पुस्तक में कूट कूट कर भरा है यह पुस्तक हर एक जैन पाठशाला म हमारे यहां से मंगाकर बच्चों को पढ़ानी चाहिये और हर जैनी भाई को इसकी स्वाध्याय करनी चाहिये ऐसी उपकारी इतनी बड़ी पुस्तक का दाम ताकि हर जैनी खरीद सके, केवल ।/) रक्खा है ॥

पुस्तक मिलने का पता:—बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी, लाहौर।

विज्ञापन।

इस पुस्तक का नाम जैन बाल गुटका और यह पुस्तक दोनों हमने रजिस्टरी करालिये हैं कोई महाशय भी अपनी पुस्तक का नाम जैनबाल गुटका न रक्खे और न यह पुस्तक या हमारे रचे हुए इस के मजमून छापे जो छापेगा उसे लाहौर की कचहरी की सैर करनी पड़ेगी।

पुस्तक रचिता—बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर॥

जैनबालगुटका।

प्रथम-भाग।

अथ णमोकार मन्त्र।

णमोअरहंताणं णमोसिद्धाणं
णमोआइरियाणं णमो उवज्झायाणं
णमोलोए सव्वसाहूणं।

नोट—जिन भाइयों ने जैन ग्रंथ देखे हैं अथवा नवकार माहात्म्य पाठ पढ़ा है वह जानते हैं कि नवकार मंत्र से कितने जीवों को किस २ प्रकार सिद्धि हुई हैं सो वह नवकार मंत्र ४६ प्रकार के हैं सो उन का कुल खुलासा हाल और उनमें से महाशक्तिवान् २५ नवकार के जैन मंत्र, और इस नवकार मंत्र के अक्षर अक्षर और शब्द शब्द का खुलासे वार अलग अलग एक बहुत बड़ा अर्थ जैन बालगुटके दूसरे भाग में छपा है जो हमारे यहां से ॥) में मिलता है।

अथ पंचपरमेष्ठियों के नाम।

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु।

ॐ अ सि आ उ सा नमः।

नोट—अ सि आ उ सा नाम पंच परमेष्ठी का है इस में अ, अरहन्त का। सि, सिद्ध का आ आचार्य का उ, उपाध्याय का। सा, साधु का है, और ॐ बीजाक्षर है इस में पंचपरमेष्ठी के नाम गर्भित हैं।

अथ ६३-शलाका पुरुषों के नाम।

२४ तीर्थंकर १२ चक्रवर्ती ९ नारायण ९ प्रति नारायण ९ बलभद्र यह मिलकर ६३ शलाका के पुरुष कहलाते हैं।

अथ २४-तीर्थंकरों के नाम ।

१ ऋषभदेव, २ अजितनाथ, ३ सम्भवनाथ, ४अभिनन्दन-नाथ, ५ सुमतिनाथ, ६ पद्मप्रभ, ७ सुपार्श्वनाथ, ८ चन्द्रप्रभ, ९ पुष्प दन्त, १० शीतलनाथ, ११ श्रेयांसनाथ, १२ वासुपूज्य, १३ विमलनाथ, १४ अनन्तनाथ, १५ धर्मनाथ, १६ शान्तिनाथ, १७ कुन्थुनाथ, १८ अरनाथ, १९ मल्लिनाथ २० मुनिसुव्रतनाथ, २१ नमिनाथ, २२ नेमिनाथ, २३ पार्श्वनाथ, २४ वर्द्धमान ।

नोट—ऋषभदेव को ऋषभनाथ वृषभनाथ और आदिनाथ भी कहते हैं, पुष्पदन्त को सुविधिनाथ भी कहते हैं ॥ वर्द्धमान को वीर, महावीर, अतिवीर, और सन्मत, भी कहते हैं ।

समझावट—बहुत से पुरुष तीर्थंकरों के नाम के साथ श्री या जी हरफ जोड़कर बोलते हैं जैसे ऋषभदेव को श्रीऋषभदेवजी कहना सो बोलने में तो कुछ दोष नहीं, बलकि इस से उन के नाम का ताज़ीम पाई जाती है परन्तु जाप्य करने में श्री या जी हरगिज़ नहीं जोड़ने क्योंकि तीर्थंकरों के नाम एक जातिके मंत्र हैं मंत्रों का हरफ कम या जियादा करके जपना योग्य नहीं, दूसरे जी हरफ हिंदी भाषाहै सो भाषा तो अनेक है सो यदि इसी प्रकार हर एक जबानवाले इनके नाम के साथ अपनी भाषाके हरफ जोड़ने लग जावें तो हर एक भाषा में इनके नाम अन्य अन्य प्रकार के होजावें सो ऐसा करना दूषित है इसलिये श्री और जी हरफ मंत्र जपने में हरगिज़ नहीं जोड़ने ।

१२ चक्रवर्त्ती ।

१ भरतचक्रवर्ती, २ सगरचक्रवर्ती, ३ मघवाचक्रवर्ती, ४ सनत्कुमारचक्रवर्ती, ५ शांतिनाथचक्रवर्ती, (तीर्थङ्कर) ६ कुन्थु नाथचक्रवर्ती (तीर्थङ्कर), ७ अरनाथ चक्रवर्ती (तीर्थङ्कर), ८ सुभूम चक्रवर्ती, ९ पद्मचक्रवर्ती (महापद्म) १०हरिषेण चक्रवर्ती, ११जय-सेन चक्रवर्ती, १२ ब्रह्मदत्तचक्रवर्ती ॥

९—नारायण

१ त्रिपृष्ट, २ द्विपृष्ट, ३ स्वयम्भू, ४ पुरुषोत्तम ५ पुरुषसिंह, ६ पुण्डरीक, ७ दत्त, ८ लक्ष्मण ९ कृष्ण॥

९—प्रतिनारायण।

१ अश्वग्रीव, २तारक, ३मेरक, ४मधु (मधुकैटभ) ५ निशुंभ, ६वली, ७ प्रह्लाद, ८ रावण, ९ जरासंध।

९—बलभद्र।

१ अचल, २ विजय, ३ भद्र, ४ सुप्रभ, ५ सुदर्शन, ६ आनंद ७ नंदन (नंद), ८ पद्म (रामचन्द्र) ९ राम (बलभद्र)।

नोट—रामचंद्र का नाम पद्म और कृष्ण के भाई का नाम बलभद्र भी था।

अथ १६९—पुण्यपुरुषों के नाम

९—नारद।

१ भीम २ महाभीम ३ रुद्र ४ महारुद्र ५ काल ६ महाकाल ७ दुर्मुख ८ नरकमुख ९ अधोमुख।

११—रुद्र।

१भीमवली २जितशत्रु ३रुद्र (महादेव) ४विश्वानल ५सुप्रतिष्ठ ६अचल ७पुण्डरीक ८अजितधर ९जितनाभि १०पीठ ११सात्यकि।

१४—कुलकर।

१सीमंकर २सन्मति ३क्षेमंकर ४क्षेमंधर ५सीमंकर ६सीमंधर ७विमलवाहन ८चक्षुष्मान् ९यशस्वी १०अभिचंद्र ११चन्द्राभ १२मरुदेव १३प्रसेनजित १४नाभि राजा।

२४-कामदेव।

१ बाहुबली २ अमिततेज ३ श्रीधर ४ दशभद्र ५ प्रसेनजित् ६ चन्द्रवर्ण ७ अग्निमुक्ति ८ सनत्कुमार (चक्रवर्ती) ९ वत्सराज १० कनकप्रभ ११ मेघवर्ण १२ शांतिनाथ (तीर्थंकर) १३ कुंथुनाथ (तीर्थंकर) १४ अरनाथ (तीर्थंकर) १५ विजयराज १६ श्रीचन्द्र १७ राजानल १८ हनुमान् १९ बलराजा २० वसुदेव २१ प्रद्युम्न २२ नागकुमार २३ श्रीपाल २४ जंबूस्वामी।

नोट—५८ नाम तो यह और ६३ शलाका पुरुष और चौबीस तीर्थंकरोंके ४८ माता पिता के नाम जो आगे २४ चित्रोंमें लिखे हैं इन में मिलाकर यह सर्व १६९ पुण्य पुरुष कहलाते हैं अर्थात् जितने पुण्यवान पुरुष हुए हैं उनमें यह मुख्य गिने जाते हैं।

१२-प्रसिद्ध मनुष्यों के नाम।

१ नाभि २ श्रेयांस ३ बाहुबली ४ भरत ५ रामचन्द्र ६ हनुमान् ७ सीता ८ रावण ९ कृष्ण १० महादेव ११ भीम १२ पार्श्वनाथ।

नोट—कुलकरों में नाभिराजा, दान देने में श्रेयांस राजा, तप करने में बाहुबली एक साल तक कायोत्सर्ग खड़े रहे, भावकी शुद्धता में भरत चक्रवर्ती दीक्षा लेते ही केवल ज्ञान हुवा बलदेवों में रामचंद्र, कामदेवों में हनुमान सतियों में सीता, मानियों में रावण, नारायणों में कृष्ण रुद्रों में महादेव, बलवानों में भीम, तीर्थंकरों में पार्श्वनाथ यह पुरुष जगत में बहुत प्रसिद्ध हुए हैं॥

५-तीर्थंकरबालब्रह्मचारी

१ वासुपूज्य २ मल्लिनाथ ३ नेमिनाथ ४ पार्श्वनाथ ५ वर्द्धमान।

नोट—यह बालब्रह्मचारी हुए हैं इन्होंने विवाह नहीं किया राज्य भी नहीं किया, कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली।

३-तीर्थंकर तीनपदवी के धारी।

१ शांन्तिनाथ २ कुंथुनाथ ३ अरनाथ।

नोट—यह ३ तीर्थंकर चक्रवर्ती और कामदेव भी हुए हैं।

१६—प्रसिद्ध सतियों के नाम।

१ ब्राह्मी २ चंदनबाला ३ राजल ४ कौशल्या ५ मृगावती ६ सीता ७ समुद्रा ८ द्रौपदी ९ सुलसा १० कुन्ती ११ शीलावती १२ दमयंती १३ चूला १४ प्रभावती १५ शिवा १६ पद्मावती।

नोट—सती तो अंजना रयणमंजूषा मैनासुन्दरी विशल्या आदि अनेक हुई हैं यह उन में १६ मुख्य कहिये महान सती हुई हैं और जो पति के साथ जल मरे उसे अन्यमत में सती कहते हैं सो इन सतियोंके सतीपन का वह मतलब नहीं समझना, जैनमत में जो जलकर मरे उसे महा पाप अपघात माना है उस का फल नरक माना है जैनमत में सती शीलवान को कहते हैं जो किसी प्रकार के भय या लोभ वगैरा से अपने शील को न डिगावे जैन मत में उस को सती माना है।

अतीत (भूत) (पिछली) चौबीसी॥

१ श्रीनिर्वाण, २ सागर, ३ महासाधु, ४ विमलप्रभ, ५ श्रीधर, ६ सुदत्त, ७ अमलप्रभ, ८ उद्धर ९ अंगिर, १० सन्मति, ११ सिन्धुनाथ, १२ कुसुमांजलि, १३ शिवगण, १४ उत्साह, १५ ज्ञानेश्वर १६ परमेश्वर, १७ विमलेश्वर, १८ यशोधर, १९ कृष्णमति, २० ज्ञानमति, २१ शुद्धमति, २२ श्रीभद्र २३ अतिक्रांत, २४ शान्ति॥

अनागत (भविष्यत) (आइन्दा) चौबीसी॥

१ श्रीमहापद्म, २ सुरदेव, ३ सुपार्श्व, ४ स्वयंप्रभ ५ सर्वात्मभूत, ६ श्रीदेव, ७ कुलपुत्रदेव, ८ उदंकदेव, ९ प्रोष्ठिलदेव, १० जयकीर्ति, ११ मुनिसुव्रत १२ अर, (अमम) १३ निष्पाप, १४ निःकषाय १५ विपुल, १६ निर्मल, १७ चित्रगुप्त, १८ समाधिगुप्त, १९ स्वयंभू, २० अनिवृत्त, २१ जयनाथ, २२ श्रीविमल, २३ देवपाल, २४ अनंतवीर्य॥

महाविदेहक्षेत्रके २० विद्यमान ॥

१ सीमन्धर, २ युग्मंधर, ३ बाहु, ४ सुबाहु, ५ संजातक, ६ स्वयंप्रभ, ७ वृषभानन, ८ अनंतवीर्य, ९ सूरप्रभ, १० विशाल कीर्त्ति, ११ वज्रधर, १२ चंद्रानन, १३ चन्द्रबाहु, १४ भुजंगम, १५ ईश्वर, १६ नेमप्रभ (नमि) १७ वीरसेन, १८ महाभद्र १९ देवयश, २० अजितवीर्य ॥

२४ तीर्थंकरों की १६ जन्म नगरीयें ॥

१, २, ४, ५, १४, की अयोध्या, तीसरे की श्रावस्ती नगरी, छठेकी कोशांबी ७, २३ की काशीपुरी ८वेंकी चन्द्रपुरी ९वें की काकंदी नगरी १०वें की भद्रिकापुरी ११वें की सिंहपुरी १२वें की चम्पापुरी १३वें की कपिला नगरी १५वेंकी रत्नपुरी १६, १७, १८ का हस्तनापुर १९, २१ की मिथलापुरी २०वें की कुशाग्र नगर या राजगृही २२वें की शौरीपुर या द्वारिका २४वें की कुण्डलपुर ।

नोट—अयोध्या को साकेता श्रावस्ती नगरी को महेट ग्राम । काशी को बनारस । चम्पापुरीको भागलपुर । रत्नपरीको नौराई और शौरीपुरको बटेश्वर भी कहते हैं ।

तीर्थंकरों की जन्म नगरियों में फरक ।

२२ वें तीर्थंकर नेमिनाथ का जन्म किसी ग्रन्थमें शौरीपुर में और किसी ग्रन्थ में द्वारिकापुरी में २०वें तीर्थंकर का जन्म किसी ग्रन्थ में कुशाग्र नगर में और किसी ग्रन्थ में राजगृही में लिखा है सो इन में जो फरक है वह केवली जानें ।

२४ तीर्थंकरों के निर्वाणक्षेत्र ।

ऋषभदेवका कैलाश, वासुपूज्य का चंपापुरी का वन, नेमिनाथ का गिरनार, वर्द्धमान का पावापुर, बाकी के २० का सम्मेद शिखर है ॥

अथ श्री सम्मेदशिखर जी के दर्शन।

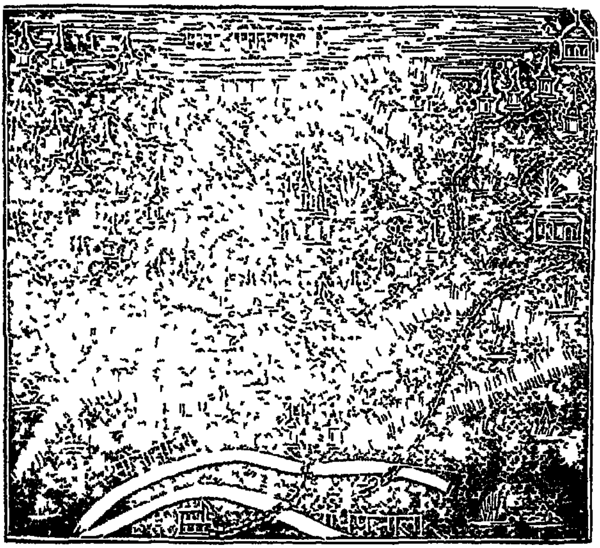

इस श्री सम्मेद शिखर के नकशे में एक तरफ पूर्वदिशा में सबसे ऊञ्ची टोंक नम्बर ९ श्री चन्द्रप्रभ की है दूसरी पश्चिम दिशा में सबसे ऊञ्ची टोंक नम्बर २४ श्री पार्श्व नाथ तीर्थंकर की है इस पर्वत से २० तीर्थंकर और असंख्यात केवली मोक्ष गये हैं पर्वत पर २४ तीर्थंकरों की चौवीस ही टोंक हैं। यह चौवीस टोंक होने का कारण यह है कि एक कल्पकाल २० कोटा कोटी सागर का होय है जिस में १० कोटा कोटी सागर का पहला अवसर्पणी काल १० कोटा कोटी सागर का दूसरा उत्सर्पणी काल सो जितने अनंतानंत कल्पकाल गुजर चुके हैं उनमें सिवाय इस कालके जितनी चौवीसी हुई हैं सब इसी पर्वत से मोक्ष को गई हैं प्रलयकालके बाद और पर्वतो का यह नियम नहीं कि जहां पहले था वहां ही फिर बने परंतु यह श्रीसम्मेद शिखर हर प्रलय के बाद वहां ही बनता है और चौवीसो इसी से मोक्षको जाती हैं इस लिये चौवीसों टोंक ही पूजनीक हैं॥

जब पहाड़ पर यात्रा करने चढ़ते हैं तो सब से पहले टोंक १ श्रीकुन्थु नाथकी टोंक पर जाते हैं फिर पूर्वदिशा में दूसरी टोंक श्री नमिनाथ की है, ३ अरनाथ की है ४ मल्लिनाथ की ५ श्रेयांस नाथ की ६ पुष्पदन्त की ७ पद्मप्रभ की ८मुनि सुव्रतनाथ की ९ चंद्रप्रभ की १० आदि नाथ की ११ शीतलनाथ की १२ अनंतनाथ की १३ सम्भवनाथ की

१४ वासुपूज्य का १५ अभिनन्दन नाथ की यह १५ टौंक पूर्व दिशा में हैं फिर वीच में जल मन्दिर है, फिर पश्चिम दिशा में १६वीं टौंक श्रीधर्मनाथ की है १७ सुमतिनाथ की १८ शांतिनाथ की १९ महावीर की २० सुपार्श्वनाथ की २१ विमलनाथ की २२ अजित नाथकी २३ नेमिनाथकी २४ पार्श्वनाथ की यह ९ टौंक १६ से २४ तक पश्चिम दिशा में हैं इनका विशेष हाल जैन तीर्थयात्रा में लिखा है जोहमारे यहां से १)रु०में मिलती है ॥

अथ श्रीगिरिनार जी के दर्शन ।

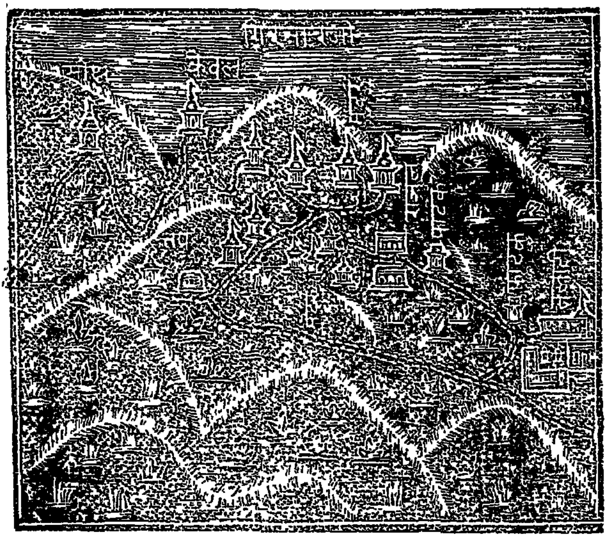

इस श्री गिरनार जी के नकशे में पहले पहाड़ के नीचे ठहरने की धर्मशाला है फिर पहाड़ पर जाने को फाटक यानी दरवाजा है फिर ऊपर चढ़ पहाड़पर दर्शन करने जानेको दूसरा फाटक यानी दरवाजा है फिर श्वेताम्बरी मंदिर हैं इस जगह को सोरठ के महल बोलते हैं फिर थोड़ी दूर पर दो दिगम्बरी मंदिर हैं यहां ही राजल जी की गुफा है यहां राजलजीने तप किया है यहांसे आगे रास्ते में अम्बिका देवी का मंदिर आता है यह इस पहाड़ की रक्षक है फिर जाकर श्री नेमिनाथ तीर्थंकर के केवलज्ञान कल्याणक की टौंक पर पहुंचते हैं फिर मोक्ष कल्याणक की टौंक पर पहुंचते हैं इस पर्वत से श्रीनेमिनाथ तीर्थंकर आदि ९९ करोड मुनि मुक्त गये हैं इसका विशेष हाल हमने जैन तीर्थयात्रामें लिखा है श्रीगिरनार जी को ऊर्जयन्त गिर भी कहते हैं ॥

दूसरे सिद्धक्षेत्रों के नाम।

१ मांगीतुंगी २ मुक्तागिर (मेढगिरि) ३ सिद्धवरकूट (ओंकार) ४ पावागिरि ५ शत्रुंजय (पालीताना) ६ बडवानी (चूलगिरि) ७ सोनागिरि ८ नैनागिरि (नैनानंद) ९ दौनागिरि (सदेपा) १० तारंगा ११ कुंथुगिरि १२ गजपंथ १३ राजग्रही (पंचपहाड़ी) १४ गुणावा (नवादा) १५ पटना १६ कोटिशिला १७ चौरासी॥

नोट—इसका मतलब यह नहीं समझना कि इतने ही सिद्धक्षेत्र हैं इसके इलावे और भी बहुत हैं परन्तु कालदोष से यह मालूम नहीं रहा है कि वह कहां हैं इसलिए ५ तीर्थङ्कर निर्वाणक्षेत्र और १६ दूसरे जो इस समय प्रसिद्ध हैं वही २१ यहां लिखे हैं निर्वाणकांड रचतानें भी जो पाठ रचने के समय आम मशहूर थे उसमें वही वर्णन किए हैं बाकी के सिद्धक्षेत्रों को आखीर में तीन लोक के तीर्थों में नमस्कार करा है।

अतिशय क्षेत्रों के नाम।

१ अहिक्षत्रजी २ चंदेरी ३ थोवनजी ४ पपोराजी ५ खजराहा ६ कुण्डलपुर ७ बनडा ८ अंतरिक्ष पार्श्वनाथ ९ कारंजयजी १० भातकुली ११ रामटेक १२ आबूजी १३ केसरियानाथ १४ चांदनपुर १५ जैनबद्री १६ कानूरग्राम १७ मूलबद्री १८ कारकूल १९ बारंगनगर २० चोरासी मथुरा के पास है।

नोट—चौरासी को जम्बूस्वामी का निर्वाण क्षेत्र भी कहते हैं परंतु बाज शास्त्रों में जम्बूस्वामी का निर्वाण राज ग्रही (पंच पहाडी) में लिखा है इस कारण से हमने इसे अतिशय क्षेत्रों में भी लिखा है अहिक्षतजी को रामनगर जैन बद्रीको श्रवण बिगलोर या गोमठ स्वामी मूलबद्री को सहस्र कूट, केसरियानाथ को काला बाबा चांदनपुर को महावीर भी कहते हैं, यह अतिशय संयुक्त जैन तीर्थ हैं तीर्थ उसे कहते हैं जिस कर भव्य जीव भवसागर कोतिरे इन का विशेष हाल जैनतीर्थ यात्रा म है।

अथ २४ तीर्थंकरों की माताओं के १६ स्वप्न।

(भाषा छंदबन्दपाठ)

सुर कुञ्जर सम कुञ्जरधवल धुरंधरो। केहरि केसर शोभित नखशिख सुन्दरो। कमला कलश न्हौन दोउ दामसुवा बने। रविशशि मण्डल मधुर मीन युगपावने। पावन कनक घट युग्मपूरण कमल सहित सरोवरो। कल्लोल माला कुलितसागर सिंह पीठ मनोहरो। रमणीक अमर विमान फणिपति भवन रवि छवि छाजिये। रुचिरत्न राशि दिपन्त पावक तेजपुञ्ज विराजिये।

(संस्कृत)

गजेंद्रवृष सिंहपोत कमलालया दाम क, शशांक रविमीन कुम्भ नलिना कराम्भो निधि, मृगाधिपधृतासनं सुर विमान नागालयं,मणि प्रचय वन्हि नासह विलोकितं मंगलम्

अथ २४ तीर्थंकरों की माताओं के १६ स्वप्नों के १६ चित्र।

तीर्थंकरों के गर्भ में आने के समय जो उनकी माताओं को १६ स्वप्न दिखाई देते हैं उन १६ स्वप्न के चित्र इस प्रकार हैं।

१ पहले स्वप्ने में श्वेत वर्ण सुर हस्ती दीखे है।

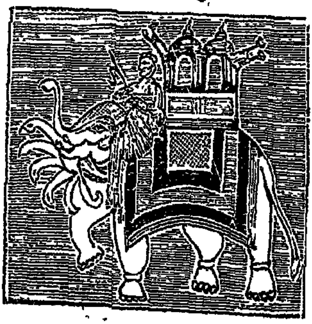

२ दूसर स्वप्ने में स्वेत वर्ण बल दीखे है।

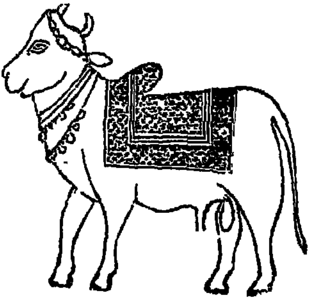

३ तीसरे स्वप्न में श्वेत वर्ण शेर दीखे है।

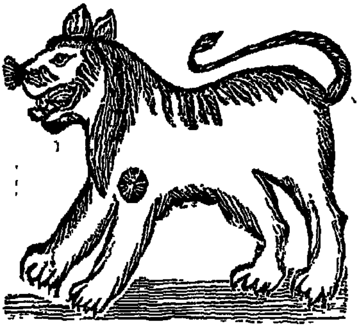

४ चौथे स्वप्ने में हाथियों कर होय है अभिषेक जिसका ऐसा कमलों के सिंहासन पर लक्ष्मी बैठी दीखे हैं।

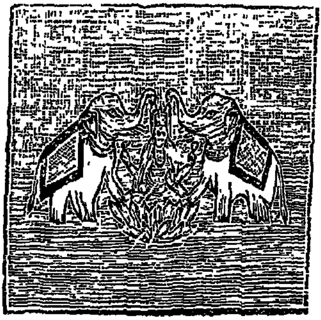

५ पांचवें स्वप्नेमें आकाश विषे दो फूल मालालटकती हुई दीखें हैं

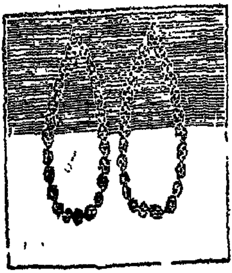

६ छठे स्वप्ने में रात्रि के समय किरणों सहित सम्पूर्ण चन्द्रमा दीखे है।

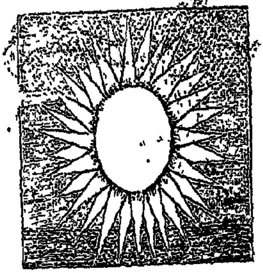

७ सातवें स्वप्ने में जगत को रोशन करता हुवा उदयाचल पर्वत पर उगता हुवा सूर्य्य दीखे है।

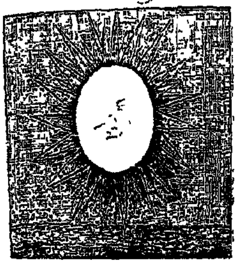

८ आठवें स्वप्नेमें सरोवरके जल विषे केल करते हुये युगल (दो) मीन (मच्छी) दीखे हैं।

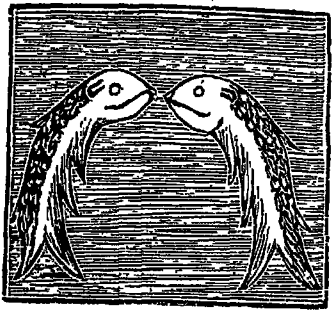

९ नवमें स्वप्ने में सुगंध जलके भर दो कंचन के कलश जिन के मुख कमल से ढके हुये हैं सो दीखे हैं।

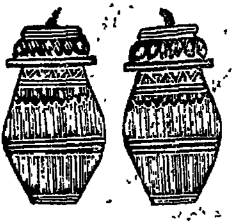

१० दशवें स्वप्ने में महा मनोहर पौड़ियों सहित स्वच्छ जल से भरा कमलों कर पूर्ण सरोवर दीखे है।

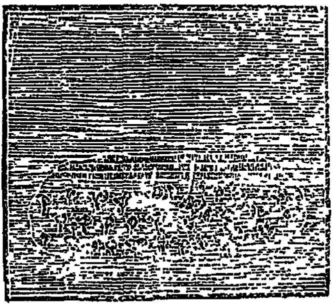

११ ग्यारहवें स्वप्ने में उछलतीहुई उंची तरंगों सहित समुद्रदीखे है।

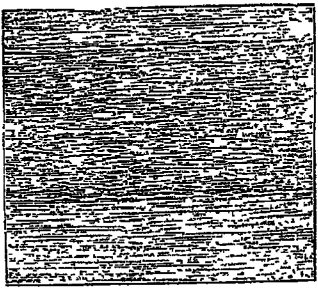

१२ बारहवें स्वप्ने में लक्ष्मी का स्थानक महा मनोहर
सिंहासन दीखे है।

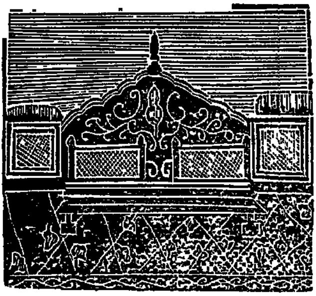

१३ तेरहवें स्वप्ने में नाना प्रकार की ध्वजाओं कर शोभित
आकाश विषे आवता हुवा देव विमान दीखे है।

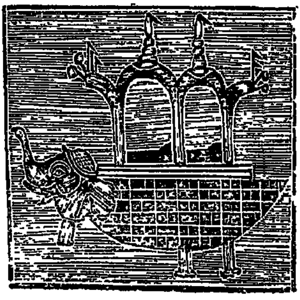

१४ चौदहवें स्वप्न में पाताल से निकलता नागेन्द्र का भवन दीखे है

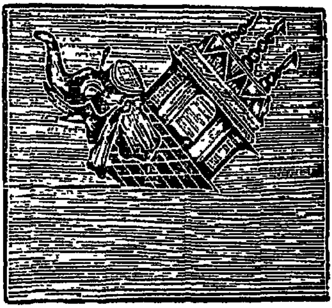

१५ पंदरहवें स्वप्ने में अरुण जे पद्मरागमणि (चुन्नी) (लाल) उज्वल जे वज्रमणि (हीरा) हरित जे मरकत मणि (पन्ना) श्याम जे इन्द्र नीलमणि (नीलम), और पीत जे पुष्प राग मणि (पुषराज), इत्यादि रत्नों की वड़ी ऊंची राशि दीखे है।

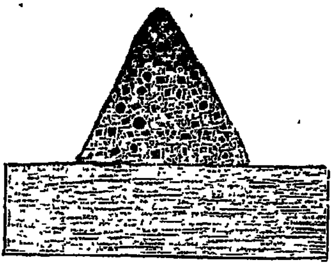

१६ सोलहवें स्वप्ने में बलती हुई निर्धूम अग्नि दीखे है।

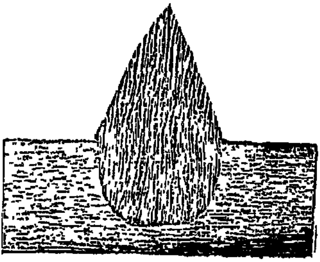

अथ २४ तीर्थंकरों के २४ चिन्ह।

(भाषा छंद बंद पाठ)।

दोहा—तीर्थंकर चौबीस के, कहूं चिन्ह चौबीस।
जैनग्रन्थ में वर्णिये, जैसे जैन मुनीस।

पाद्धडी छंद।

श्री आद नाथ के बैल जान, अजितेश्वर के हाथी महान संभव जिन के घोड़ा अनूप, अभिनंदन के बांदर सरूप। श्री सुमतनाथ के चकवा जान। श्रीपद्म प्रभु के कमल मान, सथिया सुपार्श्व के शोभवंत, चंदा के आधा चंद दिपंत। नाकू संयुक्त श्री पुष्प दंत, वृक्ष कलप कहो सीतल महंत, श्रेयांस नाथ के गैंडा देख, श्री वासु पूज्य के भैंसा रेख विमलेश्वर के सूवर बखान, सेही अनंत के कर प्रमान। श्री धर्मनाथ के वज्र दंड, प्रभु शांति नाथ के हिरण मंड। कुंथु जिनके बकरा कहंत, मछली का अर प्रभु के लसन्त। श्रीमल्लिनाथ के कलसयोग, मुनिसुव्रत के कछवा मनोग। चिनकमल श्रीनमि के कहंत, शंख नेमनाथ के बल अनंत पारस के सर्प है जग विख्यात, सिंह सोहे वीर के दिवस रात॥

दोहा—चिन्ह बिंबपर देख यह, जानो जिन चौबीस।
पीछी कमंडलु युक्त जे, ते बिंब जैन मुनीस॥
नहीं चिन्ह अरहंत की सिद्ध की कही अकाश।
ज्ञानचंद प्रभु दरस से कटे कर्म की रास॥

नोट—२४ तीर्थंकरों के २४ चिन्ह जो हमने इस पुस्तक में लिखे हैं इन को सही समझ कर बाकी के लेख भी इसी अनुसार कर देने चाहियें इस का संशोधन हमने संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों के प्रमाण के साथ किया है॥

अथ २४ तीर्थंकरों के २४ चिन्हों के २४ चित्र।

१—ऋषभदेव के बैल का चिन्ह।

पहिला भव सर्वार्थसिद्धि जन्म नगरी अयोध्या पिता नाभिराजा, मातामरुदेवी, काय ऊंची५०० धनुष,रंग स्वर्ण समान पीला आयु ८४ लाखपूर्व दीक्षा वृक्ष वट (वड़ के नीचे दीक्षा ली) गणधर ८४ निर्वाण आसन पद्मासन निर्वाणस्थान कैलाश यह तीसरे कालमें उत्पन्न भए और तीसरे में ही मोक्ष गए जब यह मोक्ष गए इनसे ३ वर्षसाढे आठ महीने बाद चौथा काल प्रारम्भ हुआ। अंतर इनसे५०लाख कोटि सागर गएपीछेअजितनाथभए॥

२—अजितनाथ के हाथी का चिन्ह।

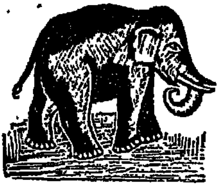

पहिला भव वैजयन्त नामा दूसरा अनुत्तर विमान जन्म नगरी अयोध्या पिता का नाम जित- शत्रुमाता का नाम विजयसेनादेवी काय ऊंची४५० धनुष रंगस्वर्ण समान पीला आयु ७२ लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष सप्तछद (सितौना) निर्वाणआसन खड्गासन निर्वाणस्थान सम्मेदशिखर,अंतरइनसे ३० लाख कोटि सागर गए पीछे संभवनाथ भए।

३—संभवनाथ के घोडे का चिन्ह।

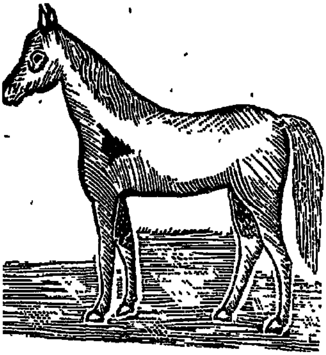

पहिला भव ग्रैवेयक जन्मनगरीश्रावस्ती पिताका नाम जितारि माता का नामसुषेणा देवी काय ऊंची४००धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु ६० लाख पूर्व दीक्षावृक्ष शाल गणधर १०५ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाणस्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इनसे १०लाख कोटि सागरगए पीछे अभिनन्दन नाथ भए॥

४–अभिनन्दननाथ के बन्दर का चिन्ह।

पहिला भव वैजयंतनामा दूसरा अनुत्तर विमान जन्म नगरी अयोध्या पिताका नाम संवर माताका नाम सिद्धार्था काय ऊंची ३५० धनुष, रंग स्वर्ण समान पीला आयु ५० लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष सरल गणधर १०३ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इनसे ९ लाख कोटिसागर गए पीछे सुमतिनाथ भए।

५–सुमतिनाथ के चकवे का चिन्ह।

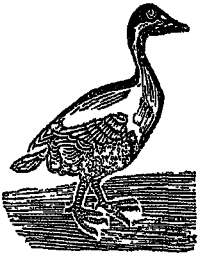

पहिला भव उर्द्धग्रैवेयक जन्म नगरी अयोध्या पिता का नाम मेघप्रभ माता का नाम सुमंगला (मंगलावती) काय ऊंची ३०० धनुष रंग सुवर्ण समान पीला आयु४० लाख पूर्व दीक्षा वृक्षप्रियंगु (कंगुनी) गणधर ११६ निर्वाण आसनखड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर,अंतरइनसे ९०हजार कोटि सागरगए पीछे पद्मप्रभ भए॥

६–पद्मप्रभ के कमल का चिन्ह।

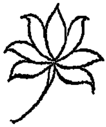

पहिला भव वैजयंत नामा दूसरा अनुत्तर विमान जन्म नगरी कोशाम्बी पिता का नाम धारण माता का नाम सुसीमादेवी काय ऊंची २५० धनुष, रग कमल समानआरक्त(सुरख) आयु ३० लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष प्रियंगु (कंगुनी) गणधर १११ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इन से ९ हजार कोटि सागर गए पीछे सुपार्श्वनाथ भए॥

७–सुपार्श्वनाथ के सांथिये का चिन्ह।

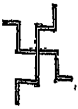

पहिला भव मध्यग्रैवेयक जन्म नगरी काशी पिता का नाम सुप्रतिष्ठ माताकानाम पृथ्वी(षेणादेवी)काय ऊंची२००धनुष, रंग प्रियंगु मञ्जरी समान हरा आयु २०लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष शिरीष (सिरस) गणधर९५ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इन से ९ सौ कोटि सागर गए पीछे चन्द्रप्रभ भए॥

८–चन्द्रप्रभ के अर्धचन्द्र का चिन्ह।

पहिला भव वैजयंत नामा दूसरा अनुत्तर विमान जन्मनगरी चन्द्रपुरी पिता का नाम महासेन माताका नाम लक्ष्मणादेवी काय ऊंची १५०धनुष,रंग श्वेत(सुफेद)आयु१०लाख पूर्व दीक्षावृक्ष नाग गणधर ९३ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर,अंतर इनसे ९० कोटि सागर गए पीछे पुष्पदन्त भए॥

९–पुष्पदन्त के नाकू (संसार) का चिन्ह।

पहिला भव अपराजित नामा चौथा अनुत्तर विमान जन्म नगरी काकन्दी पिता का नाम सुग्रीव माताका नाम जयरामादेवी काय ऊंची १०० धनुष रंग श्वेत (सुफेद) आयु २ लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष शाल,गणधर ८८ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर,अंतर इन से ९ कोटि सागर गए पीछे शीतलनाथ भए॥

१०–शीतलनाथ के कल्पवृक्ष का चिन्ह।

पहिला भव आरण नामा१५वां स्वर्ग जन्मनगरी भद्रकापुरी पिता का नाम दृढरथमाताका नाम सुनन्दादेवी काय ऊंची ९०धनुष,रंग स्वर्णसमान पीला आयु एक लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष प्लक्ष (पिलखन) गणधर ८१ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाणस्थान सम्मेद शिखर अंतर इनसे १००सागर घाटकोटि सागरगए पीछे श्रेयांसनाथ भए।

११–श्रेयांसनाथ के गैंडे का चिन्ह।

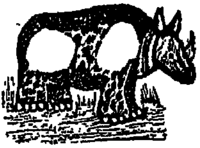

पहिला भव पुष्पोत्तर विमान जन्म नगरी सिंहपुरी पिताका नाम विष्णु माताका नाम विष्णुश्री काय ऊंची ८० धनुष,रंग स्वर्ण समान पीला, आयु ८४ लाख वर्ष दीक्षा वृक्ष तिंदुक गणधर ७७ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर,अन्तर इनसे५४सागर गए पीछे वासुपूज्य भए॥

१२-वासुपूज्य के भैसे का चिन्ह।

पहिला भव कापिष्ठ नामा आठवां स्वर्ग जन्म नगरी चंपापुरी पिताका नाम वासु माताका नाम विजया (जयवतीदेवी) काय ऊंची ७० धनुष रंग केसूके फूल समान आरक्त(सुरख) आयु ७२ लाख वर्ष दीक्षा वृक्ष पाटल गणधर ६६ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान चम्पापुरीका वन अन्तर इनसे ३० सागरगए पीछे विमल नाथ भए। वासु-पूज्य बालब्रह्मचारी भए न विवाह किया न राज्य किया कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली॥

१३-विमलनाथ के सूवर का चिन्ह।

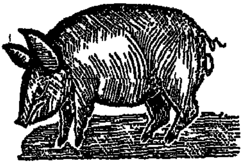

पहिला भव शुक्रनामा ९ वां स्वर्ग जन्म नगरी कपिला पिता का नाम कृतवर्मा माता का नाम सुरम्या(जयमामा देवी) काय ऊंची ६० धनुष रंग स्वर्णसमान पीला आयु ६० लाख वर्ष दीक्षा वृक्ष जम्बू(जामन) गणधर ५५ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाणस्थान सम्मेदशिखर, अंतर इन से ९ सागर गए पीछे अनंतनाथ भए।

१४-अनंतनाथ के सेही का चिन्ह।

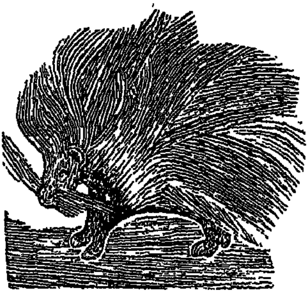

पहिला भव सहस्रार नामा १२वां स्वर्ग जन्म नगरी अयोध्या पिता का नाम सिंहसेन माताका नाम सर्वयशा (जयश्यामादेवी) काय ऊंची ५०धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु ३०लाख वर्ष दीक्षा वृक्ष पीपल गणधर ५० निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इन से ४ सागर गए पीछे धर्मनाथ भए॥

१५-धर्मनाथ के वज्रदण्डका चिन्ह ।

पहिला भव पुष्पोत्तर विमान जन्म नगरी रत्नपुरी पिताका नाम भानु माताका नाम सुप्रभादेवी। काय ऊंची ४५ धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु १०लाख वर्ष दीक्षा वृक्ष दधिपर्ण, गणधर ४३ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इन से पौणपल्य घाट तीन सागर गए पीछे शांतिनाथ भए॥

१६-शान्तिनाथ के हिरण का चिन्ह ।

पहिला भव पुष्पोत्तरविमान जन्म नगरी हस्तनापुर पिताका नाम विश्वसेन माता का नाम ऐरादेवी(अजितारानी)काय ऊंची ४० धनुषरंग स्वर्ण समान पीला आयु एक लाख वर्षदीक्षा वृक्षनंदी गणधर३६निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थानसम्मेद शिखर, अन्तर इनसे आध पल्य गये पीछे कुन्थुनाथभये। शांतिनाथतीर्थंकरचक्रवर्ती और काम देव तीन पदवीके धारी भये।

१७-कुन्थुनाथ के बकरे का चिन्ह ।

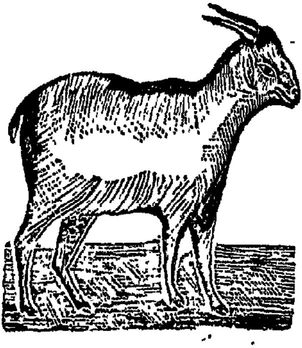

पहिला भव पुष्पोत्तरविमान जन्म नगरी हस्तनापुर पिताका नाम सूर्य्य माता का नाम श्रीकांतादेवी, काय ऊंची ३५ धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु ९५हजार वर्ष दीक्षावृक्ष तिलक गणधर३५निर्वाण आसन खड्गासननिर्वाणस्थान सम्मेदशिखर,अंतर इनसे छै हजार कोडिवर्ष घाट पावपल्य गए पीछे अरनाथ भये।

नोट—कुंथुनाथ तीर्थंकर चक्रवर्ती और काम देव तीन पदवी के धारी भये।

१८-अरनाथ के मछली का चिन्ह ।

पहिला भव सर्वार्थसिद्धि जन्म नगरी हस्तनापुर पिता का नाम सुदर्शन माता का नाम मित्रसेनादेवी काय ऊंची ३० धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु८४ हजार वर्ष दीक्षावृक्ष आम्र (आम) गणधर ३० निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इनसे पैंसठलाख चौरासी हजार वर्षघाट हजारकोटिवर्षगये मल्लिनाथ भये
नोट—अरनाथ तीर्थंकरचक्रवर्ती और कामदेव तीनपद्वीकेधारी भये

१९-मल्लिनाथ के कलश का चिन्ह ।

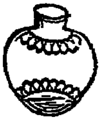

पहिला भव विजय नाम पहिला अनुत्तर विमान जन्म नगरीमिथिलापुरी पिता का नाम कुम्भ माता का नाम प्रजावती काय ऊंची २५ धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु५५ हजार वर्ष दीक्षा वृक्ष अशोक गणधर २८ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इनके पीछे ५४ लाख वर्ष गये श्रीमुनिसुव्रतनाथ भये।

नोट—मल्लिनाथ बालब्रह्मचारी भये न विवाह किया न राज्य किया कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली ॥

२०-मुनिसुव्रतनाथ के कछवेका चिन्ह ।

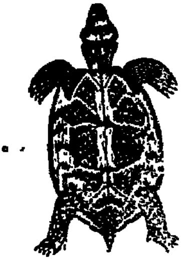

पहिला भव अपराजित नामा चौथा अनुत्तर विमान जन्म नगरी कुशाग्रनगर अथवा राज्यग्रही पिता का नाम सुमित्र माता का नाम पद्मावती (सोमानामादेवी) काय ऊंची २० धनुष, रंग अञ्जन गिरि (सुरमे का पहाड) समानश्याम आयु ३० हजार वर्ष दीक्षावृक्ष चंपक (चंबेली गणधर १८ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इनके पीछे ६ लाख वर्ष गये नमिनाथ भये।

२१-नमिनाथ के कमल का चिन्ह ।

पहिला भव प्राणत नामा १४ वां स्वर्ग जन्म नगरी मिथिलापुरी पिता का नाम विजय माता का नाम वप्रा काय ऊंची २५ धनुषरंग स्वर्णसमान पीला आयु १० हजार वर्ष दीक्षा वृक्ष बौलश्री गणधर १७ निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इनके ५ लाख वर्ष गये पीछे नेमिनाथ भये ।

२२-नेमिनाथ के शंख का चिन्ह ।

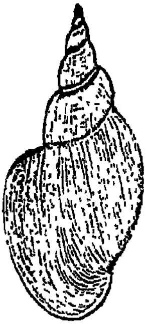

पहिला भव वैजयंत नामा दूसरा अनुत्तर विमान जन्म नगरी शोरीपुर वा द्वारिका पिताका नाम समुद्रविजय माताका नाम शिवा देवी काय ऊंची १०धनुष रंग मोरके कंठ समान श्याम आयु१हजार वर्ष दीक्षावृक्ष मेषशृंग, गणधर ११निर्वाणआसन खडगासननिर्वाण स्थान गिरिनार पर्वत अन्तर इनसे पौने चारासीहजारवर्षगये पीछे पार्श्वनाथ भये ॥

नोट—नेमिनाथ बाल ब्रह्मचारी भये न विवाह किया न राज्य किया, कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली ॥

२३-पार्श्वनाथ के सर्प का चिन्ह ।

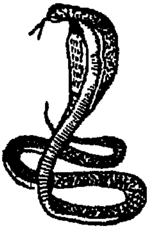

पहिला भव आनत नामा १३ वां स्वर्ग जन्म नगरी काशी पुरी पिता का नाम अश्वसेन माताका नाम वामा काय ऊंची ९हाथ रंग काचीशालि(हरेधान)समानहराआयु सौ वर्ष,दीक्षा वृक्ष धवल गणधर१०निर्वाण आसनखड्गासन निर्वाणस्थान सम्मेदशिखर,अन्तरइनसेअढाईसौ वर्षगये पीछे वर्द्धमान भये

नोट—पार्श्वनाथ बालब्रह्मचारी भये न विवाह किया न राज्य किया, कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली ॥

२४-महावीर के शेरका चिन्ह ।

पहिलाभव पुष्पोत्तर विमान जन्म नगरीकुण्डलपुरपिता का नाम सिद्धार्थ माता का नाम प्रियकारिणी(त्रसला)कायऊंची ७ हाथ, रंगस्वर्ण समान पीला आ० ७२वर्ष दीक्षा वृक्ष शाल गणधर११ निर्वाणआसन खड्गासननिर्वाण स्थानपावापुर। यह बाल ब्रह्मचारी भये न विवाह किया न राज्य किया कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली जब यह मोक्षगये तब चौथे कालके तीनवर्ष साढे आठ महीने बाकी रहे थे॥

अथ बच्चों के याद करने की नामावली।

निम्नलिखित नाम बच्चों को याद करलेने चाहियें।

९ निधि।

१ काल, २ महाकाल, ३ पांडुक, ४ मानवाख्य, ५ नैसर्पाख्य, ६ सर्वरत्नाख्य, ७ शंख, ८ पद्म, ९ पिंगलाख्य ॥

१४ रत्न।

१ सुदर्शन चक्र २ सुनंदखड्ग, ३ दंड ४ चमर, ५ छत्र, ६ चूड़ामणि, ७ सेनापति, ८ चिंतामणि कांकणी, ९ अंजिकजयअश्व, १० विजयार्ध पर्वतगज, ११ भजकुंडस्थापित १२ विद्यासागर पुरोहित १३ कामवृद्धि गृहपति, १४ सुभद्रानामक स्त्री ॥

१० कल्पवृक्ष।

१ मद्यांग, २ तुर्याङ्ग, ३ भूषणांग, ४ कुसुमांग, ५ दीप्त्यांग, ६ ज्योतिरंग, ७ गृहांग, ८ भोजनांग, ९ भाजनांग, १० वस्त्रांग, ॥

८ द्वीप।

१ जम्बूद्वीप, २ धातुका द्वीप, ३ पुष्करवरद्वीप, ४ वारुणीवर द्वीप, ५ क्षीरवरद्वीप, ६ घृतवरद्वीप, ७ इक्षुवर द्वीप, ८ नन्दीश्वर द्वीप ॥

७ क्षेत्र।

१ भरत, २ हैमवत, ३ हरिक्षेत्र, ४ विदेहक्षेत्र ५ रम्यकक्षेत्र, ६ ऐरण्यवत्क्षेत्र ७ ऐरावत क्षेत्र ॥

१४ नदियें।

१गंगा २ सिंधु ३ रोहित ४ रोहितास्या ५ हरित ६ हरिकांता ७सीता ८ शीतोदा ९ नारी १० नरकांता ११ सुवर्णकूला १२ रूप्यकूला १३ रक्ता १४ रक्तोदा॥

६ कुण्ड (कूट)।

१पद्म, २ महापद्म, ३ तिगिंच्छ ४केसरी ५ महापुण्डरीक ६ पुण्डरीक

७ ईति (आफतें) (मुसीबतें)।

१ अतिवृष्टि २अनावृष्टि (वर्षा बिलकुल न होना) ३मूसक (अनंत मूसे पैदा होकर तमाम खेती खा जावें) ४ टिड्डी (टिड्डी खेती खा जावें)५ सूवा (अनंत सूवा पदा होकर खेती खा जावें) ६ आपका कटक (सेना) ७ परका कटक॥

५ अनुत्तर विमान।

विजय, वैजयंन, जयंत, अपराजित, सर्वार्थसिद्धि।

१६ स्वर्ग।

१ सौधर्म, २ ऐशान, ३सानत्कुमार, ४ माहेंद्र ५ब्रह्म, ६ब्रह्मोत्तर, ७ लांतव, ८कापिष्ट, ९ शुक्र १० महाशुक्र, ११ सतार, १२ सहस्रार, १३ आनत, १४ प्राणत, १५ आरण, १६ अच्युत॥

७ नरक।

१ रत्नप्रभा (धम्मा), २ शर्कराप्रभा (वंशा), ३ बालुकाप्रभा (मेघा), ४ पंकप्रभा (अंजना), ५ धूमप्रभा (अरिष्टा), ६तमप्रभा (मघवी), ७ महातम प्रभा (माघवी)।

४ काय के देव।

१ भवनवासी २ व्यंतर ३ ज्योतिषी ४ वैमानिक (कल्पवासी)।

१० प्रकार के भवनवासी देव।

१ असुरकुमार २ नागकुमार ३ विद्युत्कुमार ४ सुपर्णकुमार ५ अग्नि कुमार ६ पवनकुमार ७ स्तनितकुमार ८ उदधिकुमार ९ द्वीप कुमार १० दिक्कुमार॥

८ प्रकार के व्यंतर देव।

१ किन्नर २ किम्पुरुष ३ महोरग ४ गंधर्व ५ यक्ष ६ राक्षस ७ भूत ८ पिशाच।

५ प्रकार के ज्योतिषी देव।

१ सूर्य २ चंद्रमा ३ ग्रह ४ नक्षत्र ५ तारे।

१६ प्रकार के वैमानिक (कल्प वासी) देव।

नोट—इनके वही नाम हैं जो १६ स्वर्गों के हैं।

६ द्रव्य।

१ जीव २ अजीव ३ धर्म ४ अधर्म ५ काल ६ आकाश॥

पञ्चास्तिकाय।

छ द्रव्यों में से कालद्रव्य निकाल देने से बाकी के पांचों द्रव्य पंचास्तिकाय कहलाते हैं अर्थात् कालद्रव्य के काय नहीं है बाकी पांचों द्रव्यों के काय हैं।

५ लब्धि।

क्षयोपशम लब्धि, २ विशुद्धलब्धि, ३ देशना लब्धि, ४ प्रायोग लब्धि, ५ करण लब्धि॥

नोट—इन में चार तो हर जीव के हो सकती हैं परन्तु पंचमी करण लब्धि निकट भव्य के ही होय है॥

६ भाषा।

संस्कृत, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाचिक अपभ्रंश।

२ प्रकार के जीव।

१ संसारी २ सिद्ध।

नोट—जो जीव संसार में जन्म मरण करते हैं वह संसारी कहलाते हैं। और जो जीव कर्मों से रहित होकर मोक्ष में चले गये वह सिद्ध कहलाते हैं॥

२ प्रकार के संसारी जीव।

१ भव्य जीव, २ अभव्य जीव।

नोट—भव्य वह जीव कहलाते हैं जिनमें कर्मों से रहित होकर मुक्ति में जाने की शक्ति है। अभव्य वह जीव कहलाते हैं जिन में मुक्ति में जाने की शक्ति नहीं है और वह कभी मुक्ति में नहीं जावेंगे सदैव संसार में ही जन्म मरण करते रहेंगे॥

२ प्रकार के पंचेन्द्रिय जीव।

१ संज्ञी (सैनी) २ असंज्ञी (असैनी)।

नोट—जो पचेंद्री जीव मन सहित हैं वह संज्ञी कहलाते हैं जिन के मन नहीं हैं वह असंज्ञी कहलाते हैं संज्ञी जीव अपनी माता के गर्भ से पैदा होते हैं असंज्ञी बगैर गर्भ के ही दूसरे कारणों से पैदा होते हैं जिस प्रकार चौमासे में मृतक सांप का शरीर सड़ कर उसके आश्रय से अनेक सांप होजाते हैं इनके मन नहीं होता इसी प्रकार के पंचेंद्री जीव असंज्ञी कहलाते हैं। संज्ञी को सैनी और असंज्ञी को असैनी भी कहते हैं॥

अथ ८४ लाख योनि।

स्थावर ५२ लाख, त्रस ३२ लाख।

५२ लाख स्थावर।

पृथ्वीकाय ७ लाख, जलकाय ७ लाख, अग्नि काय ७ लाख, पवनकाय ७ लाख, बनस्पति काय २४ लाख॥

२४ लाख बनस्पतिकाय।

प्रत्येक बनस्पति १० लाख, नित्यनिगोद ७ लाख, इतर निगोद ७ लाख ॥

नोट—नित्यनिगोद और इतर निगोद दोनों बनस्पति काय म शामिल हैं और यह दोनों साधारणही होती हैं केवल १० लाख बनस्पति प्रत्येक होती है।

प्रत्येक उसको कहते हैं जो एक शरीर में एक जोव हो, साधारण उसको कहते हैं जो एक शरीर में अनेक जीव हों।

३२ लाख त्रसकाय।

त्रिकलत्रय ६ लाख, पंचेंद्रिय २६ लाख।

६ लाख विकलत्रय।

बेइंद्रिय २ लाख, तेइंद्रिय २ लाख, चौइंद्रिय २ लाख।

नोट—बेइंद्रिय यानि दो इन्द्रिय वाले जीव तेइन्द्रिय यानि तीन इन्द्रियधारी जोव और चार इन्द्रिय धारनेवाले जीव यह तीनों जातिके जीव विकलत्रय कहलातेहैं।

२६ लाख पंचेंद्रिय।

मनुष्य१४ लाख, नारकी४ लाख, देव ४ लाख, पशु४ लाख।

चार लाख पशु।

शेर वगैरा दरिन्दे गौ वगैरा चरिन्दे चिड़िया वगैरा परिन्देसांप गोह वगैरा जो पञ्चेन्द्रिय जीव जमीनमें रहते हैं और मच्छी वगैरा जो पञ्चेन्द्रिय जीव जलमें रहते हैं यह सर्व चार लाख पशुपर्यायमें शामिल हैं ॥

६२ लाख तिर्यंच।

५२ लाख स्थावर, ६ लाख विकलत्रय, और ४ लाख पशु यह सर्व ६२ लाख जातिके जीव तिर्यंच कहलाते हैं।

नोट—तिर्यंच शब्द का अर्थ तिरछा चलने वाला भी है और कुटिल परिणामी भी है सो स्थावरचल नहीं सके इस लिये यहां तिरछा चलने वाला अर्थ नहीं बन

सकता पस इस स्थान पर तिर्यंच शब्दका अर्थ कुटिल परिणामी है क्योंकि इन ६२ लाख योनि के जीवों के परिणाम कुटिल होते हैं ॥

५ स्थावर।

त्रसके सिवाय बाकी के पाचों कायके जीव पांच स्थावर कहलाते हैं ॥

नोट—स्थावर उसको कहते हैं जो चल फिर नहीं सके और जो चल फिर सकते हैं वह त्रस कहलाते हैं ॥

४ प्रकारके त्रस।

बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय।

नोट—एक इन्द्रियके सिवाय बाकी सर्व जीव त्रस कहलाते हैं ॥

६ काय।

१ पृथ्वीकाय, २ अप (जल) काय, ३ तेज (अग्नि) काय, ४ वायुकाय, ५ बनस्पतिकाय, ६ त्रसकाय ॥

नोट—संसारी जीव यह छै प्रकार के शरीर धारण करते हैं ॥

पृथिवीकाय।

जो जीव चलने फिरने उडने वाले सूक्ष्म या मोटे पृथिवी पर रहते हैं या सांप आदि जमीन में रहते हैं वह पृथ्वीकाय में शामिल नहीं हैं जिन जीवों का शरीर खास मट्टी या पत्थर वगैरा ही है जो चल फिर नहीं सकते वही जीव पृथिवीकाय कहलाते हैं।

जलकाय।

जो जीव चलने फिरने वाले मच्छी वगैरा बडे या सूक्ष्म पानी में रहते हैं वह जलकाय में शामिल नहीं है जिन जीवोंका शरीर खासपानी ही है जो चल फिर नहीं सकते वह जीव जलकाय कहलाते हैं, जल का नाम अप् भी है इसलिये जलकाय के जीव अप्काय भी कहलाते हैं ॥

अग्निकाय।

अग्निकाय के वह जीव हैं जिनका शरीर खास अग्नि ही है, वह चल फिर नहीं सकते, अग्नि का नाम तेज भी है, इसलिये अग्निकाय के जीव तेजकाय भी कहलाते हैं।

वायुकाय।

जो जीव सूक्ष्म या मोटे चलने फिरने उडने वाले वायु में रहते हैं, वह वायुकाय में शामिल नहीं हैं, जिनजीवोंका शरीरखास वायुहीहै वह जीव वायुकायकहलातेहैं।

बनस्पतिकाय।

जो जीव चलने फिरने वाले कोडे वगैरा दरखतों में या फलों में होते हैं, वह बनस्पतिकाय में शामिल नहीं हैं, जिन जीवों का शरीर खास दरखत पौदे फल फूल है, वह जीव वनस्पतिकाय कहलाते हैं॥

त्रसकाय।

जो जीव चलने फिरने या उडनेवाले सांप, बिच्छू कीडी वगैरा सूक्ष्म या मोटे जमीन में रहते हैं या मच्छी वगैरा जल में रहते हैं या हवा में उडते फिरते रहते हैं या कीडे अल वगैरा सबजी, पात, फलों में रहते हैं वह सब त्रसकाय कहलाते हैं, अर्थात् मनुष्य देव,नारकी पशुपक्षी जितने स्थलचर नभचर जलचर आदित्रसनाडीके अंदर चलने फिरने वाले संसारी जीव हैं वह सर्व त्रस जीव कहलाते हैं॥

त्रसजीव स्थान।

कोई भी त्रसजीव त्रसनालीसे बाहिर नहीं जा सकता, हां किसी त्रसजीवके त्रसनाली में तिष्ठते हुए कुछ आत्म प्रदेश बाहिर जा सकते हैं जैसे केवलीके समुद्घात होने के समय तीन लोक में आत्म प्रदेश फैलते हैं या जो त्रसजीव त्रस नाली से मरकर त्रसनाली के बाहिर स्थावर बनते हैं या त्रसनाली से बाहिर स्थावर योनि छोडकर त्रस नालीके अंदर त्रस उत्पन्न होते हैं मरती दफे जब एक शरीरसे दूसरे शरीर तक उनके आत्म प्रदेश तंतु समान बन्धते हैं तब उनके आत्मप्रदेश बाहिर भीतर जाते हैं वरने पूरा त्रस जीव किसी हालतमेंभी त्रसनालीसे बाहिर नहीं जाता। त्रसनाली तीनलोक के मध्य एक राजू चौडी एक राजू लंबी १४ राजू ऊंची है इस में नीचे निगोद में १ राजू में त्रसजीव नहीं ऊपर सर्वार्थ सिद्धि से ऊपर त्रसजीव नहीं बाकी कुछ कम १३ राजू त्रसनाली में त्रसजीव भरे हुए हैं इस त्रसनाली में स्थावर भी भरे हुए हैं त्रसनाली इसको इस कारण से कहते हैं कि स्थावर जीव तो त्रसनाली के बाहिर भीतर तीनलोक में भरे हुए हैं त्रस सिरफ त्रस नाली में ही हैं इस ही वजह से यह त्रसनाली कहलाती है और त्रस जीव इस में ही हैं बाहिर नहीं॥

३ तीन लोक।

अलोकाकाश के बीच में तीन वातवलों कर वेष्टित यह तीन, लोक तिष्ठे हैं ऊर्द्ध (ऊपर का) लोक, मध्य (बीचका) लोक, पाताल (नीचरला) लोक, यह तीन लोक नीचे से ७ राजू चौड़े ७ राजू लंबे हैं ऊपरसे एक राजू चौड़े एक राजू लंबे हैं बीच में से कहीं घटता हुवा कहीं से बढ़ता हुवा जिस प्रकार मनुष्य अपने दोनों हाथ कटनी पर रखकर पैर चौड़े करके खड़ा होजावे इस शकल में नीचे से ऊपर तक तीनों लोक १४ राजू ऊंचे हैं अगर चौड़ाई लम्बाई और ऊंचाई को आपस में जरब देकर इनका रकवा निकाला जावे तो पैमायश में यह तीनों लोक ३४३ मुकाब राजू हैं मुकाब उस को कहतेहैं जिसके छहों पासे एकसां हों अर्थात् यदि इस लोकके एक राजू चौड़े एक राजू लंबे एकहाजूऊंचे ऐसे खंड बनायेजावें तो तीन लोककीकुल पैमायश३४३राजूहै॥

अथ मध्य लोक।

इस मध्य लोक में असंख्यातें द्वीप, समुद्र हैं उनके बीच लवण समुद्र कर वेढ़ा लक्ष योजन प्रमाण यह जम्बू द्वीप है इस जम्बू द्वीप के मध्य लक्ष योजन ऊंचा सुमेरु पर्वत है, यह सुमेरु पर्वत एक हजार योजन तो पृथ्वी में जड़ है और ९९ हजार योजन ऊंचा है सुमेरु पर्वत और सौधर्म स्वर्ग के बीच में एक बाल की अणी मात्र अंतर (फासला) है हम जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में रहते हैं॥

अथ काल चक्र का वर्णन।

एक कल्प २० कोटा कोटि सागर का होवे है एक कल्प काल के दो हिस्से होय हैं प्रथम का नाम अवसर्पणी काल है यह १० कोटा कोटि सागर का होय है दूसरे का नाम उत्सर्पणी काल है यह भी १० कोटा कोटि सागर का होय है, जब अवसर्पणी काल का प्रारंभ होय है उस में पहले प्रथम काल फिर दूसरा तीसरा चौथा पांचवां छठा प्रवरते हैं, छठे के पीछे फिर उत्सर्पणी काल का प्रारम्भ होय है उसमें उलटा परिवर्तन होय है। अर्थात् पहले छठा काल बीते है फिर पांचवां चौथा तीसरा दूसरा पहिला प्रवरतेहैं प्रथम के पीछे प्रथम और छठेके पीछे छठाकाल आवे है इस प्रकार अवसर्पणी काल के पीछे उत्सर्पणी काल आवे है और उत्सर्पणी काल के पीछे अवसर्पणी काल आवे है ऐसे ही सदैव से पलटना होती चली आवे है और सदैव तक होती हुई चली जावेगी। जितने भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र हैं इनही में यह छै काल की प्रवृत्ति होय है। दूसरे द्वीप महाविदेह भोग भूमि आदि क्षेत्रों में तथा स्वर्ग नरकादिक हैं उनमें कहीं भी इन छै काल की प्रवृति नहीं उनमें सदा एक ही रीति रहे है आयु कायादिक घट बढ़े नहीं देव लोक और उत्कृष्ट भोग भूमि में

सदा प्रथम सुखम सुखमा काल की रीति रहे है मध्य भोग भूमि में जो दूसरा सुखमा काल उसकी रीति रहे है जघन्य भोग भूमि में सुखमदुखमा जो तीसरा काल सदा उसकी रीति रहे है और महाविदेह क्षेत्रों में सदा दुखमसुखमा जो चौथा काल उसकी रीति रहे है और अंत के आधे स्वयम्भू रमण समुद्र में तथा चारों कोण विषे तथा अन्त के आधे द्वीप में तथा समुद्रों के मध्य जितने क्षेत्र हैं उनमें सदा दुखमा जो पंचम काल उसकी रीति रहे है और नरक में सदा दुखम दुखमा जो छठा काल सदा उसकी रीति रहे है सिवाय भरत और ऐरावत क्षेत्र के बाकी सब क्षेत्रों में एक ही रीति रहे हैं सिरफ आयु कायादिक का घटना बढ़ना रीति का पलटना भरत क्षेत्रों और ऐरावत क्षेत्रों में ही होय है अवसर्पणी के छै काल में दिन बदिन जीवों के सुख आयु काय घटते हुए चले जावे हैं उत्सर्पणी के छहों काल में दिनबदिन बढ़ते हुए चले जाय हैं॥

६—काल के नाम।

१ सुखमसुखमा, २ सुखमा, ३ सुखम दुःखमा, ४ दुःखम सुखमा, ५ दुःखमा, ६ दुखमदुःखमा॥

६—काल की अवधि।

प्रथम काल ४ कोटा कोटि सागर का होय है। दूसरा ३ कोटा कोटि सागर का, तीसरा २ कोटा कोटि सागर का, चौथा ४२ हजार वर्ष घाट १ कोटा कोटि सागर का, पंचम २१ हजार वर्ष का, छठा २१ हजार वर्ष का होय है॥

नोट—प्रथम काल में महान सुख होता है दूसरे में सुख होता है दुःख नहीं परन्तु जैसा सुख प्रथम में होता है वैसा नहीं उस से कुछ कम होता है, तीसरे में सुख है परन्तु किसी किसी को कुछ लेश मात्र दुःख भी होता है चौथे में दुःख और सुख दोनों होते हैं पुण्यवानों को सुख होता है और पुण्यहीनों को दुःख होताहै बल्कि बाजवकत पुण्यवानों को भी दुःख होजाता है पांचवें में दुःख ही है सुख नहीं सुख नाम उसका है जिसे दुःख न होवे सो पञ्चम काल के जीवों को किसी को कुछ दुःख है किसी को कुछ दुःख है जिस प्रकार कोई दुखी पुरुष जब सो जाता है उसे अपने दुःख का स्मरण नहीं रहता इसी प्रकार जब इस पंचम काल के जीव किसी विषे में रत हो जाते हैं तो जो दुःख उनके अन्तष्करणमें है उसे भूल अपने तईं सुखी माने हैं जब उनको फिर दुःखयाद आवे है वह फिर दुःख मानते हैं। इसलिये पंचम काल में दुःख ही है सुख नहीं छठे काल में महादुःख है॥

अथ ४ अनुयोग।

१ प्रथमानुयोग, २ करणानुयोग, ३ चरणानुयोग, ४ द्रव्यानुयोग।

१ प्रथमानुयोग नाम पुराणरूप कथनी (तवारीख) (History) का है जितने जिनमत के पुराण, चरित्र, कथा हैं जिनमें पुण्य पाप का भेद दरशाया है वह सर्व प्रथमानुयोग की कथनी है ॥

२ करणानुयोग नाम जुगराफिये (Geography) का है जो कुछ अलोकाकाश और लोकाकाश आदि तीन लोक में द्वीपक्षेत्र समुद्र पहाड दरया स्वर्ग नरक आदि की रचना है सब का वर्णन करणानुयोग में है ॥

३ चरणानुयोग नाम आचरण,चारित्र (क्रिया) (हुनर) (Arts)का है गृहस्थियों की जितनी क्रिया आचरण हैं और गृहत्यागी जो मुनि उनके चारित्र आचरणका कुल वर्णन चरणानुयोग में है ॥

४ द्रव्यानुयोग नाम पदार्थ विद्या (इलमतबई) (Science) का है दुनिया में जो जीव (रूह) (Soul),अजीव (मादा) (Matter) पदार्थ हैं उन के गुण खासियत ताकत का कुल वर्णन द्रव्यानुयोग में है ॥

नोट—यह हमने चारों अनुयोगों का मतलब बालकों को समझाने को बहुतही संक्षेप रूपलिखा है इस का विशेष वर्णन छोटा रत्न करंड १५० श्लोक वाला और वडा रत्नकरंडजो ताड पत्रोंपर मैसूरमें भट्टारकजी के पास हैं आदि ग्रंथोंसे जानना ॥

इन चारों अनुयोगमें वोह कथनी है जिसको वाकफीयतसे इस जीवका कल्याण हो अर्थात् ज्ञानकी वढवारी होनेसे यह जीव पाप कार्य्यको छोड कर धर्मकार्य में प्रवर्ते ॥

तीनलोक में सब से बड़ी सडक।

इन तीन लोक में आने जाने को पाताल लोक के नरक से लेकर उर्द्ध लोक के सर्वार्थसिद्धि तक एक त्रसनाली नामा सडक है त्रस जीव रूपी मुसाफिर हर दम उस पर गमन करते हैं जैनमत रूपी रास्ता बताने वाला कहता है कि उन १४ गुण स्थान नामा पौड़ियों के मार्गसे ऊपर चांदने की तरफ को जाओ; नीचे नरक रूपी महा अंधेरा खाडा है उस में गिर पडोगे, और मिथ्या मत रूपी राहबर कहता है कि अगर इस दुनिया की चौरासी लाख यूनी रूपी घरों की सैर करनी है तो नीचे को जाओ ऊपरको मत जाओ ऊपर को जाओगे तो मुक्त रूपी पिंजरे में फंसजाओगे जहां से इस दुनिया में फिर न आसकोगे, वहां खानापीना चलनाफिरना ओढ़नातक कुछभी मयस्सिर न आवेगा,वल्कि यह अपना सोहना मनमोहना शरीरभी खोबैठोगे।

अथ १४ गुणस्थान।

१ मिथ्यात्व २ सासादन ३ मिश्र कहिये सम्यक्मिथ्यात्व ४ अविरत सम्यक्त्व ५ देशव्रत ६ प्रमत्त संयमी ७ अप्रमत्त संयमी ८ अपूर्वकरण ९ अनिवृत्तिकरण १० सूक्ष्मसांपराय ११ उपशांतकषाय वा उपशांतमोह १२ क्षीणकषाय वा क्षीणमोह १३ सयोगकेवली १४ अयोगकेवली।

नोट—इनमें पंचम गुणस्थान तक गृहस्थ और छठेसे लेकर १४ तक मुनि होय हैं:—

१ पहला गुणस्थान मिथ्या दृष्टियोंके होयहै भव्य कैभी होय अभव्य कैं भी होय ॥

२ दूसरा सासादन गुणस्थान जो सम्यक्त्व से छूट मिथ्यात्त्व में आवे जब तक मिथ्यात्व में न पहुंचे बीच की अवस्था में होय है जैसे फल वृक्ष से टूटे जब तक भूमि पर नहीं पहुंचे तब तक बीच का मारग सासादन कहिये इस दूजे गुणस्थान से लेकर ऊपर १४वें तक के भाव भव्यके ही होंय अभव्य के न होंय क्योंकि अभव्य के सम्यक्त्व कभी भीं न होय है और दूजे से लेकर ऊपर १४वें तक के भाव उसी के होंय जिसके सम्यक्त्व होगया होय, जो सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की शुद्धिता कर मोक्ष पाने को योग्य हैं वह भव्य हैं और मोक्ष से विमुख अभव्य हैं और जिनके सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की निर्मलता होय वह निकट भव्य हैं ॥

३ गुणस्थान सम्यक्त्व और मिथ्यात्व दोनों मिलकर मिश्र होय है ॥

४ गुणस्थान अव्रत सम्यग्दृष्टि गृहस्थी श्रावक के होय है ॥

५ गुणस्थान छुल्लक एलक आदि व्रतीश्रावक के होय है ॥

६ गुणस्थान सर्व साधारण प्रमत्त संयमी मुनि कै होय है ॥

७ गुणस्थान १५ प्रकारके प्रमाद के अभाव से अप्रमत्त संयमी के होय है ॥

८, ९, १०, गुणस्थान उपशम और क्षायकश्रेणी वाले मुनि कै होय है ॥

११ गुणस्थान उपशांत कषाय मुनि कै होय है ॥

१२ गुणस्थान क्षीण कषाय मुनि कै होय है ॥

१३, १४ गुणस्थान केवली कै होय है ॥

अथ ८ कर्म का वर्णन।

१ कर्म क्या चीज है। इस जीव का कर्तव्य।

२ कर्म कितनी प्रकार के हैं। कर्म ८ प्रकार के हैं चार घाति चार अघाति।

३ चारघाति कर्मकेक्या नामहैं ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय, मोहनीय।

४ चार अघाति कर्म के क्या नाम हैं। १ आयु, २ नाम, ३ गोत्र, ४ वेदनीय।

५ घाति कर्म किसको कहतेहैं। जो आत्माके स्वभावको घाते (कमजोरकरे)।

६ अघाति कर्म किस को कहते हैं। जो आत्मा के स्वभाव को कमजोर तो नहीं करता परंतु दुख सुख का कारण बनावे है।

अथ आठों कर्मों का कर्तव्य।

१ ज्ञानावरण कर्मका कर्तव्य।

पहले कर्म का नाम ज्ञानावरण है इस का स्वभाव पड़दे समान है इस का कर्तव्य यह जीव के सम्यग्ज्ञान को आछादित करे है (ढके है)

२ दर्शनावरण कर्म का कर्तव्य।

दूसरे कर्म का नाम दर्शनावरण है इस का स्वभाव दरवान समान है आत्मा को अपने निज स्वरूप का दर्शन न होने दे॥

३ अंतराय कर्म का कर्तव्य।

तीसरे कर्मका नाम अंतराय है इसका स्वभाव भंडारी समान है यह आत्मा को लाभ में अंतराय करे यानि विघ्न डाले॥

४ मोहनीय कर्म का कर्तव्य।

चौथे कर्मका नाम मोहनीय है इसका स्वभाव मदिरा समानहै यह आत्मा कोभरम ही उपजावे उसको अपने ज्ञान दर्शनमय निज स्वभाव का ठीक सरधान न होने दे॥

५ आयु कर्म का कर्तव्य।

पांचवें कर्म का नाम आयु है इस का स्वभाव महाहढ़बेड़ी समान है यह जीव को एक खास मियाद तक भवरूप बंदी खाने में राखे है।

६ नाम कर्म का कर्तव्य ॥

छठे कर्म का नाम नाम कर्म है इसका स्वभाव चितेरे समान है जैसे चितेरा अनेक प्रकार के चित्र करे ऐसे ही यह आत्मा को ८४ लाख योनियों की तरह तरह की गतियों में भ्रमण करावे है।

७ गोत्र कर्म का कर्तव्य ॥

सातवें कर्म का नाम गोत्र कर्म है इस का स्वभाव कुम्हार समान है जैसे कुम्हार छोटे बड़े बरतन बनावे तैसे गोत्र कर्म ऊंचे नीचे कुलमें उपजावे आत्मा का छोटा शरीर या बड़ा निरबल या बली उपजावे जैसे नाम कर्म ने घोड़ा बनाया तो गोत्र कर्म चाहे तो उसे बहुत बड़ा बैलर घोड़ा करे चाहे जरासा टट्टा करे।

८ वेदनी कर्म का कर्तव्य ॥

आठवें कर्म का नाम वेदनी कर्म है इस का स्वभाव शहद लपेटी खड्ग की धारा समान है जो किंचित मिष्ठ लगे परन्तु जीभ को काटे तैसे जीव को किंचित साता उपजाय सदा दुःख ही देवे है।

कर्म को किस तरह जीते हैं ?

ईश्वर की याद ..र से इस दुनिया को फानी जान इस की लज्जतों से मुख मोड़ यानि तमाम धन दौलत कुटंब आदि तमाम परिग्रह को छोड़ तप अंगीकार कर समाधी ध्यान धर परमात्मा का स्वरूप चितवन करते हैं सो परमात्मा के स्वरूप के चितवन से सर्व कर्मों का नाश हो जाता है॥

कर्मों के नष्ट होने से क्या होता है ?

जब कर्म जाते रहे चितवन करने वाला आप भी वैसा ही परमात्मा सर्व का जानने वाला सर्वज्ञ होजाता है॥

क्या इन्सान भी परमात्मा होजाता है ?

जैसे अग्नि में जो लकड़ी डालो वह अग्निरूप होजाती है तैसे ही जो ईश्वर परमात्मा सर्वज्ञ का ध्यान चितवन करे वह वैसा ही होजाता है॥

अथ ८ कर्म्म की १४८ प्रकृति का वर्णन।

ज्ञानावरण की ५ दर्शनावरण की ९ अंतराय की ५ मोहनीय की २८ आयु की ४ गोत्र की २ वेदनीय की २ नाम की ९३ ॥

ज्ञानावरण के ५ भेद।

१ मति २ श्रुति ३ अवधि ४ मनपर्यय ५ केवलज्ञान ॥

दर्शनावरणके ९ भेद।

१ चक्षु २ अचक्षु ३ अवधि ४ केवल ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचलाप्रचला ९ स्त्यानगृद्धि ॥

अन्तराय के ५ भेद।

१ दान २ लाभ ३ भोग ४ उपभोग ५ वीर्य ॥

मोहनीय कर्म्म के २८ भेद।

दर्शन मोहनीय के ३ चारित्रमोहनीय के २५ ॥

दर्शनमोहनीय के ३ भेद।

१ सम्यक्त २ मिथ्यात्व ३ मिश्र।

चारित्र मोहनीय के २५ भेद।

४ अनंतानुवन्धि क्रोध मान, माया लोभ। ४ अप्रत्याख्यान क्रोध, मान माया लोभ। ४ प्रत्याख्यान क्रोध, मान माया लोभ। ४ संज्वलन क्रोध मान माया लोभ १७ हास्य १८ रति १९ अरति २० शोक २१ भय २२ जगुप्सा २३ स्त्री २४ पुरुष २५ नपुंसक ॥

आयु कर्म्म की ४ प्रकृति।

१ देव आयु २ मनुष्य आयु ३ तिर्यंचायु ४ नरकायु ॥

गोत्र कर्म्म की २ प्रकृति।

१ उच्च गोत्र २ नीच गोत्र।

वेदनीय के २ भेद।

१ सातावेदनीय २ असातावेदनीय।

अथ नाम कर्म्म की ९३ प्रकृति।

पिंड प्रकृति ६५, अपिंड प्रकृति २८।

अथ पिंड प्रकृति के ६५ भेद।

४ गति ५ जाति ५ शरीर ३ अंगोपांग ५ बंधन ५ संघात ६ संहनन ६ संस्थान ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श ४ आनुपूर्वी २ स्थान॥

नोट—यह १४ प्रकारके बडे भेद हैं। छोटे भेद ६५ हैं॥

४ गति।

नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देव गति।

५ जाति।

एकेन्द्रिय, वेंद्रिय, तेंद्रिय, चतुरेंद्रिय, पंचेंद्रिय।

५ शरीर।

औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्म्मण।

३ अंगोपांग।

१ औदारिक, २ वैक्रियक, ३ आहारक॥

५ बंधन।

औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्म्मण॥

५ संघात।

औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्म्मण।

६ संहनन।

१ वज्रवृषभनाराच २ वज्रनाराच ३ नाराच ४ अर्द्धनाराच ५कीलक ६ स्फाटिक॥

६ संस्थान।

१समचतुरस्र २न्यग्रोध ३स्वाति ४वामन ५कुब्जक ६हुंडक॥

५ वर्ण।

१ शुक्ल २ कृष्ण ३ नील ४ रक्त ५ पीत॥

२ गंध।

१ सुगंध, २ दुर्गंध॥

पांचरस।

१ तिक्त, २ कड़वा, ३ खारा, ४ खट्टा, ५ मिठा॥

८ स्पर्श।

१करडा २नरम ३भारी ४हलका ५चिकना ६रूखा ७ठंडा ८गरम।

४ आनुपूर्वी।

१ नारक, २ तिर्यंच, ३ मनुष्य, देव ४॥

२ स्थान।

१ प्रमाण स्थान, २ निर्णय स्थान॥

अथ अपिंड प्रकृतिके २८ भेद।

प्रत्येक प्रकृति ८,त्रसादिक प्रकृति १०,स्थावरादिक प्रकृति १०।

८ प्रत्येक प्रकृति।

१ पर घात २ उच्छ्वास ३ आताप ४ उद्योत ५ अगुरु ६ लघु ७ विहायोगति ८ उपघात ॥

१० त्रसादिक प्रकृति।

१ त्रस २ बादर ३ पर्याप्त ४ प्रत्येक ५ स्थिर ६ शुभ ७ सुभग ८ सुस्वर ९ आदेय १० यशःकीर्ति ॥

१० स्थावरादिक प्रकृति।

१ स्थावर २ सूक्ष्म ३ अपर्याप्त ४ साधारण ५ अस्थिर ६ अशुभ ७ दुर्भग ८ दुस्वर ९ अनादेय १० अपयश ॥

नोट—यह ८ कर्म की १४८ प्रकृति कही।

अथ ७ तत्व

१ जीव, २ अजीव, ३ आश्रव, ४ बंध, ५ संवर, ६ निर्जरा, ७ मोक्ष।

९ पदार्थ।

सात तत्व के साथ पाप पुण्य मिलाने से यह ९ पदार्थ कहलाते हैं।

नोट—श्रावक को इन का स्वरूप जानना जरूरी है।

अथ तत्व शब्द का अर्थ।

तत्व शब्द उस जाति का शब्द है जो शब्द तो हो एक और उसके अर्थ हों अनेक, सो संस्कृत कोषों में तत्व शब्द के भी कईक अर्थ हैं।

असलियत भी है, रसभी है, रूप भीहै, अनासर भी है, पदार्थ भीहै, परमात्मा भीहै, विलम्बित नृत्य भी है, और सांख्यमत शास्त्रोक्त प्रकृति भी हैं महत, अहंकार, मनः भी है, पंच भूत भी है पंचतन्मात्रा भी है पंच ज्ञान इद्रिय और पंच कर्मेन्द्रिय आदि कईक हैं चूंकि तत्व ज्ञान नाम ब्रह्म ज्ञान यथार्थ ज्ञान आत्मिक ज्ञान रुहानी इलम का है यानि तत्व जो परमात्मा उसका जो ज्ञान उस को तत्व ज्ञान कहते हैं. तत्व दर्शी ब्रह्मज्ञानी, आत्मिक ज्ञान वाला, असलियत के देखने वाले को कहते हैं यद्यपि

तत्त्व शब्द का जियादातर अर्थ परमात्मा है परन्तु हमारे जैन मत में जब यह कहा जाता है कि तत्त्व सात हैं तो यहां तत्त्व शब्द का अर्थ पदार्थ है जैसे नव पदार्थ कहते हैं नव में से पुण्य पाप को न गिन कर बाकी को सात तत्त्व इस वास्ते कहते हैं कि तत्त्व शब्द का अर्थ वो पदार्थ है जिस से परमात्मा का ज्ञान हो सो जिन पदार्थों से परमात्मा का ज्ञान हो वह पदार्थ सात ही हैं परन्तु यहां इतनी बात और समझनी है कि पदार्थों की संख्या के विषय में जो सांख्यमत वाले २५ तत्त्व मानते हैं नैयायिक ७वैशेषिक १६ बौध ४ तत्त्व मानतेहैं सो जैनी ७तत्त्व किस प्रकारसे मानतेहैं इस का उत्तर यह है कि तत्त्व शब्द का अर्थ जो पदार्थ है सो सामान्य रूप से है सो जैसे पदार्थ शब्द में दो पद हैं (पद+अर्थ) अर्थात् पदस्य अर्थः यानि पदका जो अर्थ वही पदार्थ है यहां इतनी बात और जाननी जरूरी है कि जगत में अनंत पदार्थ हैं जैनी सात ही क्यों मानते हैं इस का उत्तर यह है कि इस सात पदार्थों के अन्दर तमाम पदार्थ अन्तर्गत हैं इन से बाहर कुछ भी नहीं तथा जिन वस्तुवों से जिस के कार्य्य की सिद्धि हो उसके वास्ते वही पदार्थ कार्यकारी हैं वह उनही पदार्थों को पदार्थ कहते हैं जैसे बाज वकत रसोई खाने वाला कहता है आज तो खूबपदार्थ खाए इस प्रकार जिनमतमें कार्य्य मोक्ष की प्राप्ति का है सो मोक्ष की प्राप्ति सात पदार्थों के जानने से होती है और की जरूरत नहीं इस लिये जिनमत में जिन सात पदार्थों से मोक्ष की सिद्धि हो उन ही सात को तत्त्व माना है स्वर्गादिक की सिद्धि में पुण्य पाप की भी जरूरत पड़ती है इस वास्ते सात से आगे नौ पदार्थ माने हैं वरना अगर असलियत की तरफ देखो तो सामान्य रूप से तमाम दुनिया में पदार्थ एक ही रूप है ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो पदार्थ संज्ञा से बाहिर हो पदार्थ कहने में सब वस्तु आगई अन्यथा जीव और अजीव रूप से दो ही पदार्थ हैं सिवाय जीव के जितनी अजीव यानि अचेतन वस्तु हैं सब अजीव में आगई। चूंकि जैनमत में अभिप्राय इस जीव को संसार के भ्रमण के दुःखों से छुडाय मोक्ष के शास्वते सुख में तिष्ठाने का है सो इस कार्य की सिद्धि के वास्ते प्रयोजन भूत जो पदार्थ उन को ही यहां तत्त्व माने हैं सो मोक्ष की प्राप्ति के लिये सात तत्त्वों का जानना ही कार्य कारी है सो उन के ज्ञानका यह तरीका है कि प्रथम तो यह जाने, कि जीव क्या वस्तु है और अजीव क्या वस्तु है, जीव का क्या स्वभावहै, और अजीव का क्या स्वभाव है, क्योंकि जब तक जीव अजीवके भेद को न जाने तब तक अजीवसे भिन्न अपने आत्मा का स्वरूप कैसे समझे। जब यह दो बात जान जावे तब तीसरी बात यह जाने कि यह जीव जगत में जामण मरण करता हुवा क्यों फिरे है, सो इसका कारण कर्म है सो फिर

कर्म्म की बाबत जाने सो कर्म्म के जानने का क्रम यह है॥

१ कर्म्मका आगमन किस प्रकार होता है॥ (शुभ कर्मका आगमन रूप आश्रव में पुण्य और अशुभ कर्म का आगमन रूप आश्रव में पाप अन्तर्गत है)॥

२ कर्म्म का बन्ध किस प्रकार होता है॥

३ कर्म्म का आवना किस प्रकार रुक सका है॥

४. जो कर्म्म आत्मा के प्रदेशों में बंध रूप होते हुए बढ़ते रहते हैं उनका घटना किस प्रकार होता है यानि उनकी निर्जरा किस प्रकार होती है॥

५. आत्मा से सारे कर्म्म किस प्रकार छुट सकते हैं अर्थात् क्षय को प्राप्त हो सके हैं और जब सारे कर्म्म नष्ट हो जावें तब इस आत्मा का क्या रूप होता है पस पांच बातें यह और दो जीव अजीव जो पहले बियान करे इस लिये इस जीव को जगत् भ्रमण से छुडावने के लिये इन सात पदार्थों (तत्त्वों) का जानना ही कार्य्य कारी है इस लिये जिनमत में सात ही तत्त्व माने हैं॥

७ तत्त्वों का स्वरूप।

१ जीव—जीव उसको कहते हैं जिस में चेतना लक्षण हो अर्थात् जो जाने है देखे है करता है दुःख सुखका भोक्ता है, अरक्ता कहिये तजने हारा है, उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, गुण सहित है, असंख्यात प्रदेशी लोक प्रमाण है और प्रदेशों का संकोच विस्तार कर शरीर प्रमाण है उसे जीव कहते हैं पुद्गल में अनंत गुण हैं परंतु जानना, देखना, भोगना आदि गुण जीव में ही हैं पद्गल में यह गुण नहीं न पुद्गल (अजीव) को समझ है। यानि नेक बदकी तमीज नहीं, न पुद्गल को दीखे है न पुद्गल दुःख सुख मालूम करता है यह गुण आत्मा में ही हैं इसी से जाना जाय है कि जीव पुद्गल से अलग है जब इस शरीर में से जीव निकल जाता है तब शरीर में समझने की देखने की दुःख सुख मालूम करने की ताकत नहीं रहती. सो जीवके दो भेद हैं सिद्ध और संसारी उस में संसारी के दो भेद हैं एक भव्य दूसरा अभव्य जो मुक्ति होने योग्य है उसे भव्य कहिये और कोरडू (कुडकू) उड़द समान जो कभी भी न सीझे उसे अभव्य कहिये भगवान् के भाषे तत्त्वों का श्रद्धान भव्य जीवों के ही होय अभव्य के न होय॥

२ अजीव—अजीव अचेतन को कहते हैं जिस में स्पर्श, रस, गंध और वर्ण आदि अनंत गुण हैं परंतु उसमें चेतना लक्षण नहीं है अर्थात जिस में जानने देखने दुःख सुख भोगने की शक्ति आदि गुण नहीं वह अजीव (जड़) पदार्थ है॥

३ आश्रव—शुभ और अशुभ कर्मों के आवने का नाम आश्रव है अर्थात् जिस परिणाम(क्रिया)से जीवके शुभ और अशुभ कर्मका आगमनहो उसकानाम आश्रवहै ॥

४ बन्ध—आत्माके प्रदेशों से कर्मका जुड़ना इसका नाम बंध है यहां इतनी बात और जान लेनी कि जिस प्रकार स्वर्ण आदि पदार्थ के साथ स्वर्ण आदि जुड़ कर हो जाते हैं इस तरह कर्म आत्मा से बंध रूप नहीं होता जीव निराकार है यानि आकार रहित है और अजीव (जड) आकार सहित है सो आकार रहित को साथ आकार सहित जुड़ नहीं सकता इसका सम्बन्ध इस तरह है कि किसी संदूक में ऊपर नीचे आदि छहों तरफ मकनातीस पत्थरके ढेले लगाओ उनके बीचमें लोहा रखो सो छहों तरफ मिकनातीसकी कशिशसे वह लोहा इधर उधर कहीं भी नहीं जा सकता जहां उस संदूकको लेजाओगे वहांही लोहा जावेगा इसी तरह जीवके हरतरफ कर्म हैं जहां कर्म इसको ले जाते हैं वहां इसे जाना पडता है जीव कर्मों को साथ नहीं ले जाता क्योंकि जीवमें तो उर्द्ध गमन स्वभाव है सो जो जीव कर्मोंको साथ लेजाता तो ऊपर को स्वर्गादिक में जाता नीचे नरकादिक में न जाता सो कर्म जीव को ले जाते हैं ॥

५ सम्वर—आवते कर्मोंको रोकना इसका नाम सम्वर है अर्थात् रोकने का नाम न आने देने का नाम सम्वर है सो जिस क्रिया या परिणाम से शुभ या अशुभ कर्म आवें उस रूप न प्रवर्तना सो सम्वर है । अर्थात् परिणामों को अन्य विकल्पों से हटाकर अपने आत्मा (निज स्वरूप) के चितवन में ही काबू रखना सो संवर है ।

६—निर्जरा नाम कर्म के कम होने का है कर्मका घटना या कमजोर होना इसका नाम निर्जरा है जैसे एक पक्षीको धूप में रख कर उसके ऊपर बहुतसी रुई जल से भिगोकर रखदो वह पक्षी उसके भार (बोझ) से दबेगा,धूप की तेजी से उस रुई का जल कम होने से उसका बोझ घटेगा इसी तरह तप संयम में प्रवर्तन करने से तप रूपी धूप से कर्म रूपी जल घटेगा इसी कमी होने का नाम निर्जरा है ॥

७—मोक्षनाम कर्मों से छूट जाने का है नजात रिहाई का है अर्थात् आत्मा का सर्व कर्मों से रहित होजाना इसका नाम मोक्षहै जैसे धूप से रुई का जल जब बिलकुल सूक जावे तब तेज हवा में रुई उड जाने से उसमें दबा था जो पक्षी वह उडकर वृक्ष पर जाय बैठे इसी तरह जब कर्मोंका रस तप रूपी धूपसे घट कर कर्म खुश्क होजावें, तब आत्मध्यान रूपी तेज वायुके प्रभावसे खुश्क कर्म रूपी रुई के उड जाने से पक्षी रूपी आत्मा उड कर मोक्ष रूपी वृक्ष पर जाय बैठेगा सो जीव के जाने को सहाई धर्म द्रव्य है जैसे रेल के जाने को सहाई सडक है सो जहांतक धर्म द्रव्य है वहां तक यह चला जाता है सो मोक्ष स्थानका जो ऊपरला

हिस्सा आखिर तक धर्म द्रव्य है सो मोक्ष में उसके आखिरतक यह आत्मा चला जाता है उससे परे अलोकाकाश है उसमें धर्म द्रव्य नहीं इस वास्ते यह आत्मा लोक में ही रहजाता है धर्म द्रव्य उसे कहते हैं जो गमन करने में सहकारी कारणहो जिस के जरिये से एक स्थान से दूसरी जगह पहुंचे, मोक्ष नाम उस स्थान का भी है जहां पर यह आत्मा कर्मों से रहित हो कर जाकर तिष्ठता है वह स्थान मोक्ष इस कारण से कहलाता है कि जो जीव तीन लोक में हैं सब कर्मों के वश हैं परंतु कर्मों करि मुक्ति, जीव वहां चले गये उन जीवों पर इन कर्मोंका वश नहीं चलता इस लिये उन मुक्तिजीवों के आधाररूप स्थानके होने से वह स्थान मोक्ष कहलाता है यह छुटा हुवा स्थान (आजाद स्थान) तीनलोक के मध्य जो वलैय के आकार त्रस-नाडी है उस में ऊपरला हिस्सा है उस जगह वही आत्मा जाते हैं जो कर्मों से रहित हो जाते हैं सो जबतक इस संसारी जीव को सम्यग् दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक् चारित्र यह तीनों इकट्ठे प्राप्त न हों तबतक इसे कभी भी मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती यदि इन में से दो की प्राप्ति न होजावे तब तक भी मोक्ष नहीं होती तीनों के इकट्ठे प्राप्त होने पर ही मोक्ष हो सकती है जब यह जीव कर्मों से छुटगया अर्थात् कर्ममलसे रहित होगया तब इस का नाम जीव नहीं रहता क्योंकि जीव उसको कहते हैं जो जीवे, जीवना उस को कहते हैं जो मरने से पहली स्थिर रहने वाली अवस्था है चूंकि संसारी जीव मरते भी हैं और फिर जन्मते भी हैं इसलिये मरनेकी अपेक्षा संसारी जीव को जीव कहते हैं सिद्ध (मोक्षआत्मा) कभी मरते नहीं इस लिये उन का नाम जीव संज्ञा से रहित है वह सिद्ध या परमात्मा कहलाते हैं परमात्मा का अर्थ परम कहिये श्रेष्ठ, प्रधान, महत् नेक, सरदार, बड़ा असली, पाक, पवित्र है सो परमात्मा का अर्थ पवित्र आत्मा श्रेष्ठ आत्मा सब आत्माओं में प्रधान सर्व में उत्कृष्ट आत्मा है ॥

नोट—इन सात तत्वों का स्वरूप हर एक जैनी को समझ लेना चाहिये और समझ कर जिससे नये कर्मों का आगमन न हो और पिछले कर्मों की निर्जरा हो उस रूप परिवर्तन करना चाहिये ताकि सर्व कर्मों से छूट जावे कर्मों से छूट जाने से इस संसार के दुःखों से बच जावे। इति ७ तत्त्वका वर्णन सम्पूर्णम् ॥

जैन पर्व के दिन।

हर एक मास में दो अष्टमी दो चतुर्दशी यह चार दिन जैन ग्रंथों में पर्व के माने हैं इन दिनों में जैनी व्रत रखते हैं, जो व्रत नहीं रख सकते वह इन दिनों में अभक्ष्य नहीं खाते हरी नहीं खाते रात्रीको पानी नहीं पीते दुनियादारीके पाप कार्यों का त्याग कर धर्म ध्यान सेवन करते हैं ॥

जैन महा पर्व्व के दिन।

एक साल में ६ वार महा पर्व्व के दिन आते हैं ३ वार अठाई ३ वार दश लाक्षणी, कार्तिक शुक्ल ८ से १५ तक फाल्गुण शुक्ल ८ मी से फाल्गुण शुक्ल १५ तक आषाढ शुक्ल ८ से १५ तक यह तीन वार अठाई आती हैं॥

माघ शुक्ल ५ से १४ तक चैत्र शुक्ल ५ से १४ तक भादों शुक्ल ५ से १४ तक यह तीन वार दशलाक्षणी आती हैं देखो रत्नत्रय व्रत कथा छंद नम्बर १० और सोलहकारण दशलाक्षण रत्नत्रय व्रतों की विधि में छंद नम्बर ६ में दश लाक्षणीमें भादों माघ चैत्रमें तीनों वार लिखी हैं परंतु अवार काल दोष से माघ, चैत्र की दश लाक्षणी में पूजन पाठ का रिवाज नहीं रहा॥

सब से बडा पर्व्व का दिन भादोंमास की दशलाक्षणी में अनंत चौदश है॥

इन दिनों में धर्मात्मा जैनी व्रत रखते हैं वेला तेला करते हैं पाठ थापते हैं मांडला पूरते हैं पंचमेरु नंदीश्वर, दशलाक्षणी आदिका पूजन करते हैं जाप, सामायिक, स्वाध्याय, दर्शन, शास्त्रश्रवण, आत्मध्यान करते हैं शील पालते हैं ब्रह्मचर्य का सेवन करते हैं दुःखित भूखितको दान बांटते हैं भोजन देते हैं वस्त्र देते हैं दवाई बांटते हैं भूखे लावारिस पशुवों को सूकाचारा गिरवाते हैं, जानवर पक्षियों को चुगने को अन्न डलवाते हैं दाम देकर भट्ठी, भाड़, तंदूर, बुचरखाना, कसाइयों की दुकान बंद कराते हैं दुशमन से क्षमा मांगद्वेष भाव को त्यागन कर मित्रता करते हैं, पाप कार्यों से हिंसा के आरंभों से बचते हैं फंदियों के जाल में से जानवर छुड़वाते हैं जमीकंद सबजी आचार विदल वगैरा अभक्ष नहीं खाते, रातको भोजन पान नहीं करते रात्री को जागरणकर भगवानके गुण गाते हैं पद विनती, स्तोत्र पढते हैं आरती उतारते हैं इस प्रकार पाप कर्म की निर्जराकर धर्म का उपार्जन कर पुण्य का भंडार भरते हैं॥

श्रावक की ५३ क्रिया।

८ मूल गुण, १२ व्रत, १२ तप, १ समता भाव, ११ प्रतिमा, ३ रत्नत्रय, ४ दान, १ जल छाणन क्रिया, १ रात्रि भोजन त्याग और दिन में अन्नादिक भोजन सोधकर खाना अर्थात् छानबीन कर देख भालकर खाना॥

नोट—यह ५३ क्रिया श्रावक के आचरणे योग्य हैं यानि इन ५३ क्रियाओं को करने वाला श्रावक नाम कहलाने का अधिकारी है इस में बाजे बाजे भोले लोग

समता भाव की जगह तीन काल सामायिक करना कहते हैं सो यह उनकी गलतीहै सामायिक बारह व्रत में आचुकी है देखो चार शिक्षा व्रत का पहला भेद और ११ प्रतिमामें तीसरी प्रतिमा इस लिये जो मूल गाथा में ऐसा पाठ है (गुणमयतक समपडिमा) सो उस से आशय समता भाव ही है॥

श्रावक के ८ मूलगुण।

५ उदंबर। ३ मकार॥

इन आठ मूलका त्याग यानि न खाना तिसका नाम ८ मूल गुण का पालना है इनके नाम आगे २२ अभक्ष्य में लिखे हैं॥

१२ व्रत।

५ अणुव्रत, ३ गुणव्रत, ४ शिक्षाव्रत॥

५ अणुव्रत।

१ अहिंसा अणुव्रत, २ सत्याणुव्रत, ३ परस्त्रीत्याग अणुव्रत ४ अचौर्य (चोरी त्याग) अणुव्रत, ५ परिग्रहपरिमाण अणुव्रत॥

३ गुणव्रत।

१ दिग्व्रत, २ देशव्रत, ३ अनर्थदंड त्याग॥

४ शिक्षाव्रत।

सामायिक, प्रोषधोपवास, अतिथि संविभाग, भोगोपभोग परिमाण

१२ तप।

१ अनशन, २ ऊनोदर, ३ व्रतपरिसंख्यान, ४ रसपरित्याग, ५ विविक्तशय्यासन, ६ कायक्लेश, यह छे प्रकार का बाह्य तप है। ७ प्रायश्चित्त, ८ पांच प्रकार का विनय ९ वैयावृत्य करना, १० स्वाध्याय करना, ११ व्युत्सर्ग (शरीर से ममत्व छोड़ना) १२। चार प्रकारका ध्यान करना। यह छे प्रकार का अन्तरंग तप है॥

१ समताभाव।

क्रोध न करना अपने परिणाम क्षमा रूप रखने॥

११ प्रतिमा।

१ दर्शन प्रितिमा, २ व्रत, ३ सामायिक ४ प्रोषधोपवास, ५ सचित्तत्याग, ६ रात्रि भुक्ति त्याग, ७ ब्रह्मचर्य, ८ आरम्भ त्याग, ९ परिग्रहत्याग १० अनुमति त्याग, ११ उद्दिष्टत्याग॥

३ रत्नत्रय।

१ सम्यग् दर्शन, २ सम्यग् ज्ञान, ३ सम्यग्चारित्र॥

यह तीन रत्न श्रावक के धारने योग्य हैं इनका नाम रत्न इस कारण से है कि जसे स्वर्णादिक सर्व धन में रत्न उत्तम यानि वेशकीमती होता है इसो प्रकार कुल नियम व्रत तप में यह तीन सर्व में उत्तम हैं जैसे बिन्दियां अंक के बगैर किसी काम की नहीं इसी प्रकार बगैर इन तीनों के सारे व्रत नियम कुछ भी फलदायक नहीं हैं सब नियम व्रत मानिन्द बिन्दी (शून्य) के हैं यह तीनों मानिन्द शुरूके अंक के हैं इस से इनको रत्न माना है॥

चार दान।

१ आहारदान, २ औषधि दान, ३ शास्त्रदान, ४ अभयदान।

यह चार दान श्रावक को अपनी शक्ति अनुसार नित्य करने योग हैं इन में दान के चार भेद हैं १ सर्व दान २ पात्र दान ३ समदान ४ करुणादान।

सर्व दान।

मुनि व्रत लेने के समय जो कुल परिग्रह का त्याग सो सर्व दान है। यह सर्व दान मोक्ष फल का देने वाला है॥

पात्र दान।

मुनि, आर्यिका उत्कृष्ट श्रावक कहिये ऐलक क्षुल्लक (प्रति श्रावक) इनको भक्ति कर विधि पूर्वक दान देना यह पात्र दान है। इनको आहार देना आहार के सिवाय कमंडलु देनापीछी देना, पुस्तक देनी और आर्यिकाओं को वस्त्र (साड़ी) देनी। क्षुल्लक को उसको वृत्ति के अनुसार कोपीन (लंगोटी) देनी चादर धोती वगैरह

बढाई देनी यह सर्व पात्र दान है। इसका फल-भोग भूमि में सुख भाग स्वर्गादिक में आना और परम्पराय (मोक्ष का कारण है)।

समदान।

देखो जब गरीब से गरीब ब्राह्मण भी किसी वैष्णव मत वाले के पास जावे तो वडे बडे सेठ साहूकार पहले आप उनको प्रणाम करे हैं बैठने को उच्च स्थान देवे हैं। इसी तरह जैनियों को भी चाहिये कि जब कोई गरीब से गरीब भी धर्मात्म जैनी या जैन पंडित या अपनी जैन पाठशाला का अध्यापक अपने पास आवे तो धन का मद छोड पहले आप उस को जय जिनेंद्र करें। और वडे सत्कार से उनको अच्छा स्थान बैठने को देवे। और आवने का कारण पूछे और अपनी शक्ति अनुसार उनकी मदद करे और गौ बच्छे समान उन से प्रीति राखे उन से जैन धर्म की चर्चा करे और जो यात्रा जाने वाले निर्धन जैनी या विधवा जैन स्त्री हों उन को रेल का किराया रास्ते का खर्च देवे। जैनी पंडितों तथा दूसरे गरीब जैनियों को भोजन देवे वस्त्र देवे, आजीविका लगवाय देवे, नौकरी करवाय देवे; दलाली बताय देवे, पूंजी देकर दुकान कराय देवे। थोडे सूद पर रकम दे कर व्योहार में सहारा लगाय देवे। उन को कपडे से या अनाज से तंग देख दो चार रुपये का उनके घर भिजवाय देवे, जो बिमार हों उन्हें दवा देवे, इलाज कराय देवे॥

जो जैन पंडित मंदिर में शास्त्र पढ कर अपने को सुनाता हो या जैन पाठशाला में जो अध्यापक अपने बालकों को पढाता हो सो जब कभी अपने घर में कोई ब्याह हो सगाई हो त्यौहार हो या कोई और खुशी का मौका हो या जब कभी बागसे फल या सबजी आवे तो कुछ उन को भी भेजा करें और जैन बालकों को चाहिये कि अपने घर में जब कभी खुशी का मौका हो तो अपनी जैन पाठशाला के अध्यापक को ऐसे मौके पर जरूर दे आया करें। जब जैन पाठशाला में अपने घर से कुछ खाने को लेजावें या वहां फल फलेरी वगैरा खरीदे तो पहले अध्यापक के आगे कर देवें जब उस में से अध्यापक ले लेवे तब आप खावें इस प्रकार जे सरल प्रणामी जो भगवान का पूजन पाठ दर्शन स्वाध्याय सामायिक आदि करने वाले जो गरीब जैनी पुरुष स्त्री बाल तथा मंदिर में शास्त्र सुनाने वाले जैन धर्म का उपदेश देने वाले जिनवाणी का प्रचार करने वाले जे जैनी पंडित तथा जैन पाठशालाओं में जैन पुस्तकोंकेपढाने वाले जे जैन अध्यापक तथा जैनतीर्थों कोजाने वाले जे निर्धनजैन पुरुष स्त्री उनको दान देना यह समदान है। यह समदान पात्र दानसे जरा उतरता है यह भी महान पुण्य का दाता भोग भूमि और स्वर्गादिक के सुख देने वाला है॥

करुणादान।

जो दुःखित बुभुक्षित को दयाभाव कर दान देना सो करुणा दान है, परंतु इस में इतना और समझना कि नीति में ऐसा लिखा है कि 'पहले खेश पीछे दरवेश' अगर कोई अपनी बहन, भानजी, चाची, ताई, भावज, भूवा, मामी आदि या भाई भतीजे चाचा, ताऊ, बाबा, बाबाका,भाई, फूफड, मामा, बहनोई आदि रिश्तेदार या कुटुम्बी तंग दस्त हों तो पहले उन का हक है पहले उनकी मदद करे फिर दूसरों की करे। लंगडे लूले अन्धे अपाहज बीमार कमजोर भूखे काल पीड़ितों को भोजन खिलाना, शरद ऋतु में इनको वस्त्र देना बीमारों को दवाई बांटना तालिबइल्मों को पुस्तकें तथा वजीफा देना जिस गृहस्थीकी आजीविका बिगड गई हो या बे रोजगार फिरता हो उस की सही शिफारश कर उस को नौकर रखवा देना या पूंजी देकर उसकी कुछ आजीविका का जरिया बना देना, लेन देन के मामले में ऐसा भाव रक्खे कि जिस प्रकार कुम्हार आवे में वर्तन चढाता है वह सारे ही साबत नहीं उतरते कोई फूट भी जाता है। कोई अधपका भी रह जाता है, इसी प्रकार जितनी आसामियां हैं सबसे रुपया एकसां वसूल नहीं होता कमजोरों को अधपके बर्तन समान समझकर ब्याज छोड देना चाहिये। मूल की विना ब्याजी बहुत छोटी२ ऐसी आसान किस्तें कर देनी चाहियें जो वह आसानी से दिये जावे ताकि उसका बाल बच्चा भूखा न मरे। जो आसामी बहुत गरीब तंग दस्त होजावें उनकी नालिश करके उन्हें कैद न करवावे न उनकी कुडकी करवावे न उनकी नालिश करे। उन्हें फूटा भांडा समझ कर उनको करजा माफ कर देना चाहिये। यह बड़ा भारी धर्म है। निर्धन विधवा स्त्रियों की माहवारी तनखा बांध देनी चाहिये। जब तक वह जीवें। बगैर मांगे अपने हाथ से उनको पहुंचा दिया करे। जिनके ऊपर झूठा मुकदमा पड़जावे उनकी सही शिफारिश व उगाही देकर उनको बचावे किसी का आत्मा नहीं सतावे कोई कुछ मांगने आवे तो उसे मानछेदक बचन नहीं कहे। देखो केवली की बाणी में यह उपदेश है कि जैसे पांवों से लुंजा चलने की इच्छा करे गूंगा बोलने की इच्छा करे अंधा देखने की इच्छा करे तैसे मूढ प्राणी धर्म विना सुख की इच्छा करे हैं। और जैसे मेघ बिना वर्षा नहीं, बीज विना अनाज नहीं, तैसे धर्म विना सुख नहीं। और जैसे वृक्षके जड़ है। तैसे सर्व धर्मोंमें दया धर्म मूल है और दयाका मूल दान है। दान समान धर्म नहीं। जिन्होंने पीछे दान नहीं दिया वह अबरंक भये मांगते फिरे हैं। उनके न कुछ यहां है न आगे पावेंगे। और जो धन पाकर दान नहीं देते उनके यह है परन्तु आगे नहीं। जो गांठ में लाये थे वोह भी यहां खो खाली हाथ

जावेंगे। भव भव में निर्धन हो रोटी कपडेको भटकते फिरेंगे। और जे धनपाकर दान करते हैं, उनके यहां भी है जो पीछे कियाथा उसका फलपाया और वहां भी होवेगा इस फल आगे भोग भूमि के सुख भोग स्वर्ग जायेंगे। फिर कर्म भूमि में भी उस दानका का फल सुंदर स्त्री सुंदर मकान सुंदर पुत्र धन दौलत पावेंगे। दुनियां में जो कुछ भाग्यवानों के दौलत आदि सुख का कारण देखते हैं यह सर्व पूर्व भव में दिया जो दान उसका फल है। इस लिये यदि आइंदा को सुख की इच्छाहै तो अपनी शक्ति समान दान जरूर दो। दान समान और पुण्य नहीं जो गरीब नर,नारी एक रोटी आधी रोटी एक टुकड़ा एक मुट्ठी भर अन्न भी किसी भूखेको देवेंगे जरासी दवा भी किसी को देवेंगे उनके इसका फल बड़के बीज समान फलेगा, जैसे राई समान बड़ के बीज से कितना बड़ा बड का वृक्ष पैदा होय है, इसी प्रकार उस एक रोटी मात्र भूखे को दिये दान से अनंतानंत गुना फल मिलेगा। बिमारों को दवा दान इनेसे अनंता अनन्त भवमें नीरोग शरीर सुन्दररूप पावेंगे। दानका फल भोग भूमि और स्वर्गादिक में चिरकाल तक सुख भोगना है। इस लिये जो आइंदा को धन दौलत स्त्री पुत्रादिक सुख पाने के इच्छुक हैं वह अपनी शक्ति समान दान जरूर देवें। देवेगा सो पावेगा वरना खड़ा खड़ा लखावेगा॥

अथ छान कर जल पीना॥

श्रावक की बावनवीं क्रिया जल छान कर पीना है जैन धर्म में बगैर छाना जल पीना महा पाप कहा है देखो प्रश्नोत्तर श्रावकाचार में ऐसा लेख है॥

चौपई–बिन छानो अंजुलि जलपान। इक घटतकीनो जिन न्हान।
ता अघ को हमने नहि ज्ञान। जानत हैं केवलि भगवान॥

यहां प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ग्रंथ के रचता यह कहते हैं कि अन छाना एक अंजुलि भर जल पीने में इतना महान पाप है कि जो हमारे दिमाग में ही नहीं समा सकता अर्थात् हम अपनी जिव्हा कर उस महा पाप को वर्णन नहीं कर सकते यह पाप इतना बड़ा है कि इस को केवली भगवान ही कह सकते हैं॥

पानी में अनंत जीव तो महान् सूक्ष्म जल काय के हैं यानि जल ही है काया जिनकी सिवाय जलकाय के जल में अनंत जीव सूक्ष्म त्रसकाय के भी हैं यानि कई किसम के कीड़े होते हैं अगर जल ठीक तरह से न छाना जाय तो अन-छाना जल पीने के समय वह कीड़े भी जल में रले हुए अंदर ही चले आते हैं

वह कीडे अंदर जाकर अकसर मर जाते हैं इस से जीव हिंसा का महापाप लगता है और सिवाय इस के बाज किसम के कीडे जहरीले होते हैं उन के पिये जाने से हैजा वगैरा अनेक किसम की विमारियां शरीर में उत्पन्न होजाती हैं उन जहरीले कीडों में एक किसम का सूक्ष्म कीडा नारवा होता है अनछाना जल पीने वाले से वह कीडा जल में रला हुवा पिया जाता है इस किसम का कीडा इलाके राजपूताना, मदरास, अहाता बम्बई वगैरा दक्षिण देश के जल में बहुत पाया जाता है, उन प्रांतों के इनसान जब अनछाने जल से स्नान करते हैं, या हाथ मुंह धोते हैं या कुरला करते हैं या पीते हैं तो वह ऐसा बारीक हुवा रहता है कि पिया जाने के इलावे बदन की खाल में भी रास्ता बना कर बदन के अंदर चला जाता है और यह इस किसम का जानवर है कि पिया जाने से या दूसरी तरह अंदर चला जाने से जिस प्रकार अग्नि पर सिरफ दाल गल जाती है कुडकू नहीं गलता इसी प्रकार यह अंदर जाकर मरता नहीं है वहां किसी जगह खाने दार झिल्ली में दाखल हो कर मांस खाता रहता है और परवरिश पाने लगता है और बच्चे देता रहता है आठ नौ माह तक जिस्म के अंदर ही अंदर बढ़ता हुवा जब जिस्म के बाहिर निकलता है तो उस जगह जिस्म पर खारिश सी होकर फफोला दिखाई देता है फिर खास उसी जगह दरद और सोजिश होकर कई दिन के बाद कीडे का मुंह नजर आता है फिर ज्यूं ज्यूं बढ़ता रहता है बाहिर निकलता रहता है इस प्रकार वर्षों दुःख देता रहता है और शरीर के जिस हिस्से या नसमें होता है उस में सोजिश होकर पीप पड जाती है अनेक इनसान इस तकलीफ से मरजाते हैं और खैंचने से यह जिस्म के अंदर टूट जाता है तो फिर जो कीडे उस नारवे के बच्चे जिस्म के अंदर होते हैं टूट जाने की वजह से जिस्म के अंदर फैलजाते हैं जिससे इनसान को बहुत दुःख भुगतना पड़ता है ॥

अनछाना पानी पीने वाले अनेक बार रात्री के समय अंधेरे में बगैर छाना जल पीते हुए जल में रले हुए बाल, जोंक के सूक्ष्म बच्चे या गिरे चढे कान सलाई कान खजूरा, विच्छू वगैरा पीजाते हैं हस्पतालों में ऐसे अनेक केस देखने में आए हैं यह सब अनछाना जल पीने की कृपा है इसलिये सिवाय जीव हिंसा के पाप के अनछाना जल पीने से और भी अनेक प्रकार की तकलीफें भोगनी पड़ती हैं।

सिवाय इस के देखो जिसके सिर पर रूमी टोपी देखोगे उस को तुम यह समझोगे कि यह मुसलमान है; जिसके गले में जनेऊ देखोगे उसे तुम ब्राह्मण

समझोगे क्योंकि यह उन जातियों के चिन्ह हैं इसी तरह जब तुम कहीं सफर में रेल में सराय में किसी जगह किसी को जल छान कर पीता देखोगे तो तुम फौरन यह समझोगे कि यह तो कोई जैनी है सो छान कर पानी पीना हमारा चिन्ह है, देखो इस बात को तो अन्यमती भी स्वीकार करें हैं दयानंद स्वामीने जो प्रति सत्यार्थ प्रकाश की पहले पहल छपवाई थी उसके समुल्लास १२ अबाव १७५ में यह लिखा है कि पानी छान कर जो जैनी पीते हैं यह बात जैनियों में बहुत अच्छी है और तुलसीदास जी का यह कथन है कि पानी पीवे छान कर गुरू बनावे जानकर और मनुस्मृति अध्याय ६ श्लोक ४६ में मनुजी यह लिखते हैं कि बाल और हड्डी वाले जानवरों के बचावे और छोटे छोटे जीवों की रक्षा अर्थ भी जमीन पर देख कर पांव रक्खो पानी छान कर पीवो ॥

इस लिये हर जैनी मरद स्त्री बालक को अपने धर्म और कुल के चिन्ह के असूल के मुताबिक हमेशा पानी छान कर ही पीना चाहिये छान कर ही स्नान करो छान करही कुरला करो छान कर ही हाथ मूह धोवो, वगैर छाना जल रसोई वगैरा में कभी भी मत बरतो तमाम जैनियों का हमेशा हर मुल्क में जलछान कर ही वर्तना चाहिये ॥

अथ छने हुए जल की मियाद ॥

छने हुए जलकी मियाद १ महूर्त तक है छने हुए में लौंग काफूर, इलायची काली मिरच या कसायली वस्तु कूट कर डालने से इस चर्चे हुए जलकी मियाद दो पहर की है छान कर औटाये हुए (उबाले हुए) जल की मियाद आठ पहर की है। इस के बाद फिर उसमें सन्मूर्छन जीव पैदा होजाते हैं।

नोट—महूर्त २ घड़ी का होता है देखो अमर कोष १ कांड कालवर्ग श्लोक ११,१२, तेतु त्रिंशद् होरात्रः अर्थ तीस महूर्तका दिन रात होता है पस एक महूर्त दो घड़ी (४८ मिनट) का, दो पहर छै घंटे के, एक दिन रात्रि २४ घंटे का होता है॥

अथ रात्री भोजन त्याग।

श्रावक की सेपनवीं क्रिया रात्री भोजन त्याग है सो रात को भोजन करना या रात्री का पका हुआ भोजन करना या जो वगैर निरखे देखे अन्यमती भोजन पकावें जैसे बाज, बाज़ हलवाई मुद्दत का पड़ी पुरानी मैदा कोड़े सहित ही की पूरी कचौरी आदि पकाते हैं अनेक ब्राह्मण ढाबोंमें(वासा)में मौसम गरमी में पुराना बोरियों का सुरसरी वाला आटा सुरसरी सहितही पका लेते हैं वगैर निरखे पुराने चावल कीड़े

जहितही पका लेते हैं रातको काने बैंगन भिंडीतोरी आदि तरकारी वगैर सोधे क्लार कर कीड़ों सहित ही पकालेते हैं अन्य मतियों के इस बात को न घिन है न क्रिया,सो उनके घरका भोजन रात्रि भोजन समानहै अन्धेरेके मकानमें दिनमें भोजनख ना जहां भोजन में बाल सुरसरी चावलों में कीड़ा नजर न आवे या दिन में भी वगैर देखे वगैर निरखेभोजन पकाना यह सब रात्री भोजन में है. रात्री भोजन पकाने वाले अनेक वार दाल तरकारी में चौमासे वगैरा में गिरे पड़े भीडकी वगैरा जानवर पका लेते हैं रात्री को भोजन करने वाले अनेक वार भोजन में चढ़ी हुई कीड़ी आदि या गिरे हुए मच्छर वगैरा जीव भक्षण करते हैं पस रात्री भोजन मांस भक्षण समान है सो जो जैनी नाम धराय रात्री को भोजन करते हैं वह अपने धर्म और कुल के विरुद्ध इस आचरण के पाप से भव भव में दुःख भुकते हुए भ्रमण करें हैं॥

यह श्रावक की ५३ क्रियाओं का वर्णन समाप्त हुवा।

४ प्रकारका आहार।

१खाद्य, २स्वाद्य, ३लेह्य,४ पेय,(१ अन्न,२ पान,३ खाद्य, ४स्वाद्य)

१ समझावट—भात रोटी दाल खिचड़ी पूरी परांवठा लड्डू, घेवर, आदि मिठाई या आम, सेव आदि जो वस्तु खाइये है खाद्य है॥

२ इलायची सुपारी पान वगैरा जो अपनी तबियत खुश करने को ऐसी वस्तु खाइये हैं जिन में स्वाद (जायका) तो आवे परंतु पेट नहीं भरे वे स्वाद्य हैं॥

३ मलाई चटनी वगैरा जो चाटने के योग्य चीजें हैं वे सब लेह्य में शुमार हैं। (रत्नकरण्ड श्रावकाचार के १४२ श्लोक के अर्थ से विचार लेवें)॥

४ दुग्ध, शर्बत, रस, जल, आदि जो वस्तु पीइये हैं वे पेय हैं॥

नोट—जो दवा पीइ जावे वह पेय में है जो खाई जावे वह खाद्य में है॥

दातार के २१ गुण।

९ नवधा भक्ति, ७ गुण, ५ आभूषण।

यह २१ गुण दातारके हैं अर्थात् पात्र को दान देने वाले दातार में यह २१ गुण होने चाहियें॥

दातार की नवधा भक्ति।

१ प्रति ग्रह कहिये मुनिको तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठ ऐसे तीन बार कह खड़ा रखना २ मुनिको उच्चस्थान देवे ३ चरणों को प्रासुक जलकर धोवे ४ पूजा करे अर्घ चढावे ५ नमस्कार करे ६ मनशुद्ध रक्खे ७वचन विनय रूप बोले८काय शुद्धरक्खे९शुद्ध आहार देवे।

यह नव प्रकार की भक्ति दातार की है दातार दान देने वाले को यह नव प्रकार की भक्ति करनी चाहिये॥

दातार के सप्त गुण।

१ दान में जाके धर्म्म का श्रद्धान होय, २साधु के रत्नत्रयादिक गुणों में अनुराग रूप भक्ति होय, ३ दान देने में आनंद होय ४ दानकी शुद्धता अशुद्धता का ज्ञान होय,५ दान देने से इस लोक परलोक संबंधी भोगोंकी अभिलाषा जिसके नहीं होय ६ क्षमावान् होय ७ शक्ति युक्त होय ऐसे ७ गुण सहित दान देना॥

दातार के ५ आभूषण।

१ आनन्द पूर्वक देना, २ आदर पूर्वक देना, ३प्रियबचन कह कर देना, ४ निर्मल भाव रखना, ५ जन्म सफल मानना॥

दातार के ५ दूषण।

बिलम्ब से देना, विमुख होकर देना, दुर्वचन कहकर देना, निरादर करके देना, देकर पछताना यह दातार के ५ दूषण हैं दातार में यह पांच दोष नहीं होने चाहिये॥

श्रावक के १७ नियम।

१ भोजन, २ सचित्त वस्तु, ३ गृह, ४ संग्राम, ५ दिशागमन,

६ औषधि विलेपन, ७ तांबूल ८ पुष्प,सुगन्ध, ९ नृत्य, १० गीत-श्रवण, ११ स्नान, १२ ब्रह्मचर्य, १३ आभूषण, १४ वस्त्र १५ शय्या, १६ औषधि खानी, १७ सवारी करना ॥

नोट—इन में से हर रोज जिस जिस की जरूरत हो उसका परिमाण राखे कि आज यह करूंगा, बाकी प्रतिदिन त्याग किया करे ॥

श्रावकों के २१ उत्तर गुण।

१ लज्जावन्त, २ दयावन्त, ३ प्रसन्नता, ४ प्रतीतिवन्त, ५परदोषाच्छादन, ६परोपकारी, ७सौम्यदृष्टी, ८गुणग्राही, ९श्रेष्ठ-पक्षी, १० मिष्ट वचनी, ११दीर्घविचारी, १२ दानवन्त, १३ शील वन्त, १४ कृतज्ञ, १५ तत्त्वज्ञ, १६ धर्मज्ञ, १७ मिथ्यात्व रहित, १८ सन्तोषवंत,१९स्याद्वाद भाषी, २०अभक्ष्यत्यागी, २१षट्कर्म प्रवीण।

श्रावक के नित्य षट् कर्म।

षट् नाम छै का है १ देव पूजा, २ गुरुसेवा, ३ स्वाध्याय, ४संयम, ५ तप, ६ दान, । यह छै कर्म श्रावकके नित्य करनेके हैं।

५७-आस्रव।

५ मिथ्यात्व, १२ अविरति, २५ कषाय, १५ योग।

५-मिथ्यात्व।

१ एकांत मिथ्यात्व, २विपरीत मिथ्यात्व, ३विनय मिथ्यात्व, ४ संशयमिथ्यात्व, ५ अज्ञानमिथ्यात्व ॥

१२-अविरति।

१ पृथिवी, २अप्, (जल), ३तेज, (आग), ४वायु, ५वनस्पति, ६ त्रस, इन छै काय के जीवों में अदया रूप प्रवर्तना, ७ स्पर्शन,

८ रसना, (जिह्वा), ९ घ्राण, (नासिका), १० चक्षु,(आंखें) ११ श्रोत्र (कान),१२ मन,इनको वश में नहीं रखना यह १२ अविरति हैं॥

२५-कषाय।

१४८ कर्म प्रकृति में लिखी हैं॥

१५-योग।

१ सत्यमनोयोग, २ असत्यमनोयोग, ३ उभय मनोयोग, ४अनुभय मनो योग, ५ सत्य बचन योग, ६ असत्यबचनयोग, ७उभयबचन योग,८ अनुभय बचन योग, ९ औदारिक काय योग १० औदारिक मिश्र काय योग, ११ वैक्रियिक काय योग १२ वैक्रियिक मिश्रकाययोग, १३ आहारककाययोग, १४आहारक मिश्रकाय योग, १५कार्माण काययोग॥

५७-संवर।

३गुप्ति,५समिति,१०धर्म,१२भावना, २२ परीषह जय, ५चारित्र।

३-गुप्ति।

१ मनो गुप्ति २ वचन गुप्ति ३ काय गुप्ति।

नोट—मन, वचन, काय को अपने वश में करना।

५-समिति।

१ ईर्य्यासमिति, २ भाषासमिति, ३ एषणासमिति, ४ आदान निक्षेपण समिति, ५ प्रतिष्ठापनासमिति॥

१०-धर्म।

१उत्तमक्षमा, २ मार्दव, ३ आर्जव, ४ सत्य, ५ शौच,६ संयम, ७ तप, ८ त्याग, ९ आकिंचन्य, १० ब्रह्मचर्य्य॥

१२ भावना।

१ अनित्य, २ अशरण, ३संसार, ४एकत्व, ५अन्यत्व, ६ अशुचि ७ आश्रव, ८संवर, ९ निजरा, १०लाक, ११बोधिदुर्लभ, १२ धर्म॥

अथ बाईस परीषह।

१ क्षुधा, २ तृषा, ३ शीत, ४ उष्ण, ५दंश मशक, ६ नाग्न्य, ७ अरति, ८ स्त्री, ९ चर्या, १० आसन, ११ शयन, १२दुर्बचन, १३ बध बंधन, १४ अयाचना, १५ अलाभ, १६ रोग, १७ तृणस्पर्श १८मल, १९असत्कार, २०प्रज्ञा(मद न करना)२१अज्ञान, २२ अदर्शन॥

नोट—जैनमुनि यह २२ परीषह सहते हैं।

५ चारित्र।

१ सामायिक, २छेदोपस्थापना, ३ परिहार विशुद्धि, ४ सूक्ष्म साम्पराय, ५ यथाख्यात॥

नोट—यह ५७ क्रिया ५७ सम्वर कहलाती हैं॥

६ रस।

१ दही, २ दूध, ३ घी, ४ नमक, ५ मिठाई, ६ तेल।

नोट—बहुत से नर नारी रस का त्याग करते हैं परन्तु कितने ही यह नहीं जानते कि रस किस को कहते हैं उन को बाजे बाजे कुपढ़ लोग खट्टा मिट्ठा कडवा कसायला चरचरा और खारा इन को छे रस बताते हैं यह उनकी गलती है क्योंकि तत्वार्थ सूत्र के आठवें अध्याय के ग्यारवें सूत्र में जो रसों का वर्णन है वहां खट्टा, मिट्ठा, कडवा, खारा, चरचरा, यह रस बियान करे हैं वह बाबत कर्म प्रकृति के लिखे हैं सो सिरफ पांच लिखे हैं, चिकना शीत उष्ण की साथ स्पर्श प्रकृति में वर्णन करा है सो वह और बात है। मुनिके लिये जो रस परित्याग का वर्णन है वहां दही, दूध, घी, नमक, मिठाई, और तेल यही छे रस लिखे हैं देखो रत्नकरंड श्रावकाचार पृष्ट २६१, पस जनमत में दही, दूध, घी, नमक, मिठाई, और तेल यही ६ रस हैं जिन को कोई रस किसी दिन छोड़ना हो इन्हीं में से ही छोड़े॥

४ विकथा।

स्त्री कथा, भोजन कथा, देश कथा, राज कथा ॥

३ शल्य।

१ माया, २ मिथ्यात्व, ३ निदान ॥

६ लेश्या।

१ कृष्ण, २ नील, ३ कापोत, ४ पीत, ५ पद्म, ६ शुक्ल।

७ भय।

१ इस लोक का भय, २ परलोक का भय, ३ मरण का भय, ४ वेदना का भय, ५ अरक्षाभय, ६ अगुप्त भय, ७ अकस्मात् भय ॥

८ मद।

१ जातिका मद, २ कुलका मद, ३ बलका मद, ४ रूपका मद, ५ विद्याका मद, ६ तपका मद, ७ धन का मद, ८ ऐश्वर्यका मद ॥

मौन धारण के ७ समय।

१ भोजन करते हुए, २ वमन (उलटी) करते हुए, ३ स्नान करते हुए, ४ स्त्री सेवन समय, ५ मल मूत्र त्याग करते हुए, ६ सामायिक करते हुए, ७ जिन पूजा करते हुए ॥

नोट—यह ७ क्रिया करते हुए नहीं बोलना चाहिये ॥

१६ कारण भावना।

१ दर्शनविशुद्धि, २ विनय संपन्नता, ३ शील व्रतेष्वनतिचार, ४ आभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, ५ संवेग, ६ शक्तितस्त्याग, ७ तप, ८ साधु समाधि, ९ वैय्यावृत्य करण, १० अर्हद्भक्ति, ११ आचार्य भक्ति,

१२ बहुश्रुतभक्ति, १३ प्रवचनभक्ति, १४ आवश्यकापरिहाणि, १५ मार्गप्रभावना १६ प्रवचनवात्सल्य ॥

नोट—यह तीर्थंकर पद के देने वाली हैं, जो इन को भावे यानि इन रूप प्रवर्ते उस के तीर्थंकर गोत्र का बन्ध पड़ता है ॥

अथ सम्यक्त्व का वर्णन।

हे बालको अब हम तुम्हें कुछ सम्यक्त्व का स्वरूप समझाते हैं ॥

सम्यक्त्व ॥

अब यह बताते हैं कि सम्यक्त्व किसको कहते हैं इसके तीनजुज़ हैं १सम्यग्दर्शन २ सम्यग्ज्ञान ३ सम्यक् चारित्र सो इनका अलग अलग मतलब इस प्रकार है कि—

सम्यक्।

सम्यक् शब्द का अर्थ सत्य यथार्थ, असल, ठीक है सम्यक्त्व शब्द का अर्थ सत्यता यथार्थता, असलीयत है ॥

दर्शन।

दर्शन नाम देखने का है परंतु जिस प्रकार बाज बाज स्थानों पर इसका अर्थ जानना सोना धर्म्म नियम नेत्र दर्पण भी है अन्य मत में १ सांख्य २ योग ३ न्याय ४ वैशेषिक ५ मीमांसा ६ वेदांत इन छै शास्त्र का नाम भी षट् दर्शन है इसी प्रकार हमारे जैन मत में दर्शन नाम श्रद्धान का है ईमान लाने का एतकाद लाने का है निश्चय लाने का है मानने का है ॥

ज्ञान।

ज्ञान नाम जानना, वाकफियत तमीज लियाकत मालूमात समझ तथा बुद्धिका है ॥

चारित्र।

चारित्र नाम आचरण प्रवर्तन चलन आदत चाल चलन का है ॥

सम्यग्दर्शन।

सम्यग्दर्शन—नाम सत्य श्रद्धान का है जिस प्रकार जीवादिक पदार्थों का जो असली स्वरूप असली स्वभाव है उस का उस ही रूप श्रद्धान होना जैसे कि अपने तैंई ऐसा समझना कि यह मेरा शरीर मेरी आत्मा से भिन्न है यह जड़ है मैं इस से भिन्न चेतन हूं ज्ञान दर्शन मेरा स्वभाव है ऐसे केवली कर कहे तत्वों में शंकादि दोष रहित जो अचल श्रधान तिसका नाम सम्यग्दर्शन है ॥

सम्यग्ज्ञान।

सम्यग्ज्ञान—नाम सच्चे ज्ञान का है यानि सच्ची वाकफियत का है यानि जिस प्रकार जीवादिक पदार्थ तिष्ठे हैं उन को उसी रूप जानना तिसका नाम सम्यग्ज्ञान है, संशय कहिये संदेह विपर्यय कहिये कुछ का कुछ (खिलाफ) अनध्यवसाय कहिये वस्तु के ज्ञान का अभाव इत्यादिक दोषों करके रहित प्रमाण नयों कर निर्णय कर पदार्थों को यथार्थ जानना तिसका नाम सम्यग्ज्ञान है॥

सम्यक्चारित्र।

सम्यक्चारित्र—नाम सच्चे चारित्र (यथार्थचारित्र)का है यानि सत्यरूपप्रवर्तने का है जिन क्रियाओंसे संसारमें भ्रमण करनेके कारण जो कर्म उत्पन्न होवें वह क्रिया न करनी और जिन क्रिया तथा भावों से नये कर्म उत्पन्न न होवें उस रूप प्रवर्तना अर्थात् कर्म के ग्रहण होने के कारण जे क्रिया उनका त्याग कर अतीचार रहित मूल गुणों उत्तरगुणों को पालना धारण करना) उसका नाम सम्यक् चारित्र है॥

सम्यग्दृष्टि।

सम्यग्दृष्टि—उसको कहते हैं जिसके सम्यक्त्व उत्पन्न भई हो अर्थात् सत्यता प्रकट भई हो यहां सत्यता से यह मुराद है कि जो अपने आत्मा और पर शरीरादिक के असली स्वरूप का श्रद्धानी हो जानकार हो वह सम्यग्दृष्टि कहलाता है सो सम्यग्दृष्टि दोप्रकारके होते हैं एकअविरत दूसरा अविरतव्रती, सम्यग्दृष्टि वह हैं जो केवल आत्मा और परपदार्थ के असली स्वभाव का श्रधानी और जानकार हैं और चारित्र नहीं पालते और व्रती सम्यकदृष्टिवह हैं जो अपने आत्मा और पर पदार्थका तथा निज स्वभावका श्रद्धानी भी हैं जानकार भीहैंऔर चारित्र भी पालते हैं जिनके सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक् चारित्र तीनों पाइये वह व्रती सम्यग्दृष्टि हैं।

यहां इतनी बात और समझनी हैकि सम्यक्त्व नाम सम्यग्दर्शन या सम्य दर्शन-सम्यग्ज्ञान इन दोनों या सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र इन तीनों की प्राप्ति का है यदि किसी जीव के सम्यग्दर्शन न होवे और बाकी के दोनों होवें तो उसके सम्यक्त्व की उत्पत्ति नहीं, जिस जीव के केवल सम्यग्दर्शन ही होवे और सम्यग्ज्ञान सम्यक् चारित्र न भी होवें तो भी उस के सम्यक्त्व है जैसे वृक्ष के जड़ है उसी प्रकार इन तीनों का सम्यग्दर्शन मूल है इसके बिना उन दोनों से कभी भी मोक्ष फल की प्राप्ति नहीं अर्थात् इस सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान और चारित्र कार्यकारी नहीं प्रयोजन ज्ञान तो कुज्ञान और चारित्रकुचारित्र कहलाता है इसलिये संसार के जन्म मरण रूप दुःख का अभाव नहीं हो सकता॥

उपशम।

उपशम नाम है दबजाने का शांत हो जाने का कमजोर हो जाने का जैसे तेज अग्नि बलती हुई शांत हो जावे उसकी तेजी घट जावे उसी प्रकार जब कर्मका बल घट जावे उसे उपशम कहते हैं॥

क्षयोपशम।

इस पद में क्षय और उपशम दो शब्द हैं उपशम का अर्थ ऊपर बता चुके हैं क्षयका अर्थ है नष्ट हो जाना जाता रहना नाश को प्राप्त होना सो जब कर्म्म की दो हालत होती हैं उस का जोर भी घट जाता है वह शांत हो जाता है और किसी कदर घटता भी जाता है नष्ट भी होता जाता है उस हालत में जो कर्म्म हो उसे कर्म्म का क्षयोशम कहते हैं॥

क्षय।

क्षय का अर्थ नष्ट होना बता चुके हैं सो जैसे काफूर की डली पडी २ घटनी शुरू हो जाती है इस हालत में जब कर्म्म हो जो घटता ही चला जावे उसका नाम कर्म्म का क्षय कहलाता है अर्थात् कर्म्म का क्षय होता है॥

सम्यक्त्व की उत्पत्ति।

जब इस जीव के दर्शन मोह का उपशम या क्षय या क्षयोपशम होय तब इस के सम्यक्त्व उत्पन्न होय है बगैर दर्शन मोह के उपशम या क्षय या क्षयोपशम के सम्यक्त्व की उत्पत्ती होती नहीं सो यह सम्यक्त्व दो प्रकार से उत्पन्न होय है या तो स्वतःस्वभाव या दूसरे के उपदेश से सो इन में से एक तो निसर्गज सम्यक्त्व कहलाता है दूसरा अधिगमज सम्यक्त्व कहलाता है॥

निसर्गज सम्यक्त्व।

निसर्गज शब्द का अर्थ है (स्वतःस्वभाव) कुदरती खुदबखुद सो जो सम्यक्त्व स्वतःस्वभाव खुदबखुद बगैर किसीके उपदेशके उत्पन्न होवहनिसर्गज सम्यक्त्व है॥

अधिगमज सम्यक्त्व।

अधिगमज शब्दका अर्थ है प्राप्तना हासिलना सो जो सम्यक्त्व किसी दूसरे के उपदेश से उत्पन्न होवे वह अधिगमज सम्यक्त्व कहलाता है जो सम्यक्त्व पढ़ने से होवे वह भी अधिगमजसम्यक्त्व है शास्त्र भी दूसरे का उपदेश है किसी को जबानी समझाना या लिखकर समझाना दोनों ही उपदेश हैं॥

वीतराग सम्यक्त्व।

निजात्म स्वरूपकी विशुद्धता सो वीतराग सम्यक्त्व है॥

अथ पंचपरमेष्ठि के १४३ मूल गुण।

गाथा।

अरहंता छियाला सिद्धा अट्ठेव सूर छत्तीसा।
उवज्झायापणवीसा, साहूणं होंति अडवीसा॥

अर्थ—अरहंत के गुण ४६ सिद्ध के गुण ८ आचार्य्य के गुण ३६ उपाध्याय के गुण २५ साधु के गुण २८ होते हैं॥

नोट—यहां बालकों को यह समझ लेना चाहिये कि पंचपरमेष्ठि के इन १४३ मूलगुणों के सिवाय और भी अनेक गुण होते हैं, पांचों परमेष्ठि के गुणों का तो क्या ठिकाना सिरफ मुनि के ही शास्त्र में ८४ लाख गुणों का होना लिखा है। सो यहां इस का मतलब यह समझ लेना चाहिये कि गुण दो प्रकार के होते हैं एक मूल गुण (लाजमी) (compulsary) दूसरे उत्तर गुण (अखत्यारी) (optional) होते हैं सो मूल गुण उसको कहते हैं जो उनमें वह जरूर होवें और उत्तर गुण उसको कहते हैं कि वह उनमें होवें भी या उनमें से कुछ न भी होवें उत्तर गुण उनके शरीरकी ताकत और भावों की निर्मलता के अनुसार होते हैं और मूलगुणों में शरीर की ताकत और भावोंकी दृढ़ताका विचार नहीं यह तो उनमें होने जरूरी लाजमी हैं इन विना उनका पद दूषित है॥ सो कवि बुधजन जी ने इन १४३ मूल गुणों को ३६ छन्दों में गून्थ कर उस पाठका नाम इष्ट-छतीसी रक्खा है सो वह १४३ मूल गुण अर्थ सहित हम यहां लिखते हैं ताकि सर्व बालक उसका मतलब समझ सकें॥

इष्ट छत्तीसी।

मंगलाचरण। सोरठा।

प्रणमूं श्रीअरहंत, दया कथित जिन धर्म को।
गुरु निर्ग्रंथ महन्त, अवर न मानूं सर्वथा॥
विनगुण की पहिचान, जाने वस्तु समानता।

तातैं परम बखान, परमेष्ठी के गुण कहूं ॥
राग द्वेषयुत देव, मानें हिंसाधर्म पुनि।
सग्रन्थिनि की सेव, सो मिथ्याती जग भ्रमें ॥

अर्थ—दयामय जैन धर्म्म को प्रकाश करने वाले श्रीअरहंतदेव और परिग्रह रहित गुरु को मैं नमस्कार करूं हूं अन्य (कुदेवादिक) को नहीं ॥

क्योंकि विना गुणोंको पहिचानके समस्त अच्छी बुरीवस्तु बराबर मालूम होती है इस लिये पंचपरमेष्ठि को परमोत्कृष्ट जानकर मैं उनके गुण वर्णन करूं हूं ॥

जो राग,द्वेष युक्त देव और हिंसारूप धर्म के मानने वाले हैं और परिग्रह सहित गुरु की सेवा करते हैं वह मिथ्याती जगत् में भ्रमें हैं ॥

अथ अर्हंत के ४६ मूल गुण (दोहा)

चौंतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्य पुनि आठ।
अनन्त चतुष्टय गुण सहित, छीयालीसों पाठ ॥ १ ॥

अर्थ—३४ अतिशय ८प्रातिहार्य ४ अनन्तचतुष्टय यह अर्हंतके ४६मूलगुण होते हैं

३४ अतिशय। दोहा।

जन्में दश अतिशय सहित, दश भए केवल ज्ञान।
चौदह अतिशय देवकृत, सब चौंतीस प्रमान ॥ २ ॥

अर्थ—१० अतिशय संयुक्त जन्मते हैं १० केवल ज्ञान होने पर होते हैं १४ देव कृत होते हैं अर्हंत के यह ३४ अतिशय होते हैं ॥

जन्म के १० अतिशय। दोहा।

अतिसुरूप सुगन्ध तन, नाहिं पसेव निहार।
प्रियहित वचन अतौल बल, रुधिर श्वेत आकार ॥ ३ ॥
लक्षण सहस अरु आठतन, समचतुष्कसंठान।
वज्रवृषभ नाराच युत, ये जन्मत दश जान ॥ ४ ॥

अर्थ—१ अत्यन्त सुन्दर शरीर, २ अतिसुगन्धमय शरीर, ३ पसेव रहित

शरीर ४ मल मूत्र रहित शरीर ५ हितमित प्रिय वचन बोलना ६ अतुल्यबल ७ दुग्ध वत् श्वेत रुधिर ८ शरीर में १००८ लक्षण, ९ सम चतुरस्रसंस्थान शरीर, अर्थात् अरहन्त के शरीर के अङ्गोंकी बनावट स्थिति चारों तरफ से ठीक होती है किसी अङ्ग में भी कसर नहीं होती १०वज्रवृषभनाराचसंहनन यह दश अतिशय अर्हंत के जन्म से ही उत्पन्न होते हैं॥

नोट—यहां बालकों को यह समझ लेना चाहिये कि यह जन्म के १० अतिशय हर एक अरहन्त (केवली) के नहीं होते सिवाय पञ्चकल्याणक को प्राप्त होने वाले तीर्थंकरों के जितने दूसरे क्षत्री वैश्य और ब्राह्मण मुनि पदवो धार केवल ज्ञान को प्राप्त होते हैं, या जो विदेह क्षेत्रमें तीन कल्याणक या दो कल्याणक वाले तीर्थंकर होते हैं उनके यह जन्मके १० अतिशय सारे नहीं होते उनका जन्म समय खून (रुधिर) लाल होता है सुफ़ेद नहीं होता उनके निहार (टट्टी फिरना पिशाव करना) भी होता है उनके पसेव भी आता है उनके शरीर में जन्म समय १००८ लक्षण नहीं होते, वह जन्म समय अतुल बलके धारी नहीं होते, अतुल बल उस को कहते हैं जिसके बलकी तुलना कहिये अन्दाजा न हो, चक्रवर्ती, नारायण के बल का तुलना (अन्दाजा) होता है पञ्च कल्याणक को प्राप्त होने वाले तीर्थंकर में अतुल (बेहद) बल होता है देखो श्री नेमिनाथ ने नारायण को एक अंगुली से झुला दिया था॥

पस यह जन्म के पूरे १० अतिशय उनही अरहन्त में जानने जो पहले भव या भवों में तीर्थंकर पदवी का बन्ध बांध पञ्च कल्याणक को प्राप्त होने वाले तीर्थंकर उत्पन्न होय केवल ज्ञान को प्राप्त होते हैं॥

केवल ज्ञान के १० अतिशय। दोहा।

योजन शत इक में सुभिख, गगन गमन मुखचार।
नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाहीं कवलाहार॥ ५॥
सब विद्या ईश्वर पनों, नाहि बढ़ैं नख केश।
अनिमिषदृग् छाया रहित, दश केवल के वेश॥ ६॥

अर्थ—१ एक सौ योजन सुभिक्ष, अर्थात् जिस स्थान में केवली तिष्ठें उन से चारों तरफ सौ सौ योजन सुकाल होता है, २ आकाश में गमन ३ चार मुखों का दीखना अर्थात् अर्हंत का मुख चारों तरफ से नजर आता है ४ अदया का अभाव, ५ उपसर्ग रहित ६ कवल (ग्रास) आहार वर्जित, ७ समस्तविद्याओंका स्वामी पना

८ नख केशों का नहीं बढ़ना, ९ नेत्रों की पलकें नहीं टिमकना, १० छाया कर रहित शरीर। यह दश अतिशय केवल ज्ञान के होने पर उत्पन्न होते हैं ॥

देव कृत १४ अतिशय॥ दोहा॥

देव रचित हैं चार दश, अर्द्ध मागधी भाष।
आपस माहीं मित्रता, निर्मल दिश आकाश॥ ७॥
होत फूल फल ऋतु सबै, पृथिवी काच समान।
चरण कमल तल कमल है, नभ तैं जयजय बान ॥ ८॥
मन्द सुगन्ध बयारि पुनि, गन्धोदक की वृष्टि।
भूमि विषे कंटक नहीं, हर्ष मई सब सृष्टि॥ ९॥
धर्म चक्र आगे रहै, पुनि वसु मंगल सार।
अतिशय श्रीअरहन्त के, यह चौतीस प्रकार॥ १०॥

अर्थ—१भगवान् की अर्द्धमागधी भाषा का होना, २समस्त जीवों में परस्पर मित्रता का होना, ३ दिशा का निर्मल होना,४ आकाश का निर्मल होना, ५ सब ऋतु के फल फूल धान्यादिक का एक ही समय फलना, ६एक योजन तक की पृथिवी का दर्पणवत् निर्मल होना, ७ चलते समय भगवान के चरण कमल के तले स्वर्ण कमल का होना, ८ आकाश में जय जय ध्वनि का होना, ९ मन्द सुगन्ध पवन का चलना, १० सुगंध मय जल की वृष्टि का होना, ११ पवनकुमार देवन कर भूमि का कण्टक रहित करना, १२ समस्त जीवों का आनन्द मय होना, १३ भगवान के आगे धर्म चक्र का चलना,१४ छत्र चमर ध्वजा घण्टादि अष्टमंगल द्रव्यों का साथ रहना॥

इस प्रकार ३४ अतिशय अर्हंत तीर्थंकर के होते हैं॥

८ प्रातिहार्य्य॥ दोहा॥

तरु अशोक के निकट में, सिंहासन छविदार॥
तीन छत्र शिर पर लसैं, भामंडल पिछवार॥ ११॥
दिव्यध्वनि मुख तैं खिरे, पुष्प वृष्टि सुर होय।
ढारें चौंसठि चमर जख, बाजें दुंदुभि जोय॥ १२॥

अर्थ—१ अशोक वृक्षका होना जिस के देखने से शोक नष्ट होजाय, २ रत्नमय सिंहासन ३ भगवान् के सिर पर तीन छत्र का फिरना, ४ भगवान् के पीछे भामंडल का होना ५ भगवान के मुख से निरक्षरी दिव्यध्वनि का होना, ६ देवों कर पुष्प वृष्टि का होना, ७ यक्ष देवों कर चौंसठ चवरों का ढोलना, ८ दुन्दुभी बाजों का बजना यह ८ प्रातिहार्य हैं ॥

समवशरन की १२ सभा ।

समवशरण में गंधकुटी के हर तरफ़ गोलाकर प्रदक्षिणा रूप १२ सभा होय हैं ।

१–पहली सभा में गणधर और अन्य मुनि विराजे हैं ।

२–दूसरी सभा में कल्पवासी देवों की देवी तिष्ठे हैं ।

३–तीसरी सभा में आर्यिका और श्राविकायें तिष्ठे हैं ।

४–चौथी सभामें ज्योतिषी देवों की देवी तिष्ठे हैं ।

५–पांचवी सभा में व्यंतर देवों की देवी तिष्ठे हैं ।

६–छठी सभा में भवनवासी देवों की देवी तिष्ठे हैं ।

७–सातवीं सभा में १० प्रकार के भवनवासी देव तिष्ठे हैं ।

८–आठवीं सभा में ८ प्रकार के व्यंतर देव तिष्ठे हैं ।

९–नवमी सभा में चन्द्र सूर्यादि विमानों में रहने वाले ५ प्रकार के ज्योतिषी देव तिष्ठे हैं ।

१०–दशवीं सभा में १६ स्वर्गों के वासी इन्द्र और देव तिष्ठे हैं ।

११–ग्यारवीं सभा में मनुष्य तिष्ठे हैं ॥

१२–बारहवीं सभा में पशु, पक्षी, और तिर्यंच तिष्ठे हैं ॥

नोट—समवशरण में इन का आना जाना लगा रहता है कोई आवे है, कोई जावे है कोई धर्मोपदेश सुने है समवशरण का यह अतिशय है । कि समवशरण में रात दिन का भेद नहीं हर वक्त दिन ही रहे है रात्री नहीं होती और कितने ही देव मनुष्य आजावें परन्तु समवशरण में सब समाजाते हैं जगह का अभाव कभी भी नहीं

होता है और समवशरण में मोह, भय, द्वेष, विषयों की अभिलाषा, रति, अदेख का भाव, छींक, जम्माई, खांसी डकार, निद्रा, तंद्रा (ऊंघना) क्लेश, बिमारी, भूख, प्यास, आदि किसी जीव के भी अकल्याण तथा विघ्न नहीं होता और जैसे जल जिस वृक्ष में आता है उसी रूप होजाता है तैसे ही भगवान की वाणी अपनी अपनी भाषा में सब समझे हैं॥

अनन्त चतुष्टय॥ दोहा॥

ज्ञान अनन्त अनन्त सुख, दरशअनन्त प्रमान।
बल अनन्त अरहंतसो, इष्टदेव पहिचान॥ १३॥

अर्थ—१ अनन्त दर्शन, २ अनन्तज्ञान, ३ अनन्तसुख, ४ अनन्त वीर्य्य इतने गुण जिस में हों वह अर्हंत हैं चतुष्टयनाम चार का है अनन्त चतुष्टयनाम चार अनन्त का है अनन्त नाम जिस का अन्त न हो अर्थात् जिस की कोई हद न हो जब यह आत्मा अरहन्त पद को प्राप्त होता है तब इस को अनन्त चतुष्टय की प्राप्ति होती है॥

१८ दोष वर्णन। दोहा।

जन्म जरा तिरषा क्षुधा, विस्मय आरत खेद।
रोग शोक मद मोह भय, निद्रा चिन्ता स्वेद॥ १४॥
राग द्वेष अरु मरण पुनि, यह अष्टा दश दोष।
नाहिं होत अरहंत के सो छवि लायक मोष॥ १५॥

अर्थ—१ जन्म, २ जरा, ३ तृषा, ४ क्षुधा, ५ आश्चर्य्य अरति (पीडा) ७ खेद (दुःख), ८ रोग, ९ शोक, १० मद, ११ मोह, १२ भय, १३ निद्रा, १४ चिन्ता, पसीना, १६ द्वेष, १७ प्रीति, १८ मरण। यह १८ दोष अरहंत के नहीं होते॥

अथ सिद्धों के ८ मूल गुण। सोरठा।

समकित दरसन ज्ञान अगुरु लघु अवगाहना।
सूक्षम वीरजवान निरावाध गुण सिद्ध के॥ १६॥

अर्थ—१ सम्यक्त्व, २ दर्शन, ३ ज्ञान, ४ अगुरुलघुत्व, ५ अवगाहनत्व, ६ सूक्ष्मपना, ७ अनंत वीर्य्य ८ अव्याबाधत्व यह सिद्धों के ८ मूल गुण होते हैं॥

अथ आचार्य के ३६ मूल गुण। दोहा।

द्वादश तप दश धर्म युत, पाले पंचाचार।
षट् आवशिक त्रय गुप्ति गुण, आचारज पदसार॥ १७॥

अर्थ—तप १२, धर्म १०, आचार ५, आवश्यक ६, गुप्ति ३। यह आचार्य के ३६ मूल गुण होते हैं॥

१२ तप। दोहा।

अनशन ऊनोदर करे, व्रतसंख्या रस छोर॥
विविक्तशयन आसन धरे, कायक्लेश सुठोर॥ १८॥
प्रायश्चित धर विनय युत, वैयाव्रत स्वाध्याय।
पुनि उत्सर्ग विचार के, धरे ध्यान मन लाय॥ १९॥

अर्थ—१ अनशन (न खाना), २ ऊनोदर (थोडासाखाना) ३ व्रतपरिसंख्यान, ४ रस परित्याग, विविक्तशय्यासन, ६ कायक्लेश, (यह छै प्रकार का बाह्य तप है। ७ प्रायश्चित्त, ८ पांच प्रकार का विनय ९ वैयावृत्य करना, १० स्वाध्याय करना, ११ व्युत्सर्ग (शरीर से ममत्व छोड़ना) १२ ध्यान (यह छै प्रकार का अन्तरंग तप है)।

१० धर्म (दोहा)।

क्षमा मारदव आरजव, सत्य वचन चित्त पाग।
संयम तप त्यागी सरब, आकिंचन तिय त्याग॥ २०॥

अर्थ—उत्तम क्षमा, २ मार्दव, ३ आर्जव, ४ सत्य, ५ शौच, ६ संयम, ७ तप, ८ त्याग, ९ आकिंचन्य, १० ब्रह्मचर्य्य यह दश प्रकार के उत्तम धर्म हैं॥

६ आवश्यक। दोहा।

समताधर बन्दन करे, नानास्तुति बनाय।
प्रति क्रमण स्वाध्याय युत, कायोत्सर्ग लगाय॥ २१॥

अर्थ—१ समता (समस्त जीवों में समता भाव रखना), २ बन्दना, ३ स्तुति (पंचपरमेष्ठी की स्तुति करना) ४ प्रति क्रमण (लगे हुए दोषों का पश्चाताप करना) ५ स्वाध्याय, ६ कायोत्सर्ग ध्यान करना यह छै आवश्यक हैं॥

५ आचार और ३ गुप्ति। दोहा।

दर्शन ज्ञान चरित्र तप, बीरज पंचाचार।
गोपे मन बचन काय को, गिणछत्तीस गुणसार ॥२२॥

अर्थ—१ दर्शनाचार, २ ज्ञानाचार, ३चरित्राचार, ४ तपाचार, ५ वीर्य्याचार, यह पांच आचार हैं और सर्वसावद्य योग जो पापसहित मन, वचन, काय, की प्रवृति, उसका रोकना सो गुप्ति है अर्थात् १ मनोगुप्ति मन को वश में करना, २ वचन गुप्ति (वचनको वश में करना),३ काय गुप्ति(शरीर को वशमें करना)यहतीन गुप्तिहैं।

तीन गुप्ति के अतिचार।

१ रागादि सहित स्वाध्यायमें प्रवृति तथा अंतरंग में अशुभ परिणाम इत्यादि मनोगुप्ति के अतिचार हैं ॥

२ द्वेष से तथा राग से तथा गर्व से मौनधारण करना इत्यादि बचन गुप्ति के अतिचार हैं ॥

३ असावधानी से काय की क्रिया का त्याग करना तथा एक पैर से खड़ा रहना तथा जीव सहित भूमि में तिष्ठना तथा गर्वथकी निश्चल तिष्ठना तथा शरीर में ममता सहित कायोत्सर्ग करना तथा कायोत्सर्ग के जो ३२ दोष हैं उनमें से कोई दोष लगावना इत्यादि काय गुप्ति के अतिचार हैं जैन के मुनि इत्यादि दोष टार तीन गुप्ति का पालन करते हैं। यह आचार्य के ३६ मूल गुण कहे।

अथ उपाध्याय के २५ मूल गुण। दोहा।

चौदह पूर्व को धरे, ग्यारह अंग सुजान।
उपाध्याय पच्चीस गुण, पढ़े पढ़ावे ज्ञान ॥२३॥

अर्थ—उपाध्याय ११ अंग १४ पर्व के धारी होतेहैं इनको आप पढें औरोंको पढ़ावें।

११ अंग। दोहा।

प्रथम हि आचारांग गण, दूजा सूत्र कृतांग।
स्थानांग तीजा सुभग, चौथा समवायांग ॥ २४ ॥
व्याख्याप्रज्ञप्तिपञ्चमो, ज्ञातृकथा षट् आन।

पुनि उपासकाध्ययन है, अन्त कृत दश ठान ॥२५॥
अनुत्तरण उत्पाद दश, विपाक सूत्र पहिचान।
बहुरि प्रश्न व्याकरण युत, ग्यारह अंग प्रमान ॥ २६ ॥

अर्थ—१ आचारांग, २ सूत्रकृतांग, ३ स्थानांग, ४ समवायांग, ५ व्याख्या-प्रज्ञप्ति, ६ ज्ञातृकथांग, ७ उपासकाध्ययनांग, ८ अन्तकृतदशांग, ९ अनुत्तरोत्पाद दशांग, १० प्रश्न व्याकरणांग, ११ विपाकसूत्रांग। यह ग्यारह अंग हैं ॥

चौदह पूर्व। दोहा

उत्पाद पूर्व अग्रायणी, तीजो वीरज वाद।
अस्ति नास्ति परवादपुनि, पञ्चमज्ञान प्रवाद ॥ २७ ॥
छट्ठा कर्म परवाद है, सत्तप्रवाद पहिचान।
अष्टम आतम प्रवाद पुनि, नवमोप्रत्याख्यान ॥ २८ ॥
विद्यानुवाद पूरव दशम, पूर्व कल्याण महन्त।
प्राणवाद क्रिया बहुरि, लोक विंदु है अन्त ॥ २९ ॥

अर्थ—१उत्पादपूर्व,२ अग्रायणी पूर्व, ३ वीर्य्यानुवाद पूर्व, ४ अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व, ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व, ६ कर्म प्रवाद पूर्व, ७ सत्यप्रवाद पूर्व, ८ आत्मप्रवाद पूर्व, ९ प्रत्याख्यान पूर्व, १० विद्यानुवादपूर्व, ११ कल्याणवाद पूर्व,१२ प्राणानुवादपूर्व, १३ क्रियाविशाल पूर्व, १४ लोक बिन्दु पूर्व। यह१४ पूर्व हैं ॥

अथ सर्व साधु के २८ मूल गुण। दोहा।

पंच महाव्रत समितिपण, पण इंद्रियन का रोध।
षट् आवश्यक साधु गुण, सात शेष अवबोध ॥ ३० ॥

अर्थ—५ महाव्रत, ५ समिति, ५ इन्द्रियों का रोकना, ६ आवश्यक, ७ अवशेष यह २८ मूलगुण साधु के जानो ॥

पंचम महाव्रत ॥ दोहा ॥

हिंसा अनृत तस्करी, अब्रह्म परिग्रह पाप।

मन वचतनतैं त्यागवो, पञ्च महाव्रत थाप॥ ३१॥

अर्थ— १ अहिंसा महाव्रत, २ सत्यमहाव्रत, ३ अचौर्य महाव्रत, ४ ब्रह्मचर्य महाव्रत, ५ परिग्रहत्याग महाव्रत यह पांच महाव्रत हैं॥

नोट–मुनों के वास्ते यह पांच महाव्रत हैं श्रावक के वास्ते यह पांच अणुव्रत हैं इन पांच व्रतों के बरखिलाफ पांच पापों की पांच कथा बडे सुकुमाल चरित्र में पृष्ट २२ से ३२ तक लिखी हैं जो मोती समान छपा हुवा हमारे यहां से ।) रुपये में मिलता है जिसे वह कथा देखनी हो उसमें देखे॥

५ समिति। दोहा।

ईर्य्या भाषा एषणा, पुनि क्षेपण आदान।

प्रतिष्ठापनायुत क्रिया, पांचों समिति विधान॥ ३२॥

अर्थ—१ ईर्य्या समिति—परमागम की आज्ञा प्रमाण प्रमाद रहित यत्नाचार से जीवों की रक्षा निमित्त भूमि को देख कर गमन करना तिस का नाम ईर्य्यासमिति है।

२ भाषा समिति—देश,काल के योग्य अयोग्य को विचार कर संदेह रहित सूत्र की आज्ञा प्रमाण हित मित वचन बोलना तिसका नाम भाषा समिति है।

३ एषणा समिति–जिह्वा इंद्रियकी लंपटताको त्याग आचारांग सूत्रके हुकम प्रमाण उद्गमादि ४६ दोष ३२ अंतराय टार आहार करना तिसका नाम एषणा समिति है।

४ आदान निक्षेपणा समिति—प्रमाद रहित यत्नाचार से शरीरादिक मयूर पिच्छिका, कमंडलु, शास्त्र यह उपकरण जीव हिंसा के कारण टार सहज से रखने सहज से उठावने तिसका नाम आदान निक्षेपणा समिति है।

५ प्रतिष्ठा पना समिति–जीव रहित भूमि विषे तथा जहां जीवों की उत्पत्ति होने का कारण न हो ऐसी भूमि विषे यत्नाचार से मल मूत्र, कफ, नासिका का मल नख,केशादि क्षेपना(डालना)तिस का नाम प्रतिष्ठापना समिति है यह पांचसमिति हैं

५ समिति के अतिचार (दोष)

१ गमन करते समय भूमिको भले प्रकार नहीं देखना और वन, पर्वत, वृक्ष नगर, बाजार, तथा मनुष्यों का रूप आदि देखते हुए चलना इत्यादि ईर्यासमिति के अतिचार हैं॥

२ देश, काल के योग्य अयोग्य का नहीं विचार करके पूर्ण सुने बिना पूर्ण जाने बिना बोलना इत्यादि भाषा समिति के अतिचार हैं॥

३ उद्गमादि कोई दोष लगाय तथा रसकी लंपटता से तथा प्रमाण से अधिक भोजन करना इत्यादि एषणा समिति के अतिचार हैं।

४ भूमि तथा शरीरादि उपकरणों को शीघ्रता से उठावना मेलना अच्छी तरह नेत्रों से नहीं देखना तथा मयूर पिच्छिका से भले प्रकार झाडन पूंछन नहीं करना जल्दी से करना इत्यादिक आदान निक्षेपणा समिति के अतिचार हैं।

५ अशुद्ध भूमि विषे तथा जीवों सहित भूमि विषे जहां जीवों की उत्पत्ति होने का कारण हो ऐसी भूमि विषे मल मूत्रादिक्षेपना(डालना)इत्यादि प्रतिष्ठापनासमिति के अतिचार हैं जैन के मुनि इत्यादि दोषों को दूरकर पांचों समितिका पालनकरते हैं॥

५ इन्द्रियदमन और बाकी। दोहा।

स्पर्शन रसना नासिका, नयन श्रोत्र का रोध।
षट् आवशि मंजन तजन, शयन भूमि को शोध॥ ३३॥
वस्त्रत्याग कचलौंच अरु, लघु भोजन इकबार।
दांतन मुख में ना करें, ठाडे लेय अहार॥ ३४॥
बरणे गुण आचार्य में, षट् आवश्यक सार।
ते भी जानो साधु के, ठाइस इस परकार॥ ३५॥
साधर्मी भविपठन को, इष्टछतीसी ग्रन्थ।
अल्पबुद्धि बुधजन रचो, हितमित शिवपुर पन्थ॥ ३६॥

अर्थ—१ स्पर्शन (त्वक्) २ रसना, ३ घ्राण, ४ चक्षु, ५ श्रोत्र इन पांच इन्द्रियों को वश करना। और १ यावज्जीव स्नान त्याग, २ भूमि पर सोना, ३ वस्त्रत्याग, ४ केशों का लौंच करना, ५ एक बार लघु भोजन करना, ६ दांतन नहीं करना, ७ खड़े आहार लेना सात तो यह, और ६ आवश्यक जो आचार्य्य के गुणों में वर्णन कर चुके हैं इस प्रकार २८ मूल गुण सर्व सामान्य मुनि आचार्य्य और उपाध्याय के होते हैं॥

तीन गुप्ति का प्रश्न उत्तर।

यदि यहां कोई यह प्रश्न करे कि पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ति यह तेरह प्रकार के चारित्र पालन वाले जो हमारे दिगम्बर गुरु (मुनि) (साधु) उनके

मानने वाले हम तेरह पंथी जैनी कहलाते हैं सो मुनि के २८ मूल गुणों में तीन गुप्ति नहीं कही सो क्या जैन मुनि तीन गुप्ति नहीं पालते ?

इस का उत्तर यह है कि जैन के सर्व साधु अपनी शक्ति समान तीन गुप्ति का पालन करते हैं उन तीन गुप्ति का वर्णन आचार्य के गुणों में होचुका है. यहां साधु के गुणों में दुबारा इस वास्ते नहीं लिखा कि आचार्य्य के तो यह मूल गुणों में श्यामिल हैं आचार्य को उन का पालना लाजमी है जो आचार्य्य तीन गुप्ति को न पाले उस का आचार्य्य पद खंडित है और साधु के यह तीन गुप्ति उत्तर गुणों में हैं अगर किसी साधु से कोई गुप्ति किसी काल में न भी पले तो उस से उस का साधुपना खंडित नहीं होता देखो हरिवंश पुराण सफा ५७२ अतिमुक्त महामुनि अवधि ज्ञानी ने कंश की राणी जीवंजशा को कहा अहो जीवंजशा, जिस देवकी के यह वस्त्र तू मुझे दिखाती है इसके पुत्र तेरे पति और पिता के मारने वाला होयगा और भी श्रेणिक चरित्र आदि ग्रंथों में मुनियों से गुप्ति न पलने की ऐसी अनेक कथा हैं सो मुनि के यह तीन गुप्ति मूल गुणोंमें नहीं हैं उत्तर गुणों में हैं सर्वजैन मुनि इन तीन गुप्तिका अपनी शक्ति अनुसार पालन करेहैं परन्तु किसी काल में किसी साधु से नहीं भी पलती इस वास्ते इनको साधुवों के मूल गुणोंमेंनहीं लिखा।

इति पंच परमेष्ठि के १४३ मूल गुणों का वर्णन समाप्तम् ॥

अथ ७ व्यसन का वर्णन।

१ जूवा, २ मांस, ३ मदिरा, ४ गणिका, [रंडी], ५ शिकार ६ चोरी, ७ परस्त्री।

नोट—इनका खुलासा इस प्रकार है १ जूवा उसे कहते हैं जो पैसा, रुपैया, गिनी, नोट, जेवर वगैरा या मकान, जमीन, असबाब, कपड़ा, हाथी, घोड़ाश्वी वगैरा धन को दावपर लगाकर खेलना या ताश शतरंज चौपड घुडदौड, अंटा आदि दूसरे का धन लेने और निज धन देनेकी बाजी लगाकर खेलना, पानीका सट्टा अफीमका सट्टा कई अनाज सोना चांदी आदि का सट्टा बधनी यह सब जूवाहै जिसके जूवे का त्याग हो वह किसी प्रकार का सट्टा या बधनी का सौदा नहीं कर सकता और न घुड़दौड़ का टिकट ले सकता न किसी वस्तु की लाटरीमें आप हिस्सा ले सकताहै वह सब जूवा है जिसके पीछे जूवे का ऐब लग जाता है वह मेहनत करके कमाने लायक नहीं रहता वह जो

कमाता है इकट्ठा करके सदा सब जूवे में हार आता है जुवारी सदा गरीब दुःखी रहता है सारी उमर तड़फता ही मरता है जब उसके पास धन नहीं रहता तब चोरी करने लगता है दूसरे के बच्चों को जरा से धन के वास्ते मार डालता है इसलिये राजा कर सूली दिया जाता है कैद किया जाता है जुवारी का कोई ऐतबार नहीं करता उसकी कोई इज्जत नहीं करता।

(२) मांस का खाना अभक्ष्य में लिखा है यहां दुबारा इस वास्ते बयान किया है कि जिसके मुंह के खून लगजावे जैसे राजा के मुंह के बच्चों का खून लग गया था सारे बच्चे नगर के खागया था इस का नाम मांस व्यसन है।

(३) मदका अर्थ यह है कि ऐसी वस्तु खानी जिससे नशा पैदा हो यानी बेहोशी या मस्त होने को बदचलनी करने को नशे वाली चीज खानी इसका नाम मद है जैसे माजून (माजुम) खाकर नशाई बनना भंग पीकर नशाई बनना ताड़ी पीकर नशाई बनना शराब पीकर नशाई बनना अफीम खाकर नशाई बनना यह सर्व मद में हैं। जो मनुष्य अपनी वायु बादी का बदन तन्दुरुस्त रखने को आखों से पानी बहना कम करने को अफीम खाने लगते हैं या ऊपर बयान की जो वस्तु उनमें से कोई अपनीजान बचाने को बीमारी दूर करने को खानी, वह मद में शामिल नहीं मद का मतलब ही नशे बाज बनने का है और यहां यह लेख व्यसन में है व्यसन का अर्थ ऐब का है जान बचाने बीमारी दूर करने को कोई नशीली वस्तु खाना ऐब नहीं है परन्तु आम्नाय विरुद्ध न खावे। ग्रन्थों के लेख और आचार्यों के आशय को समझना बड़ा कठिन है एक लफ़्जके अनेक अर्थ होतेहैं जहां जो संभवे वहां वही लेना चाहिये यह जो जितने मत भेद हुये हैं सब असंभव अर्थ के ग्रहण करने से ही हुये हैं।

(४) रंडी बाजी करना जिसको रंडी बाजी की लत लग जावे यानी जिस को यह ऐब लग जावे वह अपने सारे धन को खो देता है अपनी स्त्री के पास नहीं जाता उस से मुहब्बत नहीं रहती जब उस स्त्री को काम सतावे उस से न रहा जावे तो ऐसी अनेक स्त्री खाविंदको बदचलन देख उसके पास रंडी आती जाती देख कर वह भी ऐबदार हो जाती हैं बदचलन की सोहबत से दूसरा भी बदचलन हो जाता है, पस उसकी स्त्री भी बदचलन होजाती है वह नोकरों से संगम करने लग जाती है दूसरे रंडीबाज के आतशक होजाती है उसका वीर्य भुने अनाज की तरह होजाता है उसमें हमल रखने का गुण नहीं रहता इस से रंडीबाज के औलाद नहीं होती और ऐबों में तो धन ही जाताहै परन्तु रंडी बाजी में धन भी जाताहै वंश भी नहीं चलता

शरीर में आतशक होनेसे अधडंग माराजाता है जवान ही मरजाता है रंडीबाज़ सारे ही जवान मरते हैं पस रंडीबाजी दुनिया में सख्त ऐब है।

(५) चोरी, किसी का धन नकब लगाकर (पैंडा देकर) या किसी के घर में बड़ कर किसी का धन तथा वस्तु ले आना किसी की जेब काट लेनी किसी का भोले मार लेना किसी का लेकर मुकर जाना अमानत में खियानत करना किसी के नाम झूंठ लिखना किसी के ऊपर झूंठी नालिश करनी किसी को कम तोल देना दूसरे का माल जियादा तोल लेना किसी अनजान का बहु मूल्य धन थोड़ी कीमत में लेना चोरी का माल लेना यह सब चोरी है चोर का एतबार माता पिता भी नहीं करते सारी दुनिया में चोर का मुंह काला होता है अनेक राजा चोर को फांसी देदेते हैं। कैद कर देते हैं।

(६) खेटक नाम शिकार खेलने का है जीव तो मांस के व्यसनी भी मारते हैं खेटक उस से अलग इस कारण से है कि जो अपनी तबियत बहलाने खुश करने को तमाशा देखनेके लिये किसी जीवको मारना यह खेटक है यानी जिसको ऐसा ऐब लग जावे कि दूसरे जानवरों को मार कर या मारते हुवों को देखकर अपनी तबियत बहलाया करे खुश हुवा करे यह सब खेटक है शिकार करते हुये तमाशा देखना या किसी को फांसी देते हुये कतल करते हुये अपनी तबियत खुशकरने के लिये देखना यह सब खेटक है फौज में नौकरी करनी दुशमनों को मारना या रहज़नी करना हिंसा रूप पाप में शामिल है खेटक में नहीं) जो आदमी या जानवर अपने को या अपनी स्त्री बच्चों को मारने या खाने को आवे तब अपने तांई या अपने बाल बच्चों को बचाने के वास्ते उसको मारना उसका संहार करना यह खेटक नहीं व्यसन के मायने ऐब के हैं अपनी जान बचाना ऐब नहीं है।

(७) परनारी, परनारी का अर्थ जिस स्त्री के खाविंद हो उस के साथ रमना तिस का नाम परस्त्री गमन है इसी कारण से रंडी को अलग लिखा है क्यों कि उसके भर्तार नहीं परस्त्री के मायने दूसरे की जोरू है रंडी किसी की जोरू नहीं अगर सारी स्त्री ही परस्त्री में होवें तो फिर अपना व्याह करना परस्त्री व्यसन में होजावे सो इस का मतलब यही है कि दूसरों की जोरूओं से रमने का ऐब लगजाना जिसको यह ऐब लगजाता है वह अपनी स्त्री जोगा घरघाट का नहीं रहता और जो वीर्य का खराब होना औलाद पैदा करने के काबिल न रहना आतशक होजाना अधडंग मारना जो ऐब रंडीबाजी में हैं वह भी इसमें हैं यह अलग इस वास्ते है कि रंडीबाजी में

तो सिरफ धन का नाश वंशका कान चलना बीमारी होजाना ही है इस में राजासे कतल कराजाना कैद करना अनेक राजा परस्त्री सेवने वाले को जीवते हुये ही को पिंजरे में डाल कर पिंजरा दरखत में लटका देते हैं जहां वह तड़फ तड़फ कर सूक सूक कर मरता है और परस्त्री के वारिसों कर कतल किया जाना लाठियों से मारा जाना इतना इनाम इसमें और भी फालतू है इसी लिये इसे महा व्यसन जान कर सब से पीछे लिखा है कि यह सब व्यसनों का बाप महा व्यसन महा ऐब महापाप है

अथ २२ अभक्ष्य के त्याग का वर्णन ।

(आचार्य रचित प्राकृत पाठ)

५ ४ १ १ १ १
श्नः पंचुंबरी चउविगई, हिम विस करए असव्वमट्टीये ।
१ १ १ १ १
रयणी भोअणं गंचिअ, बहूबाअ अणंत संधाणं ॥ १ ॥ घोलवडा-
१ १ १ १
वायंगण, अमुणि अनामाणि फुल्ल फलयाणि। तुच्छफलं चलिअरसं
वज्झह वज्झाणि बीवीसं ॥ २ ॥

भाषा छंद बंद पाठ (छप्पै छंद)।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
वोरा घोलवरा निशिभोजन, बहुबीजा बैंगन संधान । बर
८ ९ १० ११ १२ १३ १४
पीपर उमर कठूमर, पाकर फल जोहोत अजान । कंदमूल माटी
१५ १६ १७ १८ १९ २० २१
विष आमिष मधु माखन और मदिरापान । फल अतितुच्छ तुषार
२२
चलितरस, जिनमत यह बाईस अखान ।

नोट—यह सब २२ अभक्ष्य कहलाते हैं ।

जो इन बाईस अभक्षों में से सब का या किसी एक का त्याग करे तो इन का खुलासा इस प्रकार है ।

प्राकृत पाठ का अर्थ।

पंचुंबरी–पांच उदुंबर वर, पीपर, ऊमर, कठूमर, पाकर। चउविगई–मद्य, मांस, मधु, मक्खन, १० हिम–बरफ ११ विस–जहर १२ करए–करका [ओला] १३ असव्व मट्टीये–मांटी, १४ रयणी भोअण–रात्रि भोजन १५ गंचिअ–कंद मूल, १६ बहुबीअ–बहुबीजा १७ अणंत संधाण–आचार वगैरह १८ घोलवड़ा–विदल १९ वायंगण–बैंगण, २० अमुणि अनामाणि फुल्ल फलयानि–अजान फल २१ तुच्छ फलं–तुच्छ फल, २२ चलिअरसं–चलितरस।

(१) ऊमर गुल्लर को कहते हैं, २ पीपल फल, ३ वड फल, ४ कठूमर जो काठ फोड कर निकले, जैसे सिंबलफल कटहलवढल जिसके फलसे पहले फूल नहीं आवे।

(५) पाकर फल यह यूनान ईरान आदि में बहुत होता है इस का जिकर यूनानी हिकमत की किताबों में लिखा है यह पांचों पांच उदंबर कहलाते है।

(६) मद्य (मदिरा) शराब ७ मांस (आमिष) ८मधु (शहत) इन तीनों का पहला अक्षर "म" है इस वास्ते इन को तीन मकार कहते है।

९ वोरा (ओला) (गडा) जो किसी समय आसमान से वर्षा करते हैं।

(१०) विदल—उड़द, चना, मूंग, मोठ, मसूर, लोबिया (रूहां) (संठा) अरहर, मटर, कुलथी, वगैरा ऐसे हैं जिन को तोडने से उन के अलग अलग दो टुकड़े होजावें उन की दाल, भल्ले, पकौड़ी, पापड़, सीवी, पूड़ा, रोट्टी, उड़दी, बूंदी, वगैरा कच्चो दही या छाछ की साथ मिलाकर नहीं खाने या तोरी, टींडे, करेला, घीया, खीरा, ककड़ी, सेम, वगैरा जितनी सबजी या खरबूजा, तरबूज, सरदा, आम, बादाम, धनियां, चारोंमगज, वगैरा ऐसे हैं जिन के फल के या गुठली के या बीज के या गिरी के तोड़ने से दो टुकड़े बराबर बराबर के होजावें इन को कच्ची दही या छाछ में मिला कर या साथ नहीं खाने यह सब विदल हैं॥

इस में यह दोष है कि कच्ची दही या छाछ में ऐसी वस्तु मिलाने से जब उस को मुख में दो तो मुख की राल लगते ही उस में अनंत जीवराशि पैदा हो जाती है इस लिये इस के खाने में महा पाप लिखा है। यहां इतनी बात समझ लेनी

चाहिये कि कच्ची दही या कच्ची छाछ की साथ खाने में दोष है पक्की की साथ खाने में कोई दोष नहीं । अगर दही या छाछ को अलग पकाई जावे और बेसन को अलग पकाकर फिर उन को मिलाकर उनकी कढ़ी बनाकर खावो तो उस में कोई दोष नहीं कच्ची दही छाछ में कच्चा बेसन मिला कर कढ़ी वनाकर मत खाना दही या छाछ पकाकर उस की साथ दाल सांवी पापड़ पकौड़ी पूड़ा वगैरा एक पहर तक यानि तीन घण्टे तक खा सकते हो उसके बादमें नहीं । अगर एक बार भोजनमें कच्चा दही और दाल वगैरा खाना चाहतेहो तो पहले दाल या दालकी वनी हुई वस्तु खालो फिर कुरला करके मुंह साफ हो जाने पर पीछे दही या छाछ खावो या पहले दही या छाछ खाकर कुरलाकरकेफिरदाल यादालकीवनी हुई वस्तुखाओ।

(११) रात्रि भोजन—इस का खुलासा पहले श्रावककी ५३ क्रियाओंमें लिखा है वहां से देखो ॥

(१२) बहुबीजा जिस फल के बीजों के अलग अलग हर वीज के घर नहीं होय जो फल को चीरते ही गरणदेकर बाहिर आपड़े जैसे अफीम का डोडा, धतूरे का फल आदि यह बहुवीजे फल अकसर जहरीले होते हैं इस लिये यह अभक्ष्य हैं ॥

(१३ बैंगन(१४)चारपहरसे जियादा देर का सधाना कहिये आचार नहीं खाना।

(१५) जिस फल को आप न जानता हो कि यह फल खाने योग्य है या नहीं ।

(१६) जमीकंद—जमीकंद उस को कहते हैं जो जमीन के अंदर पैदा हो, जैसे हल्दी, मूंगफली, अदरख, आलू, कचालू (हिडू), अरवी (गागली) (गुइयां) मूली कसेरू भिस (कवलककड़ी) सराल, गाजर, शकरकंदी, रतालू, सवज काली मूसली, सवज सुफैद मूसली गुलेयांल की जड़ का आचार, जमीकंद, सवज सालम मिश्री हाथीपिच, गठा (पियाज) लसन, शलगम,चीट जिस की विलायत से मोरस (दानेदार) खांड आती है इत्यादि जितने इस किसम के जमीन के अंदर पैदा होते हैं यह सर्व जमीकंद हैं यह हरे (सवज) नहीं खाने ॥

समझावट ।

यहां इतनी बात और समझनी कि सूके हुये खाने में कोई दोष नहीं और इन के सवज पत्ते या फल मसलन मूली के पत्ते या फल मूंगरे अरवी के पत्ते वगैरा जो जमीन के ऊपर लगते हैं उन के खाने में कोई दोष नहीं है कंदमूल की बावत शास्त्र में यह लेख है कि इन सवज में अनंत जीव राशि होती है इस लिये इन के खाने में महा पाप लिखा है परन्तु वह जीवराशि सिरफ हरे में ही होती है सूके में नहीं रहती

इस लिये हलदी सूंठ मूंगफली शालम मिसरी वगैरा सूके जमीकंद के खानेमें कोई दोष नहीं है चाहे तो सूका हुआ खाओ चाहे सूके हुए को तर करके या पका कर के खाओ कोई दोष नहीं है ॥

और बाज अनजान जैनी जो ऐसा करते हैं कि यदि उन के कंदमूल का त्याग है अगर उन के भोजन की थाली में या पतल पर कोई आलू वगैरा की भाजी (तरकारी साग रख देवे तो यह जो भोजन उस पतल पर या थाली में रखा है सारे को ही अपवित्र मान कर उठा देते हैं। फिर हट कर दूसरी थाली या पतल पर और भोजन रखवा कर खाते हैं सो यह उन की सखत गलती है आलू वगैरा का पका हुआ साग रखने से सारा भोजन अपवित्र नहीं होजाता मुनि भी कन्दमूल भोजन में आया हुआ अलग कर बाकी भोजन खाते हैं, पके हुए जमीकंद में कोई दोष नहीं होता सिरफ रिवाज विगड़ जाने वा जिह्वा इंद्रिय कर कृत कारित दोष उत्पन्न होने के वास्ते उन को खाने के लिये इजाजत नहीं है इस कारण से अगर अपने भोजन की थाली में कोई नावाकिफ आलू वगैरा पका हुआ कंद रख भी देवे तो सारा ही भोजन मत उठा दो सिरफ उस कंद को मत खावो बाकी भोजन सब खा सकते हो ॥

(१७) मिट्टीमें पृथ्वी कायके अनेक जीव हैं और मिट्टी खानेसे आंत खराब होतों हैं यह आंतों में चिहंसजाती है इसके खाने वाला जल्दी मर जाता है इस वास्ते कच्ची मिट्टी नहीं खानो जिन बच्चों को कच्ची मट्टी खाने की आदत पड़ जाती है वह दो चार वर्ष में जरूर मर जाते हैं जिन के बच्चे मट्टी खाना सीख जावें यदि उनके वारिस उन की जिंदगी चाहें तो जिस तरह हो उन का मिट्टी खाना छुड़ावें, एक बच्चा मिट्टी खाता था उस की माता ने मिट्टी में बारीक बहुत सी मिरच डाल छोटी छोटी डली बना सुखाली बहुत सी डली रसौत डाल कर इसी तरह कड़वी बनाई जहां बच्चा खेलता चुपके से उसके सामने एक डली डाल देती बच्चे का मुंह खाते ही जलता या कड़वी लगती पस बच्चे ने मिट्टी का खाना छोड़ दिया ॥

(१८) जहर संखिया मीठा तेलिया रसकपूर दालचिकना विषफल धतूरा अफीम कुचला असटिकनिया वगैरा वस्तु जिन के खाने से आदमी मरजावे वह सब जहर में शामिल हैं इन को बतौर जहर के मरने को खाना उस का नाम जहर अभक्ष्य है जो जहर दवाई में जिंदगी बचाने को दिये जाते हैं, जैसे दस्त बंद करने को अफीम खांसी गठिया दूर करने को धतूरा के बीजों की गोली जुलाब में जमाल गोटे का जुलाब खून साफ करने को संखिया दिल को ताकत देनेको स्टिकनिया दरद रफै करने को कुचले वाली गोली आदि दवा दी जाती हैं यह जहरमें शामिल नहीं अभक्ष्य

के माइने हो खाने योग्य नही अपनी जान बचाने को बीमारी दूर करने को दवा खाना अभक्ष्य नही जहर दवा भी है दवा का खाना अभक्ष्य नहीं एक वस्तु में अनेक गुण होते हैं सारे हेय(त्याज्य)नही होते जिसे कबज हो उस के वास्ते अफीम का खाना जहर है जिसे दस्त लग रहे हों उसके वास्ते अफीम का खाना अमृत है सो जहर खाने के काबिल नहीं दवा खाने के काबिल है ॥

(१९) तुच्छ फल—तुच्छ फल नाम जरा से जामते फल (निहर) का है, यह अभक्ष्य इस वास्ते है कि अनेक फल ऐसे हैं जो छोटे जहरीले होते हैं सिरफ बड़े हो कर खाने योग्य होते हैं अगर उन छोटों को खावेतो खाने वाला सख्त विमार होजाता है ऐसे अनेक फलों का हाल यूनानी हिकमत की किताबोंमें लिखा है,मिठ्ठा कद्दू जिसको कौला या हलवाकद्दू बाज मुलकों में पेठा या कांसी फल भी कहते हैं यह बहुत छोटा निहर कच्चा नही खाना विमारी करता है बहुत छोटा जरासा ही अलसी का फल भी विमारी करता है एसे अनेक फल हैं इस वास्ते तुच्छ फलको अभक्ष्य कहाहै,परन्तु यहां इतनी बात और समझ लेनीकि जो फल बड़े होकर खाने काबिल नहीं रहते जैसे गुवारे की फली लोबियेकी फलीभिंडी घियातोरी टींडे यह छोटे कच्चे खाना तुच्छमें शामिल नहीं यह छोटे ही भक्ष्य है बड़े होकर अभक्ष्य यानी खाने काबिल नही रहते ॥

(२०) तुषार नाम बरफ का है जो आसमानसे गिरती है वह अभक्ष्य है वह जहरीली है और उसमें अनेक जीव त्रस कायके दब कर मरजाते हैं इस वास्तेवह अभक्ष्य है परन्तु यहां इतनी बात औरसमझनीकि कलकी बरफ जहरीली नहीं होती है न इसमें त्रस जीव गिर कर मरते हैं इस वास्ते यह अभक्ष्य नही,छोटे ग्रन्थोंमें सिरफ नाम होते हैं इनकी तशरीह बड़े ग्रन्थों में होती है कि यह अभक्ष्य यानो खाने योग्य क्यों नहीं॥

(२१) चलित रस मोसम गरमी में जिस भोजन पर फूही (ऊलण) आजावे बदबू कर जावे सड़जावे उस का जायका बदल जावे यह सब चलित रसमें हैं जैसे बूसी हुई रोटी तरकारी फूही आई हुई दही सड़ा गला फल इनके खानेसे अनेक बीमारी होती हैं इनमें अनन्ता अनन्त सूक्ष्म जीव(जिरम)पैदा होजाते हैं ऐसी सब वस्तु अभक्ष्य हैं॥

नोट—जो चीजां खमीर उठाकर बनाई जाती हैं जैसे मैदे को घोल कर खमीर उठा कर जलेबी बनाते हैं, पीठी को कई दिन तक रख कर खमीर उठाकर खट्टी कर उस की उड़दी बनाते हैं। वेर सड़ा कर उसका खमीर उठाकर खमीरा तमाखू बनाते है। इत्यादिक वस्तु भी चलित रस में है॥

(२२) मक्खन दही से या दूध से निकल कर अलहदे कर के खाना अभक्ष्य है दही में मिला हुआ जैसे दही का अधरिड़का पीना यह अभक्ष्य नही है॥ इति

अथ कुछ जैन धर्म के शब्दों का मतलब।

अब हम बालकों को कुछ जैन धर्म के शब्दों का मतलब समझाते हैं क्योंकि अनेक जैनी ऐसे हैं, अपने धर्म में हररोज बोलने में आने वाले जो अनेक शब्द न तो उन का मतलब वह आप समझते हैं और यदि कोई अन्य मती उन से उन का मतलब (अर्थ) पूछे न उस को बता सकते हैं इस लिये हम बच्चों को यहां समझाते हैं, कि हे बालको यदि तुमसे कोई यह पूछे कि तुम कौन हो तो तुम अग्रवाल, पल्लीवाल, खंडेलवाल, बाकलीवाल, लमेचू, हुमड़ सोनी आदि अपनी जाति या गांव का नाम मत लो, सिरफ कहो जैनी॥

जैनी किसको कहते हैं।

जो जैन धर्म को पाले (माने)

जैन धर्म किस को कहते हैं।

जिन का उपदेशा जो धर्म वह जैन धर्म कहलाता है॥

जिन किस को कहते हैं।

जो कर्म शत्रु को जीते।

श्रावगी और जैनी में क्या फरक है।

एक ही बात है चाहे श्रावक कहो चाहे जैनी।

श्रावक शब्द का क्या मतलब।

सर्व का ज्ञाता सर्व का जानने वाला जो सर्वज्ञ उसके मानने वाला उस के धर्म में प्रवर्त्त करने वाला सो श्रावक कहलाता है।

जैनियों में कितने फिरके (थोक) हैं।

जैनियों में बड़े थोक दो हैं एक दिगाम्बरी दूसरे श्वेताम्बरी।

श्वेताम्बरी किन को कहते हैं।

श्वेत नाम है सुफैद का, अम्बर नाम है कपड़े का, सो सुफैद कपड़े वाले इस का अर्थ है अर्थात् उन के साधु श्वेत वस्त्र रखते हैं, सुरख, पैला, वगैरा रंगदार नहीं रखते उन श्वेताम्बर साधुवों के मानने वाले श्वेताम्बरी कहलाते हैं।

दिगम्बरी किनको कहते हैं।

इस के दो अर्थ हैं अनेक जैनी तो इस का अर्थ इस प्रकार करते हैं कि दिग

दिशा को कहते हैं अम्बर नाम है कपड़े का, अर्थात् दिशा ही हैं कपड़े जिस के यानि जिस के पास कोई कपड़ा नहीं विलकुल नग्न हो उस को दिगम्बर कहते हैं ॥

परन्तु बाबू ज्ञानचंद जैनी लाहौर निवासी इस का अर्थ इस प्रकार करते हैं कि *दिग (side) (तरफ) को कहते हैं अंबर नाम है आसमान का अर्थात हर तरफ यानि* चारों तरफ है आसमान जिन के भावार्थ सिवाय आसमान के और उन के बदन के हर तरफ कपड़ा जेवर, घास, कुसा, शृङ्गार, पड़दा, मकान, (गृह) वगैरा कुछ भी नहीं यानि जो गृह त्यागी जंगलों, बियावान, बनों में खुली जगह में बसने वाले बिलकुल नग्न हों उन को दिगम्बर कहते हैं सो दिगम्बर साधुवों के मानने वाले दिगम्बरी कहलाते हैं ॥

श्वेतांबरियों में कितने थोक हैं ॥

श्वेतांबरियों में दो थोक हैं एक साधु पन्थी उन को थानक पन्थी या ढूंढिये भी कहते हैं वह साधुओंको मानते हैं मंदिर प्रतिमा को नहीं मानते हैं दूसरे पुजेरे (मंदिरमार्गी) कहलाते हैं यह मंदिर प्रतिमा को भी मानते हैं साधुओं को भी मानते हैं, ढूंडियों के शास्त्र साधु अलग हैं पुजेरों के शास्त्र साधु अलग हैं ।

ढूंढिये किस को कहते हैं ।

जो ढूंढे तलाश करे कि मैं क्या वस्तु हूं मेरा क्या स्वरूप है मेरा इस संसार म क्या कर्तव्य है मेरी नजात किस तरह होगी ईश्वर का क्या रूप है उस का ध्यान कैसे करूं जो इस प्रकार की अपनी नजात (मुक्ति) की बातों को ढूंढे तलाश करे उसे ढूंढिया कहते हैं ॥

पुजेरे किस को कहते हैं ।

जो प्रतिबिम्ब को पूजे वह पूजेरे कहलाते हैं चूंकि ढूंढिये प्रतिमा को न मानते न पूजते इसवास्ते ढूंढियों के बर खिलाफ प्रतिमा को पूजने वाले जो दूसरे थोक वाले हैं वह पूजेरे कहलाते हैं ।

भावड़े किन को कहते हैं ।

पंजाब में श्वेतांम्बरी जैनियों को भावड़े कहते हैं ॥

भावड़े का क्या मतलब ?

पहले पंजाब में जैनी नहीं थे जब राजपूताने में जैनियों पर सखती हुई तब वहां से जहां तहां चले गये कुछ पंजाब में भी आकर बसे सो पहले जमाने के जैनी

बड़े धर्मात्मा थे हररोज अपना नित्य नियम करना भगवान का पूजन करना जीव दया पालना कीडी भी मरने से बचानी महा दयावान महा क्षमावान महा शांत परणामी सत्य बोलने वाले मांस शराब वगैरा अभक्ष्य के त्यागी छल छिद्र न करने वाले थे जब पंजाब के आदमियों ने इन का ऐसा चलन देखा पंजाब के आदमी बड़े सीधे थे सब ने यह कहा इन के ईश्वर की भक्ति अपने धर्म नियम में भाव बढे हुये हैं सब यही कहते थे कि इन के भाव बढे हुये हैं सो यह शब्द बिगड कर भावडे बन गया सो यह संसारी जीव धन दौलत कुटंब की मुहबत में उलझे हुये हैं इस से निकल कर जिस के भाव बढ़ जावें तरक्की पाजावें शुद्ध होजाने की यादगार में लग जावें सो भावडे कहलाते हैं॥

दिगम्बरियों में कितने थोक हैं।

दिगम्बरियों में पहले तीन थोक थे अब चार होगये हैं १ तेरह पंथी २ बीस पंथी ३ समैया जैनी ४ शुद्धआम्नाय।

१३ पंथी किस को कहते हैं।

पांच महाव्रत पांच समिति तीन गुप्ति इन तेरह प्रकार के चारित्र पालने वाले जो दिगम्बर महामुनि उनके पैरोकार(माननेवाले) जो श्रावक वह तेरहपंथी कहलाते हैं

बीस पंथी किस को कहते हैं।

बीस पंथी की बाबत सोम प्रभ आचार्य ने ऐसा लिखा है:—भक्तिंतीर्थंकरे गुरौ जिनमते संघे च हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहाद्युपरमं क्रोधाद्यरीणां जयं सौजन्यंगुणि सङ्गमिन्द्रियदमं दानं तपो भावनांवैराग्यं च कुरुष्वनिर्वृतिपदेयद्यस्तिगंतुमनः।

अर्थ—हे भव्य जो मोक्षमार्ग में जाने की इच्छा है तो१तीर्थंकर की भक्ति (पूजन) २ गुरू भक्ति ३ जिनमतभक्ति ४ संघभक्ति इन ४ प्रकार की भक्ति का तो करना और हिंसा अनृत (झूठ) ३ स्तेय (चोरी) ४ अब्रह्म (पर पदार्थ में आत्म बुद्धि) (वा परस्त्री भोगादिक) ५ परिग्रह इन पांचका त्याग ओर १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ इन चार दुशमनों का जीतना सुजनता गुणियों की संगति ३ इन्द्रिय दमन ४ दान ५ तप ६ भावना और ७ वैराग्य यह कार्य कर इन बीस पंथों (रास्तों) पर चल।

यह बीस बातां मानने वाले बीस पंथी कहलाते हैं।

१३ पंथी २० पंथी में क्या फरक॥

तेरह पंथी बीस पंथी दोनों थोकों के शास्त्र तो एक ही हैं दोनों के दिगम्बर

[?]ठ एक ही आचार के धारी दोनों थोक हैं सिरफ आपस के चंद बातों में तनाजे से नाम भेद कर लिया है॥

तनाजा किनबातों का है।

तनाजा सिरफ पूजन वगैरा की विधि में है बीसपंथी श्रावक जब पूजन करते हैं तो १ प्रतिबिम्ब के केसर की टीकी लगाते हैं दूसरे पूजन में सब्ज फल फूल चढ़ाते हैं ३ लड्डू घेवर पकवान वगैरा चढाते हैं ४ रात्रि के समय भी सामग्री चढाकर पूजन करते हैं ५ सांझ को दीपक जलाकर भगवान की आरती करते हैं ६ मंदिर में क्षेत्रपाल भैरव पद्मावती की थडी बनाते हैं और उनपर भीफूल वगैरा चढ़ाते हैं।

१३ पंथी ऐसी ऐसी बातों का निषेध करते हैं इस से १३पंथीऔर बीसपंथियों में द्वेष भाव यहां तक बढा है कि १३ पन्थी बीसपंथियों के मंदिर में दर्शन करने तक भी नही जाते॥

१३ पंथ पहला है या २० पंथ॥

असल में पहले दिगम्बर मत एक ही था संवत् विक्रमी १७७७ में पंडित दौलतराम बसवानिवासी जो आगरमें रहते थे उन की राय से १३ पंथ अलग होगया जिन दौलतराम ने पद बनाये यह दूसरे दौलतराम थे वह इनसे पहले हुये हैं और एक ग्रंथ में यह लिखा है कि पहिले पहल यह भेद संवत १६८३ में आगरे से भट्टारक नरेंद्र कीर्ति आमेर वालो की राय के विरुद्ध हुवा है।

समैया जैनी किन को कहते हैं॥

समैया जैनियों को दूसरे थोक वाले खफा करने को (चिडाकर) ढुंढी पंथी कहते हैं संवत १५०५ में तारन जी का जन्म हुवा है और संवत १५७२ में इन का परलोक हुवा है इन्होंने १४ ग्रथ रचे है समैया जैनी इन ग्रन्थों को मानते हैं इन ग्रंथों में और दिगम्बरियों के बाज ग्रन्थो के लेखो में फरक है॥

चौथा शब्द आम्नाय पंथ कौनसा है।

यह पथ अभी जन्मा तुरत का बालक है अभी गुडलियां नही चला परन्तु उम्मेद है बहुत जल्द तरुण होजावेगा इस का नाम पता हम अभी बताना मुनासिब नहीं समझते

जुहार शब्द का क्या मतलब है।

जैनियों में जो जुहार बोलते हैं, सो जुहार शब्द का मतलब इस प्रकार है।

श्लोक।

जुगादिवृषभोदेवः हारकः सर्वसंकटान्।
रक्षकःसर्वप्राणानां, तस्माज्जुहारउच्यते ॥

अर्थ—जुहार शब्द में तीन अक्षर हैं १ जु २ हा ३ र। सो जु से मुराद है जुग के आदि में भए जो श्रीदेवाधिदेव ऋषभदेव भगवान और,हा, से सर्व संकटों के हरने वाले और र से कुल प्राणियों की रक्षा करने वाले उन के अर्थ नमस्कार हो। अर्थात् जब कभी अपने से बड़े या बराबर केसे मिलें तो मुलाकात के समय 'जुहार कहने से यह मतलब है कि श्रीऋषभदेव जो इन गुणों कर के भूषित हैं उन को हमारा और तुम्हारा दोनों का नमस्कार हो। और वह कल्याण करता परमपूज्य हमारा और तुम्हारा दोनों का कल्याण करें। और दूसरे का अदब करना मस्तक नवा कर उस को ताजीम करना यह इस का लौकिक मतलब है ॥

पांच प्रकार का शरीर।

१—औदारिक २ वैक्रियिक ३ आहारक ४ तैजस ५ कार्माण।

औदारिक—उदारकार्य (मोक्षकार्य) को सिद्ध करै यातें इस को औदारिक कहिये तथा उदार कहिये 'स्थूल है याते औदारिक कहिये यह शरीर मनुष्य और तिर्यंचों के होता है ॥

वैक्रियिक—अनेक तरह की विक्रिया करे आकृति बदल लेवे जो चाहे बन जावे भीत्ति पर्वत आदि में पार हो जा सके उस को वैक्रियिक कहते हैं यह देव और नारकियों के होता है ॥

आहारक—यह शरीर छठे गुण स्थान वर्ती महामुनीश्वरों के होय जब पद वा पदार्थ में मुनि के संदेह उपजे तब दशमाद्वार (मस्तक) से २४ व्यवहारांगुल से १ हाथ परिमाण वाला चन्द्रमा की किरणवत् उज्ज्वल होय सो केवली के चरण कमल परसि आवे तब तमाम शक रफा होजांय ॥

तैजस—तैजस शरीर दो प्रकार है एक तो शुभ तैजस और दूसरा अशुभ तैजस शुभ तैजस तो शुद्ध सम्यग्दृष्टि जीव के होय है किसी देश में जब पीड़ा उपजे तथा दुःख उपजे उस समय दाहिनी भुजा से शुभ तैजस प्रकट होय और उस पीड़ा को दूर करे और अशुभ तैजस मिथ्यादृष्टि जीव के कषाय के उदय से प्रकट होता है

और बारह योजन प्रमाण सब देश देशान्तर को भस्म करके स्व आधार भूत पर्याय को भस्म करता है प्रसिद्ध दृष्टान्त द्वीपायन मुनि ॥

कार्माण—कार्माण शरीर उस को कहते हैं अष्ट कर्म संयुक्त हो यह निखालिस अनाहारक अवस्था में रहता है और सर्व जीवों के होता है ॥

चार कथा ।

आक्षेपिणी—आक्षेपणी कथा उस को कहते हैं जो जिनमत में श्रद्धा बढ़ावे यह साधर्मी पुरुषों के समीप करनी चाहिये ॥

२ विक्षेपिणी—विक्षेपिणी कथा उस को कहते हैं जो पाप पंथ (कुमार्ग) का खंडन करे परवादियों के साथ करनी चाहिये ॥

३ संवेगिनी—संवेगिनी कथा उस को कहते हैं जो धर्म में अनुराग (प्रीति) बढावे या धर्म रुचि बढावने वास्ते करे—

४ निर्वेदिनी—निर्वेदिनी कथा उस को कहते हैं जो वैराग्य उपजावे इस कथा को विरक्त पुरुषों के निकट वैराग्य बढायवावास्ते करे—

६ प्रकार के पुद्गल (अजीव) ॥

तीन प्रकारका जो दीख सके और तीन प्रकारका जो दीख नहीं सकता ॥

३ प्रकारका दीखने वाला पुद्गल ।

१ स्थूल स्थूल, पत्थर लकड़ी वगैरा जो टूटकर फिर जुड न सके ।

२ स्थूल स्वर्ण चांदी जल दुग्ध वगैरा जो अलग होकर फिर मिल सके ॥

३ स्थूल सूक्ष्म जो नजर तो आवे पर हाथ से पकड़ा नहीं जासके जैसे छाया धूप रोशनी वगैरा ॥

तीन प्रकार का न दीखने वाला पुद्गल ।

१ सूक्ष्म स्थूल खुशबू बदबू आवाज वगैरा ॥

२ सूक्ष्म कर्म वर्गणा ।

३ सूक्ष्म सूक्ष्म परमाणु ॥

जैन नामावली का संशोधन।

विदित हो कि २४ तीर्थंकर १२ चक्रवर्ती ९ नारायण ९ प्रतिनारायण ९ बलभद्र २४ काम देव आदि बाज २ नाम जैन प्रथम पुस्तक में एक प्रकार लिखे हैं जैनधर्मामृतसार में दूसरे प्रकार लिखे हैं भूधर जैनशतक में कुछ लिखा है जैन सुधा सागर में कुछ लिखा है ६३ शलाका पुरुषों की किताब में कुछ और लिखा है हस्त लिखित भाषा ग्रन्थों व पुस्तकों में कुछ और ही दर्ज है इस लिये हमने बडे २ संस्कृत वा प्राकृत के ग्रन्थों की सहायता से सब गलतियां दूर करके यह जैन नामावली इस पुस्तक में शुद्ध लिखी है संस्कृत और प्राकृत ग्रन्थों में लेख इस प्रकार हैं॥

संस्कृत और प्राकृत ग्रन्थों के लेख।

एतस्यामवसर्पिण्यामृषभोऽजितसंभवौ अभिनन्दनः सुमतिस्ततः पद्मप्रभाभिधः।सुपार्श्वश्चन्द्रप्रभश्चसुविधिश्चाथशीतलः।श्रेयांसोवासुपूज्यश्च विमलोऽनन्ततीर्थकृत् धर्मःशान्तिः कुन्थुररो मल्लिश्च मुनिसुव्रतः नमिर्नेमिः पार्श्वो वीरश्चतुर्विंशतिरर्हताम्।ऋषभो वृषभः श्रेयान् श्रेयांसः स्यादनन्तजिदऽनन्तः सुविधिस्तु पुष्पदन्तो मुनिसुव्रत सुव्रतौ तुल्यौ। अरिष्टनेमिस्तु नेमिर्वीरश्चरमतीर्थकृत्। महावीरोवर्द्धमानो देवार्य्योज्ञातनन्दनः॥

आर्षभिर्भरतस्तत्र सगरस्तु सुमित्रभूः मघवा वैजयिरथाश्वसेनो नृपनन्दनः। सनत्कुमारोथ शान्तिः कुन्थुररो जिनाअपि सुभूमस्तु कार्त्तवीर्यः पद्मः पद्मोत्तरात्मजः हरिषेणो हरिसुतो जयो विजयनन्दनः ब्रह्मसूनुर्ब्रह्मदत्तः सर्वेपीक्ष्वाकुवंशजाः।

प्राजपत्यस्त्रिपृष्ठोथ द्विपृष्ठो ब्रह्मसम्भवः स्वयम्भू रुद्रतनयः सोमभूः पुरुषोत्तमः। शैवः पुरुषसिंहोथ महाशिरस्समुद्भवः स्यात्पुरुषपुण्डरीको दत्तोग्निसिंहनन्दनः नारायणो दाशरथिः कृष्णस्तु वसुदेवभूः वासुदेवा अमी कृष्णा नव शुक्लावलास्त्वमी। अचलो विजयो भद्रः सुप्रभश्च सुदर्शनः आनन्दो नन्दनः पद्मो रामो विष्णु द्विषस्त्वमी। अश्वग्रीवस्तारकश्चमेरकोमधुरेवच निशुम्भ बलिप्रल्हाद लंकेशमगधेश्वराः। जिनैः सह त्रिषष्ठिः स्युः शलाका पुरुषा अमी॥

अह भणइ जिणवरिंदोजारिसओतंनरिंदसदुलो। एरिसया एक्कारस अन्ने हो हिंति रायाणो। होहि अगरोमघवं सणंकुमारोय रायसदुलो। सन्तीकुन्थुअ अरहधरसभूमोय कोरव्वो नवमो यमहाप उमोह रिसेणो चेव राय सददूलो जय नामोय नरवई बार समोयंभदतोय। होहिवतिासुदेवानव अन्ने नील पीयको सेज्जा। हलमुस

लवक्क जोहीसताल रुल्दया दो दो॥ तिविट्ठय दुविट्ठय सयंभु पुरि सोत्तमे पुरि ससिहे। तह पुरिस पुण्डरीएदत्तेनारायणेकयहे अयले विजये भद्दे सुप्पभेय सुदंसणे आणदे नंदणे पउमे रामे याविअपच्छिमे॥ आसग्गीवे तारए मेरए महुकेढवेनिसुमेय वलि पल्हाए तह रावणोय नवमे जरासिंधू।

उत्सर्पिण्यामतीतायां चतुर्विंशतिरर्हताम्। केवल ज्ञानी निर्वाणो सागरोऽथ महायशाः। विमलः सर्वानुभूतिः श्रीधरो दत्ततीर्थ कृत। दामोदरः सुतेजाश्च स्वाम्यऽथोमुनि सुव्रतः सुमतिः शिवगतिश्चैवाऽथनिमीश्वरःअनिलो यशोधराख्यः कृतार्थोऽथ जिनेश्वरः शुद्धमतिः शिवकरः स्यंदनश्चाऽथ सम्प्रतिः।माविन्यान्तु पद्मनाभः शूरदेवः सुपार्श्वकःस्वयंप्रभश्चसर्वानुभूतिर्देवश्रुतोदयौपेढालः पोट्टिलश्चापिशतकीर्तिश्च सुव्रतः। अममोनिष्कषायश्चनिष्पुलाकोऽथनिर्ममः। चित्रगुप्तःसमाधिश्चसंवरश्चयशोधरः विजयोमल्ल देवश्चा ऽनन्तवीर्यश्च भद्रकृत्। एवंसर्वावसर्प्पिण्युत्सर्प्पिणीषुजिनोत्तमाः॥

अंगरेजी अक्षर जाने बिना तकलीफ और हरजा।

हम ने इस जैनबाल गुटके में अंगरेजी अक्षर और साथ में थोड़े से अंगरेजी शब्द भी रोज मर्रह काम में आने वाले इस खियाल से लिख दिये हैं कि इस समय अंगरेजी अक्षर जाने बिना, रेल के सफर में अपने टिकट पर किराया व मुकाम न पढ़ सकने से अनेक वार मुसाफरों को तकलीफ उठानी पड़ती है बाज वक्त धोके से किराया जियादा दिया जाता है और ठग थोड़े फासले का टिकट देकर बड़े फासिले का टिकट चालाकी से बदल लेते हैं और खास कर जिनके यहां तार आने जाने का काम होताहै उनको तो अंगरेजी अक्षर जानने अजहद् जरूरीहै ताकि अपना तार आप पढ़ लेनेसे अपने तार का गुप्त मतलब दूसरों पर प्रकाशित होनेसे बच सके सो जैन पाठशालाओं में बच्चों को यह अंगरेजी अक्षर और शब्द जरूर सीख लेने चाहियें।

अंगरेजी वर्ण माला॥

अंगरेजी वर्ण माला के २६ अक्षर दो प्रकार के होते हैं जो अक्षर पुस्तकादि में छपते हैं वह और हैं जो लिखने में आते हैं वह दूसरे हैं और इन में भी बड़े छोटे अक्षर दो प्रकार के होते है जब कभी किसी इनसान तथा स्थान का नाम कोई कथन या नया पैरा लिखना शुरू करते हैं तो उस के प्रथम शब्द का प्रथम अक्षर बड़ी वर्णमाला का लिख कर फिर सारे अक्षर सवें शब्दों के छोटी वर्णमाला से ही लिखते हैं सो बालकों को लेख लिखने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये

अथ अंगरेजी के अक्षर

अंगरेजी की बड़ी वर्णमाला के अक्षर	अंगरेजी की छोटी वर्णमाला के अक्षर	अक्षर का नाम	अक्षरकी आवाज किस अक्षरमें लिखा जाताहै
A A	*a* a	ए	अ, आ, ए
B B	*b* b	बी	ब
C C	*c* c	सी	क, स
D D	*d* d	डी	ड
E E	*e* e	ई	ई, ए, अ,
F F	*f* f	एफ्	फ
G G	*g* g	जी	ग, ज
H H	*h* h	एच्	ह
I I	*i* i	आई	इ, आई
J J	*j* j	जे	ज
K K	*k* k	के	क
L L	*l* l	ऐल्	ल
M M	*m* m	ऐम्	म
N N	*n* n	ऐन्	न
O O	*o* o	ओ	ओ, औ
P P	*p* p	पी	प
Q Q	*q* q	क्यौ	क
R R	*r* r	आर्	र
S S	*s* s	ऐस्	स
T T	*t* t	टी	ट
U U	*u* u	यू	यू, उ, अ
V V	*v* v	वी	व
W W	*w* w	डब्ल्	व
X X	*x* x	ऐक्स्	क्स
Y Y	*y* y	वाई	य, आइ
Z Z	*z* z	ज़ैड्	ज़

कालम में पहले लिखाई, दूसरे छपाई के अक्षर हैं।

अंग्रेजी में निम्न लिखित अक्षर नहीं होते।

ख, घ, च, छ, झ, ठ, ढ, त, थ, ध, भ।

अंग्रेजी के २६ अक्षर होते हैं बाकी अक्षर उनही से कहीं दो का कहीं तीन का संबन्ध करने से लिखे जाते हैं। सो ऊपरले अक्षर इन अक्षरों से लिखे जाते हैं॥

ख Kh, घ Gh, च Ch, छ Chh, झ Jh; ठ Th, त T, ढ, Dh, थ Th, द D, ध Dh, भ Bh, से लिखते हैं।

अंग्रेजी के अधोलिखित अक्षर इन अक्षरों की जगह लिखे जाते हैं।

a (अ) तथा (आ) की जगह लिखी जाती है कहीं (ए) की जगह भी लिखी जाती है॥

c (क) की जगह लिखी जाती है कहीं (स) की जगह भी लिखी जाती है॥

e (ई) की जगह लिखी जाती है कहीं (ए) (अ) की जगह भी लिखी जाती है॥

h (ह) की जगह लिखा जाता है॥

i (इ) की जगह लिखी जातीहै, कहीं (आइ) की जगह भी लिखी जाती है॥

s (स) की जगह लिखा जाता है कहीं ज़ (ज़) की आवाज भी देता है॥

u (उ) की जगह लिखा जाता है कहीं (ऊ) (अ) की जगह भी लिखा जाता है॥

w (व) की जगह लिखा जाता है॥

y (य) की जगह लिखी जाती है कहीं (आई) की जगह भी लिखी जाती है॥

z (ज़) (ज़) की जगह लिखा जाता है॥

महाजनोंकी तजारतके तारोंमें रोज मर्रह वरतावमें आनेवाले अक्षर।

Sell	सैल	बेचना तथा बेचो।
Sold	सोल्ड	बेचा तथा बेचदी।
Buy	बाई	खरीदना तथा खरीदो।
Bought	बौट	खरीदा तथा खरीदी।
Purchase	परचेज़	खरीदना तथा खरीदो।
Purchased	परचेज़्ड	खरीदा तथा खरीदी।
Purchaser	परचेज़र	खरीदार (खरीदने वाला)
Seller	सैलर	बेचने वाला।
Bag	बैग	बोरी (एक बोरी के वास्ते है)।

Bags	बैगस्	बोरियां (एकसे जियादा बोरीयोंके वास्ते लिखाजाताहै
S	ऐस्	अंगरेजी में s अक्षर किसी शब्द के साथ जोड़ देने से वाहद से जमा बन जाता है अर्थात् एक वचन से बहु वचन बन जाता है।
Ton	टन	टन
Tons	टन्स्	एक से जियादा टन के वास्ते लिखा जाता है।
Bale	बेल	गांठ तथा गठरी।
Bales	बेल्स्	एक से जिया बेलके वास्ते लिखा जाता है।
Chest	चैस्ट	पेटी संदूक।
Box	बौक्स	संदूक
Boxes	बोक्सिज्	एक से जियादा संदूकों के वास्ते लिखा जाता है।
Thela	थेला	अफीम के थेले को लिखते हैं।
Thelas	थेलास्	एक से जियादा थेलों के वास्ते लिखते हैं।
Hundred weight	हंड्रेड् वेट	११२ पौंड का होता है जो बराबर ५४ सेर १० छटांक के होता है।
Rate	रेट	निरख।
Monds	मौंडस्	मन।
Silver brick	सिल्वर ब्रिक	चांदी की ईंट को कहते हैं।
Golden bar	गोल्डन् बार	सोने के पासे को कहते हैं यह वजन में २१ तोले ८ मासे का होता है अर्थात् १ सेर के ३ पासे चढ़ते हैं।
Opium chest	ओपीयम चेस्ट	(अफीम की पेटी को कहते हैं)।
Guinee	गिनी	आठ मासे सोने की होती हैं विलायत में इसे पौंड बोलाते हैं।
Shilling	शिलिंग्	पौंड का बीसवां हिस्सा विलायत में चलता है।
Penny	पैनी	यह भी विलायत में चलता है १२ पैनी का एक शिलिंग होता है।
Farthing	फारदिंग	यह भी विलायते में चलता है ४ फारदिंग एक पैनी में चलता हैं अर्थात् पैनी का चौथा हिस्सा है।
Pence	पैंस्	बहुत से अर्थात् एक से जियादा पैनी के वास्ते लिखा जाता है।

Rupee	रूपी	रुपये को कहते हैं।
Rupees	रूपीज्	एक से जियादा रुपयों को कहते हैं।
Tola	टोला	अंगरेजी तोला अंगरेजी रुपये भर का होता है।
Ton	टन्न	20 हंड्रेड वेटका एक टन होता है जो सताईस मन आठ सेर तेरह छंटाक के बराबर होता है।
Cotton	कौटन	कौटन (काटन) रूई।
Wheat	व्हीट	गेहूं।
Gram	ग्राम	चने।
Poppyseed	पौपीसीड	दाना (खशखास)।
Opium	ओपियम	अफीम।
Gold	गोल्ड	सोना।
Silver	सिलवर	चांदी।
Copper	कौपर	तांवा।
Silk	सिल्क	रेशम।
Cloth	क्लौथ	कपड़ा।
Wool	ऊल	ऊन।
Power	पावर	ताकत।
Note	नोट	नोट।
Loss	लौस	नुकसान।
Profit	प्रोफिट	फायदा (मुनाफा)।
Pay	पे	तनखा (पगार)।
Dont	डोण्ट	नहीं करो (मत)।
Not	नोट	नहीं।
Yes	यस	हां।
Are	आर	हैं।
Or	और	या।
And	ऐंड	और।
Reply	रिपलाई	जवाब तथा जवाब दो।
Replied	रिपलाइड	जवाब दिया गया।
Send	सैंड	भेजना तथा भेजो।

Sent	सैंट	भेजा तथा भेजदिया।
Receive	रिसीव	पाना, हासिल करना तथा हासिल करो।
Received	रिसीवड	पाया हासिल किया मिलगया।
Get	गैट	लो, पाओ, हासिल करो।
Got	गॉट	पाया तथा पाई, हासिल करी।
But	बट	सिरफ, परंतु।
Because	विकाज्	क्योंकि।
Other	अद्र	दूसरा तथा दूसरी।
Last	लास्ट	आखीरी।
Lost	लॉस्ट	खोई गई।
Make	मेक	बनाना। करना।
Enquiry	इनक्वायरी	तलाश। दरयाफ्त।
Enquire	इनक्वायर	दरयाफ्तकरो। तहकीकात करो।
May	मे	मेरा तथा मेरी।
Your	यूअर	तुम्हारा तथा तुम्हारी।
Our	अवर	हमारा।
I	आई	मैं।
We	वी	हम।
You	यू	तुम।
Thou	दाउ	तू।
Thine	दाइन्	तेरा।
Mine	माइन	मेरा।
His	हिज्	उसका।
He	ही	वोह।
She	शी	वह स्त्री।
Her	हर	उस स्त्री का।
Merchant	मर्चैंट	सौदागर।
Merchandise	मरचैन्डाइज्	(तजारत सौदगरी)।
Trade	ट्रेड	तजारत।
Business	बिज़िनस्	कारोबार व्योपार।

Telegraph	टैलीग्राफ तार के जिरिये खबरी भेजना।
Office	औफिस दफतर।
Telegraph Office	(टेलीग्राफ औफिस) तार घर।
Wire	वायर तार।
Telegram	टैलीग्राम तार खबर।
Post	पोस्ट डाक।
Man	मैन आदमी।
Post man	पोस्ट मैन चिट्टीरसां।
Master	मास्टर अफसर।
Post Master	(पोस्ट मास्टर) डाक खाने का अफसर (डाक बाबू)।
Letter	लैटर चिट्ठी।
Card	कार्ड कार्ड।
Envelope	इनवीलोप लफाफा।
Registration	रजिस्ट्रेशन रजीस्टरी।
Packet	पैकट पैकट।
Insurance	इनश्यूरैंस बीमा।
Insure	इनश्यू बीमाकराना।
Insured	इनश्यूर्ड बीमाकराया।
Money order	(मनीआर्डर) मनीआर्डर।
Seal	सील मोहर तथा मोहर लगाना।
Sealed	सील्ड मोहर लगादी।
Despatch	डिसपैच रवाना करना।
Despatched	डिसपैच्ड रवाना किया।
Deliver	डिलिवर बांटना तकसीम करना।
Delivered	डिलिवर्ड बांटी तकसीम की।
Delivery office	(डिलिवरी औफिस) चिट्ठी तकसीम करने का दफतर।
Stamp	स्टैम्प डाक टिकट तथा तमसुक बैनामे वगैरा का सरकारी मोहर वाला कागज़।
Railway	रेलवे रेल।
Line	लाइन लाईन।

Railway line रेलवेलाइन रेलकी सड़क।
Waggon वैगन माल लादने की रेल की गाडी।
Truck ट्रक माल लादने का रेलका छकडा।
Carriage कैरिज मुसाफर सवार होने की रेल की गाडी।
Station स्टेशन रेल के ठहरने का स्थान।
Platform प्लेटफारम स्टेशन का चबूतरा।
Room रूम कमरा।
Waiting room वेटिंगरूम (स्टेश्न पर ठहने का कमरा)।
Ticket टिकट टिकट।
Parcel पारसल पारसल।
Basket बासकट टोकरी।
Bundle बंडल बंडल गट्ठा (गठडी)।
Receipt रिसीट बिलटी (रसीद)
Invoice इनवायस तफसील वार कागज (चालान)।
Number नम्बर नम्बर (गिनती)।
Booking office बुकिंग औफिस (टिकट घर)।
Fare फेयर किराया।
Railway fare रेलवेफेयर (रेल का किराया)।
Class क्लास दरजा।
Goods गुड्स माल।
Goods office गुड्स औफिस (माल गुदाम)।
Arrive अराइव पहुंचना।
Arrived अराईव्ड पहुंचो।

1 One	वन	एक	6 Six	सिक्स	छै
2 Two	टू	दो	7 Seven	सैवन	सात
3 Three	थ्री	तीन	8 Eight	एट	आठ
4 Four	फोर	चार	9 Nine	नाइन	नौ
5 Five	फाइव	पांच	10 Ten	टैन	दस

11 Eleven	इलैवन	ग्यारह
12 Twelve	ट्वैल्व	बारह
13 Thirteen	थरटीन	तेरह
14 Fourteen	फोरटीन	चोदह
15 Fifteen	फिफ़टीन	पन्द्रह
16 Sixteen	सिक्सटीन	सोलह
17 Seventeen	सैवनटीन	सतरह
18 Eighteen	एट्टीन	अठारह
19 Nineteen	नाईनटीन	उन्नीस
20 Twenty	ट्वैनटी	बीस
21 Twenty one	ट्वैनटी वन	इकीस
22 Twenty two	ट्वैनटी टू	बाईस

(इसी तरह आगे गिनो)

30 Thirty	थर्टी	तीस
31 Thirty one	थर्टी वन	इकतीस

(इसी तरह आगे गिनो)

40 Forty	फार्टी	चालीस
50 Fifty	फिफ़टी	पचास
60 Sixty	सिक्सटी	साठ
70 Seventy	सैवनटी	सत्तर
80 Eighty	एट्टी	अस्सी
90 Ninety	नाइनटी	नव्वे
100 Hundred	हंड्रेड	सौ
200 Two Hundreds	टू हंड्रेडज़	दोसौ
1000 Thousand	थौजेंड	हज़ार
2000 Two Thousands	टू थौजेंडज़	दो हजार
100000 Hundred Thousands.	हंडरेड थौजेंड	लाख

Sell 100 Bales cotton बेचो १०० गांठ रूई की।

Sold 100 Bales cotton बेचदी १०० गांठ रूई की।

Buy 100 Bag wheat. खरीदो १०० बोरी गेहूं।

Bought 100 Bags wheat खरीदली १०० बोरी गेहूं।

Sell 50 Tons Sarson rate 6/4 per hundered weight बेचो ५० टन सरसो निरख ६।)

Purchase 5 petty opium खरीदो ५ पेटी अफीम।

Dont sell my wheat मत बेचो मेरा गेहूं।

Arrived 5 Bags lost 1, make enquiry पहुंचीं ५ बोरी खोई गई एक तलाश करो।

Send 2 Bales Lattha Cloth भेजो २ गांठ लट्ठे कपड़े की।

You have no power to sell my wheat तुम को मेरा गेहूं बेचने का कुछ अखतियार नहीं।

Got 5 Thousands profit in cotton रूई में ५ हजार का मुनाफा हुवा।

इति

अंगरेजी १२ मास (मंथस्) (Months) के नाम।

January	जनवरी ३१ दिन का होता है।
February	फरवरी २८ दिन का होता है चौथे साल २९ दिनका होता है
March	मार्च ३१ दिन का होता है।
April	एप्रल ३० दिन का होता है।
May	मे ३१ दिन का होता है।
June	जून ३० दिन का होता है।
July	जुलाई ३१ दिन का होता है।
August	अगस्त ३१ दिन का होता है।
September	सैपटम्बर ३० दिन का होता है।
October	औकटूबर ३१ दिन का होता है।
November	नोवम्बर ३० दिन का होता है।
December	डिसम्बर ३१ दिन का होता है।

नोट—जो अंगरेजी सन् चार पर वंट सके उस साल में फरवरी २९ दिन का होता है बाकी सालों में २८ दिन का होता है।

अंगरेजी वक्त Time टाइम की गिणती।

६० सैकिंड (second) का १ मिनट (minute)।

६० मिनट का १ घंटा (hour)(अवर)।

२४ घंटे का १ दिन (day) (डे)।

७ दिनका १ हफ्ता (week) (वीक)।

५२ हफ्ते तथा १२ मास तथा ३६५ दिन का १ साल (year) ईयर होता है॥

जब फरवरी २९ दिन का हो तब साल ३६६ दिनका होता है॥

३६६ दिन के साल को (leap year) लीप ईयर कहते हैं॥

नोट—एक सैकिंड इतनी देरी का नाम है जितनी देर में मुंह से एक कहे एक मिनट उतनी देरीका नाम है जितनी देरी में सहज से ६० गिने २४ सैकिंड की १पल और २४ मिनटकी एक घड़ी होती है जितनी देरमें २४ गिने उस कानाम १ पल है॥

१२ इंच (inches) का १ फुट (foot)।
३ फीट का १ गज (yard) यार्ड।
२२० गज का १ फरलांग (furlong)।
८ फरलांग तथा १७६० गज का १ मील।

---

१४४ मुरब्बे इंचका १ मुरब्बा फुट।
९ मुरब्बे फुटका १ मुरब्बा गज।
४८४० मुरब्बे गजका एक एकड़।
६४० एकड़ का १ मुरब्बे मील।

---

१०० लिंक की तथा २२ गजकी की १ जंजीर (chain)।
१० मुरब्बे जंजीर का तथा ४८४० मुरब्बे गजका १ एकड़।

---

२५ मुरब्बे गज तथा २२५ मुरब्बे फुटका १ मरला।
२० मरले तथा ५०० मुरब्बे गजका १ कनाल।
४ कनाल तथा २००० मुरब्बे गज का १ बीघा।
१ बीघे में ५० गज लंबी ४० गज चौडी जमीन होती है।

१७२८ क्युबिक इंच का १ क्युबिक फुट।
२७ क्युबिक फुट का १ क्युबिक गज।

एक मुरब्बे जमीन का हिसाब॥

११०० फीट लंबा ११०० फीट चोडा कित्ता जमीनको एक मुरब्बा कहते हैं, जो अन्दाजन २५॥ साढ़े पच्चीस कनाल तथा ६७। सवा सड़सठ बीघे जमीनका होता है॥

अंग्रेजी वजन का हिसाब।

१६ ड्राम (drams) का १ औंस (ounce) (1 oz)।
१६ औंस का १ पौंड (Pound)।
२८ पौंड का कारटर (quarter)।
४ कारटर का तथा ११२ पौंड का १ हंड्रडवेट (hundred weight)।
२० hundred weight का १ टन (Ton)।

Fluid पतली वस्तुका अंदाजा।

६० बूंद (Minims) का १ ड्राम (Drachm)।
८ ड्राम का १ औंस (ounce)।
२० औंसका १ पिंट (Pint)।
१२ इकाई (units) का १ दरजन (dozen)।
१२ दरजन का १ ग्रोस (gross)।

हिंदुस्तानी वक्तका हिसाब।

६० अनुपल की १ विपल।
६० विपल की १ पल।
६० पल की १ घडी।
७॥ साढे सात घडी का १ पहर।
६० घडी तथा ८ पहर की १ दिन रात्रि (day) (डे)।
७ दिनका १ हफता (week) वीक।
१५ दिनका १ पक्ष (fortnight) (फोर्टनाइट)।
२ पक्ष तथा ३० दिन का १ मास (महीना) (month) (मंथ)।
६ मास की १ अयन।
२ अयन तथा १२ मास का १ साल।
५ साल का १ युग।
२० युग तथा १०० साल की १ सदी (century) (सैंचुरी)।

माघ से आषाढ़ तक जब दिन बढे उसे उत्तरायण कहते हैं।
श्रावण से पोष तक जब दिन घटे उसे दक्षणायन कहते हैं।

---

८ चांवल तथा ४ धान बराबर १ रत्ती।
८ रत्ती का १ माशा। १२ माशेका १ तोला।
५ तोले की १ छटांक। ४ छटांक का १ पाव (पव्वा)।
४ पाव का १ सेर (seer)। ५ सेर की १ पंसेरी।
८ पंसेरी तथा ४० सेर का १ मन (Maund) (मौंड)।

जैनभाषापुस्तकें जो हमारे यहां बिकती हैं।

हमारी छपवाई हुई पुस्तकें।

शुद्ध पंचकल्याणक तिथियोंके ४चौबीसी
पूजन पाठ संग्रह का महान ग्रन्थ अर्थात
१ संस्कृत चौबीसी पूजा पाठ
२ भाषा चौबीसी पूजा पाठ रामचंद्रकृत
३ भाषा चौबीसी पूजापाठ वृंदावन कृत
४ भाषा चौबीसी पूजापाठबखतावरकृत
यह चारोंपाठ एक ग्रन्थ खुले पत्रोंमें शुद्ध
पंचकल्याणक तिथियों के छपे हैं)
श्री महावीर पुराण महान ग्रन्थ)
हरिवंश पुराण महान ग्रन्थ)
श्रीपाल चरित्र भाषा छंद बन्द १॥)
नई जैन तीर्थयात्रा तीर्थों का मार्ग १)
सुकुमाल चरित्र बडाभाषावचनका १)
जैन कथा संग्रह स्त्रियों के संतान पैदा
होने की विधि और इलाज सहित १)
जैन बालगुटका दूसरा भाग २५ जैन
महा मन्त्र और नवकार मंत्र के अक्षर
अक्षर और शब्द शब्दकेअर्थ सहित ॥।)
दर्शन कथा भाषा छंद बन्द ।/)
चार दान कथा बड़ी ।)
शील कथा भाषा छंद बंद ।/)
रो निश भोजनकथाबड़ीऔरछोटी ≠)॥
नित्य नियम पूजा देव शास्त्र गुरु शुद्ध
संस्कृत पूजा तथा देव शास्त्र, गुरुभाषा
पूजा विद्यमान सिद्ध पूजा आदि ≠)॥

३०५दिगम्बरभाषा जैनग्रन्थोंके नाम /)
कुबेरदत्त,कुबेरदत्ताभाईबहनकेब्याहको(८नाते/)
५ बाईस परीषह संग्रह ≠)
निर्वाणकाण्ड संग्रह /)
पंचकल्याण मंगल १६ चित्र सहित ≠)
बारह भावना संग्रह /)
छहढाला संग्रह द्यानत, बुधजन दौलत
तीनों पाठों को इकठी एक पुस्तक ≠)
श्री नेमिनाथ का ब्याहला, प्रश्नोत्तर,
बारह मासादि राजुल भी पाठ ।/)
यमनसेन चरित्र मुनिवर के अहार
की विधि ।)
भूधर जैन शतक अर्थ सहित ।)
भक्तामरसंस्कृत हिंदीअर्थ शब्दार्थ, अन्व
यार्थ,भावार्थ भाषापाठ सब इकट्ठेछपेहैं॥
भक्तामरभाषाकठिनशब्दोंकेअर्थसहित /
सीता बारह मासा संग्रह
तत्वार्थ सूत्र मूल संपूर्ण
प्रतिमा चालीसी
कृपण पचीसी
जैन १६ आरती संग्रह
संकट हरण विनती
सामायिक
जैन शब्दोच्चारण
सुगुरु शतक

दूसरों की छापी पुस्तकें भी यह हमारे यहां बिकती हैं।

भगवती आराधना सार	४)	धर्म परीक्षा	१)
ज्ञानार्णव महानग्रन्थ	४)	परमात्म प्रकाश	।=)
पुण्याश्रव कथा कोष महान् ग्रन्थ	३)	पार्श्व पुराण छापा बम्बई की	१॥)
पद्मपुराणमहानग्रंथ	६)	भजन संग्रह एवं क दशलक्षण आदि	॥)
आराधना सार कथा कोष	२॥)	तत्त्वार्थ सूत्र टीका (मोक्ष शास्त्र)	॥)
समयसार आत्मख्याति	४)	श्रावक वनिता बोधिनी	।=)
पांडो पुराण छंद बंद	२॥=)	ज्ञानानन्द रत्नाकर जैन भजन नाथूराम कृत	॥)
यशो धर चरित्र	=)	जैन पद संग्रह द्यानत कृत	।।=)
नन्द द्वीप पूजा विधान	=॥)	जैन पद संग्रह दौलत राम कृत	।=)
षट पाहुड	१)	जैन पद संग्रह भूधरदास कृत	।=)
रत्न करंड श्रावकाचार बड़ा सदा सुख कृत		जैन पद संग्रह बुध जन कृत	।)
भाषा वचन का महान ग्रंथ	४)	जैनभजन तिलकचन्दलालजी कृत	।=)
धर्म संग्रह श्रावकाचार	२)	जैन भजन प्रभु विलास	=)
वसुनन्दी श्रावकाचार	१)	पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय भाषा अर्थसहित	।)
रत्नकरंड मूल अन्वयार्थ	।)	द्रव्य संग्रह बड़ी टीका जो प्राचीन ग्रंथ	
प्रद्युम्न चरित्र	२॥)	जैन मंदिरों में है	॥)

दिगम्बर जैनधर्म पुस्तकालय लाहौर के नियम।

१ जो ग्राहक हमसे पुस्तकें मंगाते हैं सब को डाक या रेल का महसूल हम अपने पास से देते हैं, थइल बंधवाई सिलाई और टाट के दाम भी नहीं लेते॥

२ जो ग्राहक हमसे एक रुपये से जियादा रकम की पुस्तकें मंगाते हैं उनको हम /) फी रुपया कमीशन काट देते हैं, परन्तु रुपयों की रकम पर काटते हैं आनों का नहीं।

३ जो ग्राहक एक जातिकी इकट्ठी पुस्तकें या ग्रंथ हमसे मंगाते हैं उन को छः पांच के मूल्य में ६, दश के मूल्य में १२, पंद्रह के मूल्य में २०, बीस के मूल्य में २५ पच्चीस के मूल्य में ३५, पचास के मूल्य में ७५ प्रति भेजते हैं, डाक या रेल का महसूल भी हम अपने पास से ही देते हैं और /) फी रुपया कमीशन भी काट देते हैं।

पुस्तक मिलनेका पता ☞ बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर

जैनबाल गुटके दूसरा भाग में नवकार मंत्र के २५ महात्म मंत्र ॥

जैनबाल गुटके दूसरे भाग में नवकार मंत्र के शब्द, शब्द और प्रत्येक अक्षर का अलग अलग अर्थ और नवकार मंत्र के २५ महात्म मंत्र छपे हैं।

इन मंत्रों में चार इतर मंत्र हैं इनके स्मरण से गोप तलवार तो [illegible] देव भोजन [illegible] रुके, दो [illegible] [illegible] से छुटकारे हैं, [illegible] आकाश [illegible] से [illegible] मंत्र के स्मरण से और [illegible] मंत्र पढ़ने से अग्नि आग [illegible] शांत हो जाए। १ [illegible] (अरहंत का [illegible]) [illegible] मंत्र। १ [illegible] मंत्र १ दाव में जीत [illegible] मंत्र जैसे [illegible] देव और [illegible] जीते थे। १ [illegible] आदि मंत्र भूले को भी [illegible] १ [illegible] मंत्र। १ [illegible] हो, ऐसा मन्त्र। १ द्रव्य प्राप्ति मन्त्र। ([illegible]) [illegible] ऐसा मंत्र।

हमने शुद्ध मंगलाचरण और [illegible] शब्द [illegible] अर्थ [illegible] पुस्तक में छपाई है ऐसे अनेक कथनों को उपकारी पुस्तक का दाम हमने केवल [illegible] रक्खा है।

शुद्ध पञ्च कल्याणक तिथियों का चार चौबीसी पूजा पाठ संग्रह।

इस समय जैन मंदिरों में जो १६ [illegible] चौबीसी पूजा पाठ कवियों के बनाए हुए मौजूद हैं उन में पंचकल्याणक की अनेक तिथि [illegible] हैं [illegible] को दूर करने को जो हमने २६ वर्ष तक परिश्रम उठा कर तिथियों का संशोधन [illegible] शुद्ध पञ्चकल्याणक तिथियों के ४ पाठ [illegible] इस प्रथम में [illegible] प्रकार छपवाये हैं जिन की शुद्धता का खुलासा हमारे [illegible] हुआ है, जिन में १ संस्कृत चौबीसी पूजापाठ है दूसरा [illegible] कृत [illegible] कृत, भाषा चौथा बखतावरसिंह कृत भाषा चौबीसी पूजा पाठ हैं जिन [illegible] दाम [illegible] रुपये है।

तिमाही जैन पत्रिका लाहौर ॥

सर्व पाठकों को विदित किया जाता है कि (तिमाही जैन पत्रिका लाहौर) इस नाम का हमारा तिमाही [illegible] लाहौर नगर से प्रकाशित होता है॥

स्त्रियों को गर्भ रहने का इलाज ॥

जिन [illegible] स्त्रियों के [illegible] स्त्रियों के सन्तान पैदा होने के इलाज की विधि और [illegible] इलाज करने के [illegible] फिर आ [illegible] हम से इलाज करवाना [illegible] करवा सकते हैं॥

मिलने का पता — बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर